विषय-सूची

ग्रह शांति प्रयोग एवं उपचार पूजन 3
खण्ड 1 -इकाई 1 3
नान्दी श्राद्ध सहित -1 3
इकाई 2 6
नान्दी श्राद्ध सहित 6
इकाई-3 10
नान्दी श्राद्ध सहीत 10
इकाई-4 13
नान्दीश्राद्धसाहिद्ध 13
इकाई-5 17
नान्दीश्राद्ध साहिद्ध 17
खण्ड-2 20
इकाई-6 20
प्रतिष्ठा मंत्रम् 27
इकाई -7 27
नवग्रह शान्ति 27
इकाई-:8 62
नवग्रह शान्ति 62
इकाई-:9 111

शनि 111
इकाई -10 170
कुण्डली दोष समन 170
खण्डः-3 201
इकाई 11 : हवन 201
इकाई-12 262
ग्रह होम दान 262
इकाई-13 292
गुरू ग्रह होम एवं शुक्र ग्रह होम 292
इकाई-14 334
शनि, राहु एवं केतु ग्रह होम 334
इकाई 15 364
नवग्रह दान 364
खण्ड-4 368
इकाई-16 पंचोउपचार - 368
इकाई- 17 374
दशोपचार-: 374
इकाई- 18 षोडशोपचार-: 378
इकाई- 19 राजोपचार 389
इकाई- 20 षोडशोपचार, राजोपचार, संकल्प, विनियोग, अंगपूजन, आवरणपूजन एवं अर्चन 410

ग्रह शांति प्रयोग एवम् उपचार पूजन

खण्ड 1 इकाई- 1

नान्दी-श्राद्धसहित -1

प्रस्तावना

नान्दी श्राद्ध हमारे सनातन परंपरा का अभीष्ट अंग है वैसे तो श्राद्ध का पक्ष विशेष होता है तथा तर्पण करने का विधान हमेंशा का है मगर नान्दी श्राद्ध हर अक्सर पर किये जाने वाला कर्म है। इससे पितृगण प्रसन्न होते है इसके अध्ययन से छात्रों को याज्ञिक कर्म में भी श्राद्ध का प्रयोग होता है, यह जानकारी प्राप्त हो।

इकाई एक के क्रम में निम्नलिखित विशेषयों को प्रकाशित किया गया है।

क. पलाश पत्र का चयन

ख. पलाश पत्र पर रेखाकरण और पितृगणों का आवाहन एवम् आसन

ग. पितृरों के निमित्र दान

घ. संकल्प तथा पितृ-अर्चन विधि का निरूपण

पलाश पत्र से विजन प्रक्रिया - नान्दी श्राद्ध में सर्वप्रथम पलाश पत्र चुन कर इसके के माध्यम से चार पाँच पत्तो को जोड कर एक पत्तल का निर्माण कर लेपत्तल इतना कडा हो कि इसको चार भागों में बाटा जा सके बने हूए पत्तल को क्रमशः 1 2 3 4 खानो में बार कर सावधानी पूर्वक प्रत्येकखानो में पितृ का आवहन करना चाहिए।

आसन

श्राद्ध में पूरी श्रद्धा से पितरो को आसन देना चाहिए। आसन के

लिए पहले तो कुश अगर कुश न हो तो दूर्वा का भी आसन दिया जा सकता है आसन संकल्प के साथ प्रत्येक खानो में प्रदान करना चाहिऐ।

दान:- श्राद्ध में पितरो के लिऐ दान का विधान है। वस्त्र जनेऊ, चंदन, फल, पानसुपारी तथा दक्षिणा आदि के साथ भोजन के निमित्त दक्षिणा देने का विधान है।

संकल्प - श्राद्ध में संकल्प का बडा महत्व है बिना संकल्प के कोई भी कार्य सफल नहीं होता। इसलिए प्रत्येक वस्तु संकल्प के साथ चढानी चाहिए।

पाद्य चाहे देव हो, या पितर हो, पूजा में इनके आगमन (आवाहन) के बाद सबसे पहले पैर धुलने की प्रक्रिया है। पैर धुलने कि प्रक्रिया को हि पाद्य शब्द से सम्बोधित किया गया है। श्राद्ध में अवाहन के बाद संकल्प के साथ प्रत्येक खानो में आवाहित पितरो को पाद्य (पैर धुलने) के निमित्त जल देना चाहिऐ -

अर्घ्याचन - पैर धुलने के बाद एक -एक आचमनी जल अर्घ्य के लिए देना चाहिए अर्घ्य हाथ धुलने की प्रक्रिया को कहा जाता है

तथा उसके उपरान्त आचमन का विधान है।

स्नान- पाद्य अर्घ्य आचमन के बाद सभी अंगों के शुद्धों के निमित्त स्नान के लिये जल देना चाहिऐ-

बोध प्रश्न

1. नांदी श्राद्ध में किस पत्र का महत्व है।

    1. पीपल   2. बरगद

    3. आम   4. पलाश

2. नांदी श्राद्ध में पात्र पर कितने खाने बनते है।

    1. एक   2. दो

    3. तीन   4. चार

3. नांदी श्राद्ध पालश के अभाव में किस धातु के बर्तन में किया जा सकता है।

    1. पीतल   2. लोहा

    3. चीनी-मिट्टी   4. मिट्टी

इकाई 2
नान्दीश्राद्ध सहित

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नांदी श्राद्ध में पितरों के आवाहन की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से पितरों का आवाहन किस विधा से किया जाए इसका ज्ञान प्राप्त होगा।

पितृ-अवाहन - सबसे पहले पलास पत्र से बने पत्तल को चार भागो में बाट ले फिर संकल्प के साथ पितरों का अवाहन करना चाहिऐ

संकल्पः- हाथ में कुश अक्षत जल पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करें संकल्पमात्र से ही पितरों का अवाहन माना जाता है।

संकल्पः-

अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राणां मातृपितामही-प्रपितामहीनाम् अमुकामुकदेवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वती स्वरूपिण्यां नान्दीमुखीनाम् अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानाम् अमुकामुकदेवानाम् वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां नान्दीमुखानाम् तथा अमुकगोत्राणां प्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुकामुकदेवानां सपत्नीकानाम् अग्निवरुणप्रजापति स्वरूपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये अमुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं संक्षिप्तसङ्कल्पविधिना नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।।

न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम चोच्चरेत्।

न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः।।

न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यामन्त्रविवर्जितम्।

अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्।।

पाद प्रक्षालनम् - बने हुए चार खानो में क्रमशः एक-एक खानों में संकल्प के

बाद संकल्प के साथ, हाथ में जल लेकर छोड़ना चाहिऐ -

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं यः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसन - पाद प्रक्षालन के बाद बतलायी गयी पूर्वा क्रियानुसार ही एक-एक खानोमें आसन प्रदान करना चाहिए।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणी क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमें

आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो

भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्वेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातामह-प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणं क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

बोध प्रश्न

1. पालश पत्र को कितने खानों में बांटा जाता है।

   1. एक　　2. दो

   3. तीन　　4. चार

2. पिता के पिता को संस्कृति में कहते है।

   1. पितामह　　2. प्रपितामह

   3. विधिप प्रपितामह　　4. पिता

3. नाना को नांदी मुख श्राद्ध में क्या कहते है।

   1. बंधु　　2. पिता

   3. तात　　4. मातामह

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 नांदी मुख श्राद्ध कब की जाती है,

प्रश्न - 2 नांदी मुख श्राद्ध करने का विधान कहां-कहां है।

प्रश्न - 3 नांदीमुख श्राद्ध पितरों का स्थान क्रमवार बताये।

इकाई-3
नान्दीश्राद्ध सहित

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के निमित्त पूजन में प्रयुक्त सामग्री पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से नांदीमुख श्राद्ध, पितरों के निमित्त प्रदान की जाने वाली वस्तु का ज्ञान प्राप्त होगा।

दूर्वादिपूजन- आसन के बाद विश्वेदेव तथा पित्तरो के लिए पित्तरो (मातृ

पितामही प्रपितामही पितामह प्रपितामह सपतनीक मातामह प्रमातामह वृद्धमातामह) के लिए आसन पर क्रमसः जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपनैवेद्य, ऋतुफल, पान-सुपारी चढाना चाहिऐ-

अत्रापः पान्तु। इमें वाससी सुवाससी। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि। अयं वो गन्धः सुगन्धः। इमें अक्षताः स्वक्षताः। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि। अयं वो धूपः सुधूपः। अयं वो दीपः सुदीपः। इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदंगन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

देवार्जन-विधि-प्रबन्धः

ॐ पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

बोध प्रश्न

1. नांदी मुख श्राद्ध में आसन निमित्त प्रदान किया जाता है।

    1. जौ 2. दही
    3. मधु 4. दूर्वा

2. नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के स्नान के निमित्त देना चाहिए।

    1. मधु 2. जौ
    3. जल 4. बदरीपत्र

3 नांदी मुख श्राद्ध में सभी पितरों का पूजन करना चाहिए।

    1. अलग-अलग 2. एक तंत्रेण
    3. पिता पक्ष का अलग 4. नाना पक्ष का अलग

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 नांदी मुख श्राद्ध में प्रयुक्त होने वाली सामग्री के नाम लिखे।

प्रश्न - 2 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के निमित्त आसन को क्या कहते है।

प्रश्न - 3 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के पूजन विधि पर प्रकाशन डाले ।

इकाई-4
नान्दीश्राद्धसाहिद्ध

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के निमित्त भोजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के निमित्त प्रदान किए जाने वाले भोज्य पदार्थ का ज्ञान प्राप्त होगा।

भोजनादिक संकल्प - पूजन के उपरान्त पित्तरो के निमित्त भोजन के निमित्त कुछ न कुछ खाद्य पदार्थ मुनक्का आंवला तथा दक्षिणा लेकर प्रत्येक खानों में छोड़ना चाहिए

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यम अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं

युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यम अमृत रूपेण स्वाहासम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृ-पितामही प्रपितामह्यःनान्दीमुख्यःप्रीयन्ताम्।

पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

नान्दी-मुखाः प्रीयन्ताम्।

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाः

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम्

जल, पुष्प एवं चावल सभी आसनों पर छोडें

चतुर्थस्थानेषु- शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इत्यक्षताः।

जलधारादानम् पितरों के लिए अंगूठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।।

आशीर्वादप्रार्थना हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्-

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहूदेयं च नो अस्तु। अन्नं च नो बहू भवेदतिथीश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्-

मुनक्का, आँवला, यव तथा अदरख मूल आदि लेकर दक्षिणा सहित अलग- अलग संकल्प पूर्वक अर्पण करें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीदक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे।

ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे।

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

बोध प्रश्न

1. नांदी मुख श्राद्ध में पितरों को भोजन के निमित्त देना चाहिए।

    1. साबूत अन्य   2. दूध-दही

    3. दूर्वा   4. आंवला मुनक्का

2. नांदी मुख श्राद्ध में पितरों को भोजन देना चाहिए ।

    1. पिता पक्ष को अलग पदार्थ   2. नाना पक्ष को अलग पदार्थ

    3. एक ही पदार्थ सभी पक्षों को   4. इनमें से कोई नहीं

3 नांदी मुख श्राद्ध में भोजन हेतु महत्व है।

    1. दूध-दही का   2. बन हुए पकवानों का

    3. खीर का   4. आंवला मुन्नका

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 नांदी मुख श्राद्ध में भोजन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के निमित्त कौन सा भोजन प्रयुक्त होता है।

प्रश्न - 3 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के भोजन के संकल्प स्पष्ट करें ।

इकाई-5
नान्दीश्राद्ध साहिद्

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नांदीमुख श्राद्ध में पितरों के विसर्जन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से नांदी मुख श्राद्ध पितरों के विसर्जन का ज्ञान प्राप्त होगा।

विसर्जन विधान - हाथ में जल अक्षत पुष्प लेकर सभी आसनो पर छोड़ा जाता है तथा आशीर्वाद की कामना करना चाहिए

देवार्चनविधिप्रबन्धः

ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे। मन्त्रः - (यजमानः वदेत्) (यजमान स्वयं कहे।)

ॐ उपास्म्मै गायतां नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ २ ऽइयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुदस सनिंगोः शश्वत्तम हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।। अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् इति यजमानः।

ब्राह्मणाः-- सुसम्पन्नम्।

विसर्जन- तथा हाथ जोड़कर सभी पित्तरो का अपने-अपने लोक जाने के लिएनिवेदन करना चाहिए

विसर्जनम् - निम्न मंत्र पढ़कर विसर्जन करें।

ॐ व्याजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषुविप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।

अस्य मद्ध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।

अनुव्रजनम्

ॐ आ मा व्याजस्य प्रसवो जगम्यादेमें द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे।

आ मा गन्तां पितरो मातश्र् चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्।।

अस्मिन् नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री गणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः इति विप्राः।

बोध प्रश्न -

1. नांदी मुख श्राद्ध में पितरों को विसृजन किया जाता है।

   1. पूजन के पूर्व 2. पूजन के पश्चात

   3. पूजन के मध्य 4. स्नान के उपरांत

2. नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के विसर्जन को हाथ में लेना चाहिए ।

   1. दीपक 2. फल

   3. दूध-दही 4. जल, जौ एवं पुष्प

3 नांदी मुख श्राद्ध में विसर्जन करना चाहिए।

   1. अलग-अलग 2. एक तंत्रेण

   3. पिता और नाना का एक साथ 4. इनमें से कोई नहीं

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 नांदी मुख श्राद्ध में विसर्जन के पश्चात पितरों से आशीर्वाद की प्रक्रिया पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों के विसर्जन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 3 नांदी मुख श्राद्ध में पितरों निमित्त किये गये दाक्षिणा दान की विसर्जन की विधि पर विधिवत प्रकाश डालें।

खण्ड-2

इकाई-6

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से नवग्रह पीठ निर्माण तथा ग्रहों की स्थापना पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन से नवग्रह के स्थान/स्थापना तथा निर्माण का ज्ञान प्राप्त होगा।

नवग्रह शान्ति- नवग्रह पीठ समापन ग्रहों का हमारे जीवन पर बड़ा प्रभाव होता है।

ग्रह यदि प्रतिकूल हो तो अशान्ति बनी रहती है जीवन में शान्ति के लिए ग्रहशांति कर्म काण्ड में बतलाई गयी है ग्रहो की शांति के लिए सर्वप्रथम नवग्रहपीठ की स्थापना की जाती है तथा गौरी गणेश कलश षोडशमात्रिका तथा नवग्रह पीठ की स्थापना करके सबका विधवत् पूजन करते हुए नवग्रह शांति करनी चाहिए।

नवग्रह-पीठ- काष्ठ की चैकोर चैकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर चित्रानुसार रचना करनी चाहिए

नवग्रह-मण्डलम्

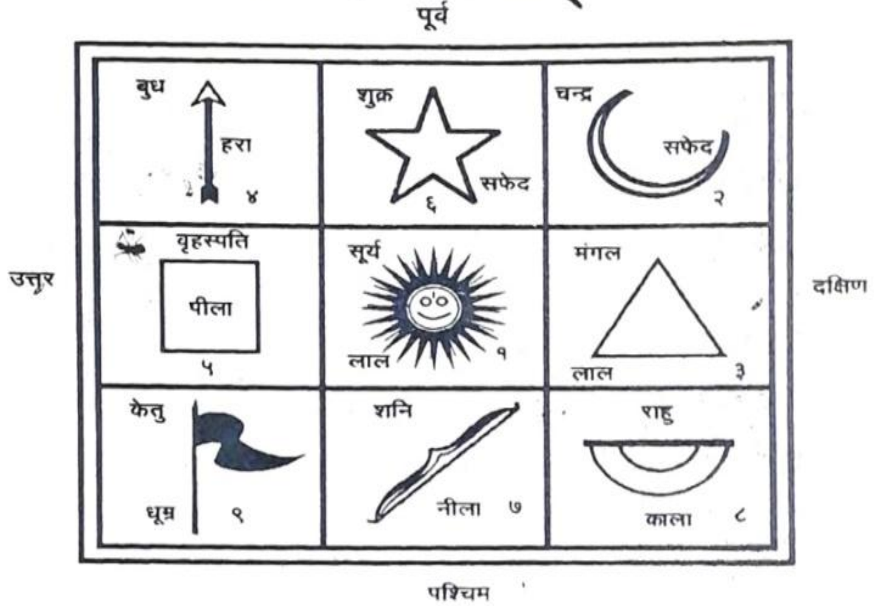

सूर्यावाहन - वेदी के मध्य में ऊपर से पाँचवे कोष्ठक में सूर्य की रचना लाल

रंग में रंगे हुए चावल से करनी चाहिए, सूर्य की आकृति बनानी चाहिए सम्भव हो

तो मूर्ति भी बनानी चाहिए तथा निम्न मंत्र से सूर्य का आवाहन करना चाहिए

सूर्यम्- मण्डल के मध्य में ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिपश्यन्।

जपाकुसुमसङ्काशंकाश्यपेयंमहाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नंसूर्यम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भवकाश्यपगोत्ररक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ।

इह तिष्ठ, सूर्याय नमः, सूर्यं आवाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रमा- नवग्रह पीठ के ऊपर से तीसरे खाने में तथा अग्नि कोण वाले कोष्ठक में सफेद चावल से रंगे चित्रानुसार चन्द्रमा का आवाहन करना चाहिए

मंत्र

चन्द्रम् - अग्निकोण में ॐ इमं देवा ऽअसपत्न सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियय्। इमममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽभि राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।

दधि शङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।

ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोमंभावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ, सोमाय नमः सोमभावाहयामि स्थापयामि।

भौम - पीठ के छाठवे खाने तथा दक्षिण काष्ठक में रक्त चावल से भौम का (मंगल) आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

भौमम्- दक्षिण में ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा रेता सि जिन्वति।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समं प्रभम्।

कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्हम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम, इहागच्छइह तिष्ठ भौमाय नमः भौमम् आवाहयामि स्थापयामि।

बुध- पीठ के प्रथम खाने में तथा ईसान कोण के कोष्ठक में हरे रंग से चावलसे बुध का आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

बुधम्- ईशानकोण में ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् 'विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधंमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधिदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ, इह तिष्ठ, बुधाय नमः, बुधम् आवाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पति- नवग्रह पीठ के चैथे खाने तथा उत्तर वाले कोष्ठक में पीले रंग से चावल के बृहस्पति का आवाहन करना चाहिए।

मंत्र

बृहस्पतिम् - उत्तर में ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति कक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।

वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुंमावाहयाम्हम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते

इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिम् आवाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र- नवग्रह के दूसरे खाने तथा पूर्व कोष्ठक में सफेद चावल से शुक्र की स्थापना करना चाहिए

मंत्र-

शुक्रम्- पूर्व में- ॐ अत्रात्परिसुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्क्रमन्धरा ऽइन्द्रस्येद्रिन्यमिदं पर्याऽमृतं मधु।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।

सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रंमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भी शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नम शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शनि- पीठ के आठवे खाने तथा पश्चिमी कोष्ठक में काले रंग के चावल से शनिका आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

शनिम्-- पश्चिम में - ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिंमावाहयाम्हम्।।

ॐ मूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप गोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्वर मावाहयामि स्थापयामि।।

राहू- नवग्रह वेदी के सातवें खाने तथा नैरित कोण में काले रंग के चावल से राहू का आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

राहूम्-- नैर्ऋत्य कोण में ॐ कया नश्चित्र ऽआभुधदूतीसदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।।

अर्द्धकार्यमहावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भ सम्भूतं राहुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ राहवे नमः, राहु आवाहयामि स्थापयामि।

केतु-नवग्रह पीठ के नौवे खाने में तथा वायव्य कोण के कोष्ठक में काले रंग के चावल से केतु की स्थापना करनी चाहिए

मंत्र-

केतुम्- वायव्य कोण में - ॐ केतुं कृण्ण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या - ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

पलाशधूम्र सङ्काशं तारकाग्रह मस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्णवर्ण भो केतो. इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुम् आवाहयामि स्थापयामि।।

प्राण-प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।

बोध प्रश्न

1. नवग्रह निर्माण में आवश्यकता होती है।

    1. चार कोष्टक की   2. दस कोष्टक की

    3. पांच कोष्टक की   4. नौ कोष्टक की

2. नवग्रह निर्माण में सूर्य होता है।

    1. पीत वरण का   2. श्वेत वरण का

    3. कृष्ण वरण का   4. रक्त वरण क

3 नवग्रह निर्माण में बृहस्पति का स्थान होता है।

    1. मध्य में2. ऊपर

3. नीचे   4. बगल में

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1   नवग्रह पीठ के निर्माण पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2   नवग्रह पीठ में नवग्रह का स्थान वर्ण सहित बतायें।

प्रश्न - 3   नवग्रह पीठ में राहु केतु और शनि के स्थान पर प्रकाश डालें।

प्रतिष्ठा मंत्रम्
इकाई- 7
नवग्रहशान्ति

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में सूर्य ग्रहशांति, चन्द्र ग्रह शांति एवं भौमग्रह शांति पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से सूर्य ग्रह शांति, चन्द्र ग्रह शांति एवं भौम ग्रह शांति का ज्ञान प्राप्त होगा।

सूर्यग्रहशांति

नवग्रह शांति विधा में किसी भी ग्रह के पूजन तथा शांति के पूर्व पूजन प्रक्रिया में गौरी गणेश का पूजन कलश का पूजन षोडशमात्रिका तथा तत्पश्चात् सम्बन्धित ग्रह के पूजन का विधान है। यहां पर उदाहरण के लिए सूर्य की शांति के निमित्त समस्त पूजन विधान दर्शाया जा रहा है। इसी प्रकार नवों ग्रह की शांति में पूजन व्यवस्था करनी चाहिए।

भद्रसूक्तवाचनः-

नवग्रह शांति पूजन के प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन करना चाहिए, यजमान के हाथ में पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उदः।

देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवाना भद्रा सुमतिॠजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तन्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्ववसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरगडै.स्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु० य० 25। 14-23) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु० य० 26। 17) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। (शु० य० 36। 22)

सूक्त के पाठ के उपरान्त हाथ में लिए हुए पुष्प इत्यादि को पूरी श्रद्धा के साथ भूमि पर छोड़ते हुए प्रणाम करना चाहिए और

फिर पुनः बायें हाथ में चावल लेकर दो-दो दाना भूमि पर डालते हुए गणेश, ग्राम तथा कुल देवता को प्रणाम करना चाहिए।

श्री गणेश आदि कुल-देवता-स्मरण

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धि बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणांधिपतये नमः।

तत् पश्चात् पुनः पूरी श्रद्धाभाव से गणेश कुलाधिदेवताओं का स्मरण करना चाहिए।

द्वादश गणपति पूजन

नवग्रह शांति में भद्रसूक्त तथा कुलाधि देवता स्मरण के पश्चात् पुनः हाथ में पुष्प लेकर के द्वादश गणपति तथा मंगल श्लोकों के द्वारा गणेश तथा अन्य देवताओं का ध्यान रखना चाहिए।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।

सड.ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरन्ये त्रयम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

मंगल-श्लोक

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।

येषां हदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽड.घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूति:ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।

पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

गणपति के ध्यानोपरान्त हाथ में लिया हुआ पुष्प गणेश जी के सम्मुख छोड़ देना चाहिए।

पृथ्वीपूजनः-

पुनः हाथ में पुष्प लेकर पृथ्वी का ध्यान करें निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का ध्यान करें-

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशिनी।

यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

स्नान- चार बार पृथ्वी पर जल डालें फिर जल के उपरान्त हल्दी, रोली सिन्दूर तथा चावल चढ़ाए और दूध द्वीप नैवेद्य से पूजन करें तथा पूजन का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दक्षिणा चढ़ाए तथा पुनः पृथ्वी को प्रणाम करें और हाथों द्वारा हाथ को पृथ्वी की तरफ सीधा करके हाथों से परिक्रमा करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य

भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंसीः।।

संकल्पः-

अब पूजा कर्म में आगे बढ़ने के पूर्व जिस कार्य की सिद्धि के लिए पूजा करने चल रहे हैं। उस कार्य के निमित्त संकल्प लेना चाहिए। संकल्प दो प्रकार के होते हैं सकाम एवं निष्काम।

दाहिने हाथ में पुष्प, फल, चावल, सुपारी और कुश रखकर संकल्प किया जाये। कुशा की जड बीचो बीच हथेली या गदोरी में रखनी चाहिए। वाकदत्तम्, मनोदत्तम् दत्तम पाणि कुशोदकम् कुशा की जड़ जल में डूबी रहनी चाहिए। कुशा का अग्रभाग देव तीर्थ से सामने की ओर रखना चाहिए सब पदार्थों के उपरान्त दक्षिणा लेकर संकल्प वाचन निम्न विधा द्वारा करना चाहिए-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमें युगे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामांगल्यप्रद-मासोत्तमें अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रय विनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादिदशामध्ये च ये केचन सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्टवारणपूर्वकं शुभता-

संसिद्ध्यर्थ, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वेविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धन्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहूकीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्धयर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्धयर्थंच सपरिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं सूर्यदेवता कृपाप्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसन्नार्थंच ब्राह्मण द्वारा सूर्यग्रहशांति कर्म अहम् करिष्ये वास्तुयोगिनी-क्षेत्रपाल-नवग्रह-सर्वतोभद्र/लिंगतोभद्रमण्डलदेवानां में आवाहनं स्थापनं, पूजनंपूर्वकं प्रधान-वेद्यामुपुरि सुवर्ण-रजत-ताम्रमयीं वा अमुक देवस्य प्रतिमां अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठा-पूर्वकं यथोपचार-पूजनं तत्रादौ च निर्विघ्नतायै गणपत्यादि-पंचांग-देवानां आवहनं स्थापनं पूजनं पुण्याह-वाचनं दिग्रक्षणं साचार्यस्य ब्राह्मणानां वरणांम् करिष्ये।

(संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

पृथ्वी स्पर्शः-

सबसे पहले दोनों हाथों से प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी का स्पर्श निम्न मंत्रों से करना चाहिए-

ॐ मही द्योः पृथिवी च न ऽइमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्।

पितृतान्नों भरीमभि।।

इस मन्त्रों को पढ़ता हूआ पृथ्वी का स्पर्श करें, पृथ्वी के स्पर्श के उपरान्त कलश स्थापन की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।

कलश-स्थापन

कलश में रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गले में तीन

धागों वाला मौली लपेट लें, तथा जिस जगह कलश स्थापित करना हो, उस भूमि अथवा पाँटे पर कुमकुम या रोली से स्पष्ट जलकमल बनाएं, तथा उसके ऊपर कलश स्थापित करके निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी स्पर्श

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिसीः।।

भूमि स्पर्श के पश्चात् उसी अष्टदल या कलश के नीचे भूमि पर सप्त धान्य डालें।

सप्त धान्यः-

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा यह सप्त धान्य कहलाता है। इसके अभाव में गेहूं तथा चावल और जौ डालने का भी विधान है, निम्न मन्त्र द्वारा सप्त धान्य कलश के नीचे डालें।

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश रखने के पश्चात् कलश में निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीर्थ अथवा कूप जल निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ डालें।

ॐ वरुणास्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो।

वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

जल डालते समय ध्यान दें आवश्यकता से अधिक जल कलश में न रहे तथा जल के उपरान्त कलश में चन्दन निम्न मन्त्र पढ़ते

हुए चन्दन डालें।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत

फिर चन्दन के बाद कलश के अन्दर सर्वोषधि निम्न मंत्र के द्वारा डाली जानी चाहिए-

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

सर्वौषधि-

मुरा, जटा, माषी, वच, कुष्ट, शिलाजीत, हल्दी, दारु, हल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता यह सर्वोषधि कहलाती है, इनके अभाव में सतावर डालने से सर्वोषधि मानी जाती है, सर्वोषधि के उपरान्त कलश में दुर्वा डाली जाए।

काण्डात् ॐ काण्डात्काणत्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे तनु सहस्रेण शतेन च।।

इस मन्त्र द्वारा कलश के अन्दर दूर्वा डालें दूर्वा का ऊपर का भाग कोमल का भाग डालना चाहिए तथा इसके उपरान्त कलश में पंच पल्लव डालना चाहिए।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ यह पंच पल्लव कहलाते हैं, इसके उपरान्त कलश में निम्न मन्त्र द्वारा कुशा स्थापित करें, कुशा उत्तर की दिशा की तरफ लगाए।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनस्तच्छकेयम्।।

कुशा डालने के पश्चात् कलश में सप्तमृत्तिका डालने का विधान है, निम्न मन्त्रों द्वारा कलश में डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़ें।)

सप्तमृत्तिका साथ स्थानों की मिट्टी को कहते हैं, घोड़साल, हाथीसाल, बॉबी नदियों की मिट्टी, तालाब तथा राजदरबार और गोसाला इन स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका की संज्ञा की गयी है, अगर इनका अभाव हो तो संगम की मिट्टी डालें। मिट्टी डालने के उपरान्त कलश में सुपारी निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।। (सुपारी छोड़ें।)

सुपारी डालने के पश्चात् कलश में पंचरत्न निम्नलिखित मंत्रों को पढ़कर डालना चाहिए-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दधद्रत्नानि दाशुषे। (पंचरत्न छोड़ें।)

पंचरत्न सोना, हीरा, मोती, पदमराग, नीलम यह पंचरत्न माने जाते हैं इनके अभाव में सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, मोती भी पंचरत्न माना जाता है।

पंचरत्न डालने के पश्चात् कलश में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए द्रव्य डालना चाहिए-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (द्रव्य छोड़े।)

द्रव्य डालने के उपरान्त कलश का वस्त्र से अलंकृत करना चाहिए वस्त्र लपेटने का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो।

वस्त्र के उपरान्त कलश के ऊपर पूर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो।।

पूर्ण पात्र के बाद कलश के ऊपर नारियल या फल निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ स्थापित करना चाहिए-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः

अब कलश में देवी देवताओं आवादन करने के लिए हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा वरुण का आवाहन करना चाहिए-

कलशमें वरुणा ध्यान और आवहन-

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो

हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश स मा न आयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

मन्त्र बोलने के पश्चात अक्षत पुष्प कलश में छोड़ दें, तथा पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी देवताओं का आवाहन करना चाहिए।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रहमा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो हयथर्वणः।।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।

इस तरह जलाधिपति वरुण देव तथा वेदों तीर्थों, नदियों, सागरों तथा देवताओं के आवाहन के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामों ॐ प्रतिष्ठा।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः

यह कर अक्षत पुष्प कलश के पास छोड़ दें।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौर गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानात्वा गणपति ꣸ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति गुं निधीनान्त्वा निधिपति ꣸ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांगकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्।

ससस्त्यश्वकः सुभद्द्रिकांकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्टं य्यज्ञं ७ समिमं दधातु।

विश्श्वेदेवास इहमादयन्तामों ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

मलया चलसम्भूत चन्दनेन विमिश्रितम्

इदं गन्द्योदकं स्नानं कुंकुमाक्तं गृह्यताम्।।

इस स्नान के उपरान्त पुन्: भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्या।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हूए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न

वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वानयक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा- (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं। दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयंत्रि यह्ना% ।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः ।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं!

मन्त्र- अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्ययुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ৩ सं परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि वह्नितम ꣹ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टटतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣸ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ꣸ शुना ते अ ꣸ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत्।

वसन्तोऽयासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाताश्चक्षो सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वापुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर ।।

प्रदक्षिणामन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("'एका चण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा ꣸ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्य के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश / वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देति विदिताखिलशास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्गभवसागर नौरसंगा।

श्रीः कैटभारिहृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

दीपपूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो! दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी भवाधिकृत।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश, कलश, नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है। पूजा चाहे बृहद (बड़ी) अथवा विशाल यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए। सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडष मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथा वैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्याय नमः एकाक्षरी बीज मंत्र "ॐ घृणिः सूर्याय नमः" जप की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- मणिक्य, गेहूँ, धेनु, कमल, गुड़, लाल कपडा, लालपुष्प, सुवर्णसूर्य की अनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करें। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्य्म् हस्तयोरर्घ्यम् आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सारित।।

पयो दधि घृत चैव शर्करामधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो ऽअग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनों न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामना दिव्यं कामिन्या काम-सम्भवम्।

कुड कुमेंनार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्य्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।। हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

मालती चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्च तैलं चारुप्रगृहयताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राहमणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्र्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व हसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर!!

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य के निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पापनि, जन्मांतर कृतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंशपात्र, श्वेतचावल, श्वेतवस्त्र, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याअयम्।

अपा रेता ॐसिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम पृथ्वी मसूर गोधूम रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कसतूरी

बोध प्रश्न

1. सूर्य ग्रह शांति में सूर्य की रचना होती है।

    1. काले रंग से   2. पीले से

    3. लाल से   4. सफेद से

2. नवग्रह शांति में चन्द्रमा की रचना होती है।

    1. काले से   2. पीले से

    3. लाल से   4. सफेद से

3. नवग्रह शांति में भौम की पूजा होती है।

1. सूर्य से पूर्व   2. सूर्य के पश्चात

3. सूर्य और चंद्रमा की पूजा के मध्य में

4. चन्द्रमा की पूजा के पश्चात

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1   सूर्य ग्रह शांति पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2   भौम का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 3   चंद्रमा ग्रह की प्रतिष्ठा से लेकर पूजा पद्धति पर प्रकाश डालें।

इकाईः-8
नवग्रहशान्ति

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नवग्रह शांति के क्रम में बुद्धग्रह, गुरू ग्रह तथा शुक्र ग्रह शांति का वर्णन किया गया है।

उददेश्य

इस इकाई के अध्ययन से बुद्धग्रह, गुरूग्रह तथा शुक्रग्रह शांति का ज्ञान प्राप्त होगा।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौ-गोबर से गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्तवा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्रियपतिं ꣳ निधीनान्त्वा निधिपतिं ꣳ हवामहे वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांगकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीय् ।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञं ꣳ समिमं दधातु।

विश्श्वेदेवा स इहमादयन्तामां ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाराण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान के उपरान्त गंधोदक स्नान। जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि वालस्त आश्विनाः

श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्‌द्राय पशुपते कर्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्जन्या:।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्घु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हूए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें। वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो अग्गने ꣳ व्विश्वरूपं ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें। मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः पतिमोध्वं पुष्पतीः सूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं

मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयान्ति यह्नाः ।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्

पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वत:।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितमं ꣳ **सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।**

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धउत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावें)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ७ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ७ शुना ते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत।

व्वसन्न्तो यासीदाज्ज्यंग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्गिनरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्र:-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषां ७ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र

बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्य समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या- प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देति विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसंगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीपपूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो! दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी विधानकृत।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात् सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद् (बड़ी) अथवा निसार यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडस मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

सनातन धर्म में व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि एवं शान्ति प्राप्ति के लिए ग्रहोकी अनुकूलता बहुत आवश्यक है। यदि ग्रह अनुकूल

न हो तो मनीषियों द्वाराबताई गई वैदिक विद्या से ग्रहों को अनुकूल एवं फलदायी बनाया जा सकता है।नवग्रह शान्ति में विशेष जाप एवं हवन का विधान है। यदि साधक सावधानीपूर्वक इस वैदिक विद्या द्वारा सुचारू रूप से मंत्र का जप एवं हवन इत्यादिकरवाये या करं तो उसका कल्याण निश्चित होता है।

सूर्य ग्रह शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल स्श्रोत का पाठकरके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करना चाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम कर। प्रणाम के बाद आवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

पाद्योः पाद्यं हस्तर्योअर्घ्यं मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध, दही, मधु, घी, शक्क,र पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतंचैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए। स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाण परमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससीप्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनों न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामना दिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेंनार्चितो देव: अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त हव्यप्रियाःऽअधूषत।अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।। हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरीवीरूघ: पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम्: अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा

मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व हसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सवार्णि नश्य प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथा वैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जय की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दान:- मणिक्य गेहूँ धेनु कमल गुड़ लाल कपडा लाल पुष्प सुवर्ण सूर्य की अनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममम्मुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्योः पाद्यम् हस्तर्योअर्घ्यं मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽ भवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा

नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाण परमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो ऽअग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सौम्ये सर्वभूषाधिके लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यंवाससीप्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा

गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुड्कुमं कामना दिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुडकुमेंनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्तहव्यप्रिया ऽअधूषत।अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।। हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोददध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मालती मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारु प्रगृहृयताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्षं शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र, श्वे चावल, श्वेतवस्त्र, श्वेतपुष्प, चीनी, वृषभ घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याअयम्।

अपा रेता ॐ सिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- पृथ्वीमसूर गोधूम, रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कस्तूरी

बुध वैदिक मंत्र:-

बुधमन्त्र:-

ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेस ६ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे। अद्ध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवायजमानश्चसीदत्।।

जप संख्या:-9000

पाद्यो: पाद्यं हस्तर्योअर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधाऽसो देशे भवत्सारित् ।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांगशुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण

परमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षासूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत

अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमोराजाविद्वानयक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ् कुमेंनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ में।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूल:- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्श्वा इव सजित्त्वरीवरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीर:- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मालती मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारु प्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:- नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व हसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ मेें।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- कांस्य पात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत, पन्ना, सुवर्ण सर्व-पुष्प, रत्नकपूर शास्त्र अनेक फल षटरस भोजन।

बृहस्पतिमन्त्रः-

ॐ बृहस्पते अति यदर्य्यो अर्हादद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्म्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

बृहस्पति -

जप संख्याः- 19000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध, दही, मधु, घी, शक्कर, पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थ तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षासूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण मे ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोली चढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोददध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्त्वरीवरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्रः-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मालती मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व हसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

दक्षिणा मंत्र:- `ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:-पीत धान्य, पीत वस्त्र, सुवर्ण, घृत, पीत पुष्प, पीत फल, पुषराज, हारिद्रा, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि छत्र।

शुक्र

वैदिक मंत्रः-

शुक्रमन्त्रः-

ॐ अन्नात्परिस्स्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानशुक्क्रमन्धस्ये न्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं

मधु।।

जप संख्या:-16000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए। स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानारथं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण परमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए

लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

ब्वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससीप्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमनः- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्रः-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

सिन्दूरम् मंत्रः - सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मयाभक्त्यागृहाण परमेश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को

निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

अबीर गुलालम् मंत्र

अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफलः- नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूलः- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंगइलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्रीः- श्वेत चन्दन, श्वेत चावल, श्वेत चित्र वस्त्र, श्वेत पुष्प, रजतहीरा घृत सुवर्ण श्वेत अश्व, दधि, सुगन्ध द्रव्याणि शर्करा गो भूमि।

बोध प्रश्न

1. नवग्रह में बुद्ध का रंग होता है।

    1. काला 2. पीला

    3. हरा 4. सफेद

2. नवग्रह शांति में गुरु का रंग होता है।

    1. काला 2. पीला

    3. हरा 4. सफेद

3. नवग्रह शांति में शुक्र का रंग होता है।

    1. काला 2. पीला

    3. हरा 4. सफेद

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 बुद्ध ग्रह शांति का सविस्तार वर्णन करियें।

प्रश्न - 2 शुक्र ग्रह शांति में शुक्र के मंत्रों की संख्या क्या होता है।

प्रश्न - 3 गुरु ग्रह शांति में गुरु के मंत्रों की संख्या तथा ग्रह शांति का सविस्तार वर्णन करिये।

इकाई:-9

शनि

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में शनि, राहु एवं केतु की शांति का वर्णन किया गया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से राहु, केतु एवं शनि ग्रहों की शांति का ज्ञान प्राप्त होता है।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौरगो-बर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति ꣳ निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांगकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकांकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञं ७ समिमं दधातु।

विश्श्वेदेवा स इहमादयन्तामों ॐ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्वं शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हूए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स श्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिवबृत्याद ँ होश्चिद्या वरिवोवित्त रासत् ।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत ।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजात्विन्दद्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रति मोदघ्वं पुष्यवतीः प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी

को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमिय: पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूमिरभी: पिन्वमान:।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि वह्नितम ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣳ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ तन्वत।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा ꣭ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि ।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में

अर्घ्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्घ्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलाघ्र्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषाघ् र्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देति विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्गभवसागर नौरसंगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीप पूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो! दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत् ।

यावत कर्म समाप्तिस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा निसार यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडश मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

सनातन धर्म में व्यक्ति के जीवन में सुख समृद्धि एवं शान्ति प्राप्ति के लिए ग्रहोकी अनुकूलता बहुत आवश्यक है। यदि ग्रह अनुकूल न हो तो मनीषियों द्वारा बताई गई वैदिक विद्या से ग्रहों को अनुकूल एवं फलदायी बनाया जा सकता है।नवग्रह शान्ति में विशेष जाप एवं हवन का विधान है। यदि साधक सावधानीपूर्वक इस वैदिक विद्या द्वारा सुचारू रूप से मंत्र का जप एवं हवन इत्यादि करवाये या करं

तो उसका कल्याण निश्चित होता है।

सूर्य ग्रह शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल स्तोत्र का पाठ करके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करना चाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करे। प्रणाम के बाद आवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

=पाद्यो पाद्यम् हस्तर्यो अर्घ्यम् मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध, दही, मधु, घी, शक्कर, पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाण परमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ में।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्व्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्त्वरीवीरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं प्रगृह्यताम्।।

धूप:- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्- ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीप:- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्रः-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथावैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जय की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- माणिक्य गेहूँ, धेनु, कमल, गुड़, लाल, कपडा, लाल, पुष्प, सुवर्ण, सूर्य की अनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धन्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।इमममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थ तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली

से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को

निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्श्वा ऽइव सजित्त्वरी विरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारु प्रगृहयताम्।।

धूप:- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफलः-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूलः- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ मे।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र श्वेत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प चीनी वृषभ घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्या अयम्।

अपा रेता ॐसिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम पृथ्वी मसूर गोधूम रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कस्तूरि

वैदिक मंत्रः-

शनिमन्त्र:-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टटये आपो भवन्तु पीतये।

शं य्योरभिस्रवन्तु नः॥

जप संख्या:- 23000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए। स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाण परमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससीप्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मयाभक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्- ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णौं द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- नीलम, तिल तेल कृष्ण वस्त्र, लोहा, महिषी कृष्ण धेनु, कृष्णपुष्प, उपहन, कस्तूरी सुवर्ण।

राहू

वैदिक मंत्रः-

राहूमन्त्र:- कया नश्चित्र आ भुवदूतीः सदावृघा सखा। कया शचिष्ठयावृतः।

जप संख्या 18000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध

स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तवगृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोद्ह्व्यं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्रः-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारु प्रगृहयताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राहमणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफलः-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूलः- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्रः-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए। स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमनः- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ में।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम्अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्र्णो द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्रः- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्रीः- सप्त धान्य , हेमनाग गोमेंध कृष्ण पुष्प, तिल, तेल, लौह, सुर्यकम्बल, सतिल तार पात्र, सुवर्ण रत्न।

केतु

वैदिक मंत्रः-

केतुमन्त्रः-ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेश से।

समुषद्भिरजायथाः:

जप संख्या 17000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्रः-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नानः- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए। स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त हय्यवप्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मयाभक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्- ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या Sआसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ मेंं।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतरकृतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीतः- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्रः-

यज्ञोपवीतम्- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमनः- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा

गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्र्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:- नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणा:- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणा:- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्रः- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कृतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्रीः- कम्बल, कस्तूरी, वैदुर्य मणि कृष्ण पुष्प तिल तेल रत्न सुवर्ण, शस्त्र लौह बकरा सप्त धान्य।

बोध प्रश्न

1. ग्रह शांति में शनि का स्थान होता है।

   1. सूर्य के नीचे 2. सूर्य के बगल

   3. सूर्य के ऊपर 4. इनमें से कोई

2. नव ग्रह शांति में राहु ग्रह का रंग होता है।

   1. काला 2. पीला

   3. हरा 4. सफेद

3. शुक्र ग्रह शांति में शुक्र का स्थान होता है।

   1. शनि के ऊपर 2. शनि के दायें

   3. शनि के नीचे 4. शनि के बायें

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 शनि ग्रह का सविस्तार वर्णन करें।

प्रश्न - 2 राहु के मंत्रों की संख्या तथा शनि पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 3 केतु ग्रह शांति का सविस्तार वर्णन करें।

इकाई -10
कुण्डली दोषशमन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में कुण्डली में दोष समाप्ति पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से कुण्डली में नाना प्रकार के दोष को समाप्त करने का ज्ञान प्राप्त होगा।

कुण्डली में ग्रहो के स्थान के हिसाब से शुभ एवं अशुभ योग बनते हैं। ग्रहों को अनुकूल बनाने के लिए उसके वैदिक मंत्र का जप करने से शुभ फल प्राप्त होता है।

उदाहरणः- भौम और केतु की युति से कुण्डली में अंगाकक दोष माना जायेगा

जिसका समाधान भैम और केतु के वैदिक जप अथवा ईष्ट की आराधना से शुभफल दायी बनाया जा सकता है। महामृत्युंजय शतचण्डी तथा लघु मृत्युंजय तथा रूद्राभिषेक के अनुष्ठान से भी कुण्डली के समस्त दोष समाप्त होते है।

किसी भी दोष को समाप्त करने के लिए सर्वप्रथम गौरी गणेश कलश षोडशमात्रिका नवग्रह का पूजन करवाया जाता है। यहां पर राहु की शांति उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। अन्य समस्त ग्रहों का भी इसी प्रकार से करना चाहिए।

भद्र सूक्त वाचनः-

पूजन प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन करना चाहिए, यजमान के हाथ में पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तन्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्ववसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुद्याम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु० य० 25। 14-23) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः

शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु० य० 26। 17) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। (शु० य० 36। 22)

सूक्त के पाठ के उपरान्त हाथ में लिए हुए पुष्प इत्यादि को पूरी श्रद्धा के साथ भूमि पर छोड़ते हुए प्रणाम करना चाहिए और फिर पुनः बायें हाथ में चावल लेकर दो-दो दाना भूमि पर डालते हुए गणेश ग्राम प्रथा कुल देवता को प्रणाम करना चाहिए।

श्री गणेश आदि कुल-देवता-स्मरण

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

तत् पश्चात् पुनः पूरी श्रद्धाभाव से गणेश कुलाधि देवताओं का स्मरण करना चाहिए।

द्वादश गणपति पूजन

भद्र सूक्त तथा कुलाधि देवता स्मरण के पश्चात पुनः हाथ में पुष्प लेकर द्वादश गणपति तथा मंगल श्लोकों के द्वारा गणेश तथा अन्य देवताओं का ध्यान रखना चाहिए।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।

सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमाङ्ल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्रयम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

मंगल श्लोक

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।

येषां हदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽड.घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।

पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ !

निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

गणपति के ध्यानोपरान्त हाथ में लिया हुआ पुष्प गणेश जी के सम्मुख छोड़ देना चाहिए।

पृथ्वी पूजनः-

पुनः हाथ में पुष्प लेकर पृथ्वी का ध्यान करें निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का ध्यान करें-

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशिनी।

यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

स्नान चार बार पृथ्वी पर जल डालें, फिर जल के उपरान्त हल्दी रोली सिन्दूर तथा चावल चढ़ाए और दूध द्वीप नैवेद्य से पूजन

करें तथा पूजन का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दक्षिणा चढ़ाए तथा पुनः पृथ्वी को प्रणाम करें और हाथों द्वारा हाथ को पृथ्वी की तरफ सीधा करके हाथों से परिक्रमा करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य

भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हि सीः।।

संकल्प पद्धतिः-

दाहिने हाथ में पुष्प, फल, चावल, सुपारी और कुस रखकर संकल्प किया जाये कुशा की जड बीचो बीच हथेली या गदोरी में रखनी चाहिए वाकदत्तम्, मनोदत्तम् दत्तम पाणि कुशोदकम् कुशा की जड़ जल में डूबी रहनी चाहिए कुशा का अग्रभाग देव तीर्थ से सामने की ओर रखना चाहिए सब पदार्थों के उपरान्त दक्षिणा लेकर संकल्प वाचन निम्न विधा द्वारा करना चाहिए-

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमें युगे कलियुगे कलि-प्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामांगल्यप्रद-मासोत्तमें अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फलप्राप्तर्थं दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रयविनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्ध्यर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादि दशा मध्ये च

ये केचन सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्ट वारणपूर्वकं शुभता-संसिद्ध्यर्थ, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वेविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धन्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहूकीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्धयर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्धयर्थंच सपरिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं श्री अमुक देवता-कृपा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसनार्थंच ब्राह्मण द्वारा अमुक मंत्रस्य/स्तोत्रस्य अमुक संख्याकं जपं/पाठं कारयिष्ये।

(संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

पृथ्वी स्पर्शः-

सबसे पहले दोनों हाथों से प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी का स्पर्श निम्न मंत्रों से करना चाहिए-

ॐ मही द्योः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्।

पितृतान्नों भरीमभिः।।

इस मन्त्रों को पढ़ता हूआ पृथ्वी का स्पर्श करें, पृथ्वी के स्पर्श के उपरान्त कलश स्थापन की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।

कलश-स्थापन

कलश में रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गले में तीन धागों वाला मौली लपेट लें, तथा जिस जगह कलश स्थापित करना हो उस भूमि अथवा पाँटे पर कुमकुम या रोली से स्पष्ट जल कमल बनाएं, तथा उसके ऊपर कलश स्थापित करके निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी स्पर्श

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य

धर्त्री।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंसीः।।

भूमि स्पर्श के पश्चात् उसी अष्टदल या कलश के नीचे भूमि पर सप्त धान्य डालें

सप्त धान्यः-

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा यह सप्त धान्य कहलाता है। इसके अभाव में गेहूं तथा चावल और जौ डालने का भी विधान है, निम्न मन्त्र द्वारा सप्त धान्य कलश के नीचे डालें।

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश रखने के पश्चात् कलश में निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीर्थ अथवा कूप जल निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ डालें।

ॐ वरुणास्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो।

वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

जल डालते समय ध्यान दें आवश्यकता से अधिक जल कलश में न रहे तथा जल के उपरान्त कलश में चन्दन निम्न मन्त्र पढ़ते हुए चन्दन डालें।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत

फिर चन्दन के बाद कलश के अन्दर सर्वोषधि निम्न मंत्र के द्वारा डाली जानी चाहिए-

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

सर्वोषधिः-

मुरा जटा माषी वच कुष्ट शिला जीत हल्दी दारु हल्दी सठी चम्पक मुस्ता यह सर्वोषधि कहलाती है, इनके अभाव में सतावर डालने से सर्वोषधि मानी जाती है, सर्वोषधि के उपरान्त कलश में दूर्वा डाली जाए।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दुर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

इस मन्त्र द्वारा कलश के अन्दर दूर्वा डालें दूर्वा का ऊपर का भाग कोमल का भाग डालना चाहिए तथा इसके उपरान्त कलश में पंच पल्लव डालना चाहिए।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ यह पंच पल्लव कहलाते हैं, इसके उपरान्त कलश में निम्न मन्त्र द्वारा कुशा स्थापित करें, कुशा उत्तर की दिशा की तरफ लगाए।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनस्तच्छकेयम्।।

कुशा डालने के पश्चात् कलश में सप्तमृत्तिका डालने का विधान

है, निम्न मन्त्रों द्वारा कलश में डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़ें।)

सप्तमृत्तिका साथ स्थानों की मिट्टी को कहते हैं, घोड़साल, हाथीसाल, बॉबी नदियों की मिट्टी, तालाब तथा राजदरबार और गोसाला इन स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका की संज्ञा की गयी है, अगर इनका अभाव हो तो संगम की मिट्टी डालें। मिट्टी डालने के उपरान्त कलश में सुपारी निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।। (सुपारी छोड़ें।)

सुपारी डालने के पश्चात् कलश में पंचरत्न निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़कर डालना चाहिए-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दधद्रत्नानि दाशुषे। (पंचरत्न छोड़ें।)

पंचरत्न सोना, हीरा, मोती, पदमराग, नीलम यह पंचरत्न माने जाते हैं इनके अभाव में सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, मोती भी पंचरत्न माना जाता है।

पंचरत्न डालने के पश्चात् कलश में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए द्रव्य डालना चाहिए-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य: पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (द्रव्य छोड़े।)

द्रव्य डालने के उपरान्त कलश का वस्त्र से अलंकृत करना चाहिए वस्त्र लपेटने का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूप सं यस्व विभावसो।

वस्त्र के उपरान्त कलश के ऊपर पूर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो।।

पूर्ण पात्र के बाद कलश के ऊपर नारियल या फल निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ स्थापित करना चाहिए-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः

अब कलश में देवी देवताओं आवादन करने के लिए हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा वरुण का आवाहन करना चाहिए-

कलश में वरुणा ध्यान और आवहन-

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश स मा न आयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

मन्त्र बोलने के पश्चात अक्षत पुष्प कलश में छोड़ दें, तथा

पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी देवताओं का आवाहन करना चाहिए।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।

इस तरह जलाधिपति वरुण देव तथा वेदों तीर्थों, नदियों, सागरों तथा देवताओं के आवाहन के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं

यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठा।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः

यह कर अक्षत पुष्प कलश के पास छोड़ दें।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौः गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्तवा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति ꣳ निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञं ꣳ समिमं दधातु।

विश्श्वेदेवा स इहमादयन्तामों ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्घ आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धोदक स्नानम्- (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्तआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो अवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान्

समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठाभिन्दत्रूम्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं

मन्त्र -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं

(धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

धूपमन्त्रम् **ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।**

देवानामसि व्वह्निनतम ७ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्योर्तिनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वच्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें। नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्षं ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोद्वर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अं ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे

पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के

अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषां गुं सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि ।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्थघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देवि विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौर संगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीपादि पंचांगदेवपूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत्।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व

लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

सूर्यवाहन - बेदी के मध्य में ऊपर से पाँचवे कांष्ठक में सूर्य की रचना लाल

रंग में रंगे हूए चावल से करनी चाहिए। सूर्य की आकृति बनानी चाहिए संभव हो

तो मूर्ति भी बनानी चाहिए तथा निम्न मंत्र से सूर्य का आवाहन करना चाहिए

सूर्यम्- मण्डल के मध्य में ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिपश्यन्।

जपाकुसुमसङ्का शंकाश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नंसूर्यम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ।

इह तिष्ठ, सूर्याय नमः, सूर्य आवाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रमा- नवग्रह पीठ के ऊपर से तीसरे खाने में तथा अग्नि कोण वाले कोष्ठक में सफेद चावल से रंगे चित्रानुसार चन्द्रमा का आवाहन करना चाहिए

मंत्र

चन्द्रम् - अग्निकोण में ॐ इमं देवा असपत्न सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियय्। इमममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां

राजा।

दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।

ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोमं मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ, सोमाय नमः सोम आवाहयामि स्थापयामि।

भौम - पीठ के छाठवे खाने तथा दक्षिण काष्ठक में रक्त चावल से भौम का (मंगल) अध्वाहन करना चाहिए

मंत्र-

भौमम्-- दक्षिण में ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सि जिन्वति।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेज सम प्रभम्।

कुमारं शक्ति हस्तं च भौमं मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम, इहागच्छइह तिष्ठ भौमाय नमः भौम आवाहयामि स्थापयामि।

बुध- पीठ के प्रथम खाने में तथा ईशान कोण के कोष्ठक में हरे रंग से चावल से बुध का आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

बुधम्- ईशान कोण में ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् 'विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्य गुणोपेतं बुधं मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेय गोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ, इहतिष्ठ बुधाय नमः, बुध मावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पति- नवग्रह पीठ के चैथे खाने तथा उत्तर वाले कोष्ठक में पीले रंग से चावल के बृहस्पति का आवाहन करना चाहिए

मंत्र

बृहस्पतिम् - उत्तर में ॐ बृहस्पते अति यदर्योअर्हाद्युमद्विभाति कक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।

वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिम् आवाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र- नवग्रह के दूसरे खाने तथा पूर्व कोष्ठक में सफेद चावल से शुक्र की स्थापना करना चाहिए

मंत्र-

शुक्रम्- पूर्व में- ॐ अत्रात्परिसुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्क्रमन्धरा ऽइन्द्रस्येद्रिन्यमिदं पर्याऽमृतं मधु।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।

सर्वशास्त्र-प्रवक्तारं शुक्रम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भी शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नम शुक्र आवाहयामि स्थापयामि।

शनि- पीठके आठवे खाने तथा पश्चिमी कोष्ठक में काले रंग के चावल से शनिका आवाहन करना चाहिए

मंत्र-

शनिम्-- पश्चिम में - ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ मूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप गोत्र कृष्णवर्ण भो! शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।।

राहू- नवग्रह वेदी के सातवें खाने तथा नैऋत्य कोण में काले रंग के चावल सेराहू का अवाहन करना चाहिए

मंत्र-

राहूम्-- नैर्ऋत्य कोण में ॐ कया नश्चित्र आभुधदूतीसदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।

सिंहिकागर्थ सम्भूतं हुम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ राहवे नमः, हुम् आवाहयामि स्थापयामि।

केतु-नवग्रह पीठ के नौवे खाने में तथा वायव्य कोण के कोष्ठक में काले रंग के चावल से केतु की स्थापना करनी चाहिए

मंत्र-

केतुम्- वायव्य कोण में - ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेश

से। समुषद्भिरजायथाः।।

पलाशपुष्म सङ्काशं तारकाग्रह मस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुंमा आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्णवर्ण भो केतो. इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुम् आवाहयामि स्थापयामि।।

प्राण-प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।

बोध प्रश्न

1. कुण्डली दोष का ज्ञान प्राप्त होता है।

   1. जन्म कुण्डली से   2. लग्न कुण्डली से

   3. प्रश्न कुण्डली से   4. इनमें से कोई

2. कुण्डली दोष शमन होता है।

   1. ग्रहों के जप से   2. पूजा से

   3. दान से   4. ध्यान से

3. कुण्डली में दोष हो सकता है।

   1. दो ग्रहों के मिलने से   2. स्थान से

   3. जन्म के समय से   4. माता पिता की कुण्डली से

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1   कुण्डली दोष शमन पर प्रकाश डालें है।

प्रश्न - 2 किसी एक ग्रह का कुण्डली में शांति का सविस्तार वर्णन करें।

प्रश्न - 3 कुण्डली दोष से पडने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालें।

खण्डः-3

इकाई 11 : हवन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नवग्रह शांति के हवन पर्व पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से नवग्रह शांति में सूर्यग्रह शांति हवन का ज्ञान प्राप्त होगा।

सूर्यग्रह होम

नवग्रह शांति विधा में किसी भी ग्रह के पूजन तथा शांति के पूर्व पूजन प्रक्रिया में गौरी गणेश का पूजन कलश का पूजन षोडशमात्रिका तथा तत्पश्चात सम्बन्धित ग्रह के पूजन का विधान है पूजन के प्रश्चात ग्रहों के हवन को विधान बताया गया है।

भद्र सूक्त वाचनः-

नवग्रह शांति पूजन के प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन करना चाहिए, यजमान के हाथ में पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास

उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तन्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्ववसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुद्याम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु० य० 25। 14-23) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु० य० 26। 17) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। (शु० य० 36। 22)

सूक्त के पाठ के उपरान्त हाथ में लिए हुए पुष्प इत्यादि को पूरी श्रद्धा के साथ जमीन पर छोड़ते हुए प्रणाम करना चाहिए और

फिर पुनः बायें हाथ में चावल लेकर दो-दो दाना जमीन पर डालते हुए गणेश ग्राम प्रथा कुल देवता को प्रणाम करना चाहिए।

श्री गणेश आदि कुल-देवता-स्मरण

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

तत् पश्चात पुनः पूरी श्रद्धाभाव से गणेश कुलाधि देवताओं का स्मरण करना चाहिए।

द्वादश गणपति पूजन

नवग्रह शांति में भद्र सूक्त तथा कुलाधि देवता स्मरण के पश्चात पुनः हाथ में पुष्प लेकर के द्वादश गणपति तथा मंगल स्लोको के द्वारा गणेश तथा अन्य देवताओं का ध्यान रखना चाहिए।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।

सङ्ग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमंगल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्रयम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

मंगलश्लोक

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।

येषां हदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽड.घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्घरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिधध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां निर्तयाभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।

पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रहमेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढृण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे कार्शी गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

गणपति के ध्यानोपरान्त हाथ में लिया हुआ पुष्प गणेश जी के सम्मुख छोड़ देना चाहिए।

पृथ्वी पूजनः-

पुनः हाथ में पुष्प लेकर पृथ्वी का ध्यान करें निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का ध्यान करें-

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशिनी।

यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः आधार शक्त्यै पृथियै नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

स्नान चार बार पृथ्वी पर जल डालें फिर जल के उपरान्त हल्दी रोली सिन्दूर तथा चावल चढ़ाए और दूध द्वीप नैवेद्य से पूजन करें तथा पूजन का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दक्षिणा चढ़ाए तथा पुनः पृथ्वी को प्रणाम करें और हाथों द्वारा हाथ को पृथ्वी की तरफ सीधा करके हाथों से परिक्रमा करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य

भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हि सीः।।

संकल्पः-

अब पूजा कर्म में आगे बढ़ने के पूर्व जिस कार्य की सिद्धी के लिए पूजा करने चल रहे हैं। उस कार्य के निमित्त संकल्प लेना चाहिए। संकल्प दो प्रकार के होते हैं सकाम एवं निष्काम।

दाहिने हाथ में पुष्प, फल, चावल, सुपारी और कुस रखकर संकल्प किया जाये कुशा की जड बीचो बीच हथेली या गदोरी में रखनी चाहिए वाकदत्तम्, मनोदत्तम् दत्तम पाणि कुशोदकम् कुशा की जड़ जल में डूबी रहनी चाहिए कुशा का अग्रभाग देव तीर्थ से सामने की ओर रखना चाहिए। सब पदार्थों के उपरान्त दक्षिणा लेकर संकल्प वाचन निम्न विधा द्वारा करना चाहिए-

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमें युगे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामांगल्यप्रदे-मासोत्तमें अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्तर्थ दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रय विनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादि दशा मध्ये च ये केचन् सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्ट वारणपूर्वकं शुभता-

संसिद्ध्यर्थ, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वेविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धन्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छित्र सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहूकीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्धयर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्धयर्थंच सपरिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं सूर्य देवता कृपा प्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसनार्थंच ब्राह्मण द्वारा सूर्य ग्रह शांति कर्मो परांत सूर्य ग्रह प्रशन्नता हेतुवे अग्नौ हवन अहम करिष्ये।

(संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

पृथ्वी स्पर्शः-

सबसे पहले दोनों हाथों से प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी का स्पर्श निम्न मंत्रों से करना चाहिए-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्।

पितृताम्ना भरीमभिः।।

इस मन्त्रों को पढ़ता हूआ पृथ्वी का स्पर्श करें, पृथ्वी के स्पर्श के उपरान्त कलश स्थापन की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।

कलश-स्थापन

कलश में रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गले में तीन धागों वाला मौली लपेट लें, तथा जिस जगह कलश स्थापित करना हो उस भूमि अथवा पाँटे पर कुमकुम या रोली से स्पष्ट जल कमल बनाएं, तथा उसके ऊपर कलश स्थापित करके निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी स्पर्श

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य

धर्त्री।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंसीः।।

भूमि स्पर्श के पश्चात् उसी अष्टदल या कलश के नीचे भूमि पर सप्त धान्य डालें।

सप्त धान्यः-

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा यह सप्त धान्य कहलाता है। इसके अभाव में गेहूं तथा चावल और जौ डालने का भी विधान है, निम्न मन्त्र द्वारा सप्त धान्य कलश के नीचे डालें।

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश रखने के पश्चात् कलश में निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीर्थ अथवा कूप जल निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ डालें।

ॐ वरुणा स्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो।

वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

जल डालते समय ध्यान दें आवश्यकता से अधिक जल कलश में न रहे तथा जल के उपरान्त कलश में चन्दन निम्न मन्त्र पढ़ते हुए चन्दन डालें।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत

फिर चन्दन के बाद कलश के अन्दर सर्वोषधि निम्न मंत्र के द्वारा डाली जानी चाहिए-

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

सर्वोषधिः-

मुरा जटा माषी वच कुष्ट शिला जीत हल्दी दारु हल्दी सठी चम्पक मुस्ता यह सर्वोषधि कहलाती है, इनके अभाव में सतावर डालने से सर्वोषधि मानी जाती है, सर्वोषधि के उपरान्त कलश में दुर्बा डाली जाए।

ॐ काण्डात्काणत्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

इस मन्त्र द्वारा कलश के अन्दर दूर्वा डालें दूर्वा का ऊपर का भाग कोमल का भाग डालना चाहिए तथा इसके उपरान्त कलश में पंच पल्लव डालना चाहिए।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ यह पंच पल्लव कहलाते हैं, इसके उपरान्त कलश में निम्न मन्त्र द्वारा कुशा स्थापित करें, कुशा उत्तर की दिशा की तरफ लगाए।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

कुशा डालने के पश्चात् कलश में सप्तमृत्तिका डालने का विधान

है, निम्न मन्त्रों द्वारा कलश में डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़ें।)

सप्तमृत्तिका साथ स्थानों की मिट्टी को कहते हैं, घोड़साल, हाथीसाल, बॉबी नदियों की मिट्टी, तालाब तथा राजदरबार और गोसाला इन स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका की संज्ञा की गयी है, अगर इनका अभाव हो तो संगम की मिट्टी डालें। मिट्टी डालने के उपरान्त कलश में सुपारी निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।। (सुपारी छोड़ें।)

सुपारी डालने के पश्चात् कलश में पंचरत्न निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़कर डालना चाहिए-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दधद्रत्नानि दाशुषे। (पंचरत्न छोड़ें।)

पंचरत्न सोना, हीरा, मोती, पदमराग, नीलम यह पंचरत्न माने जाते हैं इनके अभाव में सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, मोती भी पंचरत्न माना जाता है।

पंचरत्न डालने के पश्चात् कलश में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए द्रव्य डालना चाहिए-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (द्रव्य छोड़ें।)

द्रव्य डालने के उपरान्त कलश का वस्त्र से अलंकृत करना चाहिए वस्त्र लपेटने का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो।

वस्त्र के उपरान्त कलश के ऊपर पूर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो।।

पूर्ण पात्र के बाद कलश के ऊपर नारियल या फल निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ स्थापित करना चाहिए-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः

अब कलश में देवी देवताओं आवादन करने के लिए हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा वरुण का आवाहन करना चाहिए-

कलश में वरुणा का ध्यान और आवहन-

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश स मा न आयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

मन्त्र बोलने के पश्चात अक्षत पुष्प कलश में छोड़ दें, तथा

पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी देवताओं का आवाहन करना चाहिए।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।

इस तरह जलाधिपति वरुण देव तथा वेदों तीर्थों, नदियों, सागरों तथा देवताओं के आवाहन के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं

यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठ।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः

यह कर अक्षत पुष्प कलश के पास छोड़ दें।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौर-गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्तवा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति ꣳ निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकांम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स इहमादयन्ताम् ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्मादय्ज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरात् ।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान्

समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिमभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्दं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ७ सं परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्र्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्र्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣳ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे

पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के

अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा गुं सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसंगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीप पूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत्।

यावत् कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व

लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा निसार यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडश मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

षेडशमात्रिकापूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में षेडशमात्रिका का निर्माण ध्यान और पूजन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. षोडशमात्रिका का निर्माण।

ख. षोडशमात्रिका की संख्या का ज्ञान।

ग. षोडशमात्रिका के आवाहन का विधान।

घ. षोडशमात्रिका के पूजन का विधान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. षोडशमात्रिका आवाहन का।

ख. षोडशमात्रिका पूजन का।

पुण्य वाचन के उपरान्त पूजन क्रम में षोडश मातृका के पूजन का विधान है। सबसे पहले यजमान के दाहिनी ओर किसी चौकी या पाटे पर या वेदी पर ही कपड़ा बिछाकर सोलह चौकोर खानों का निर्माण करें, तथा प्रत्येक खानों में चावल गेहूँ रखकर एक एक देवताओं द्वारा आवाहन करें।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मन:कुलदेवता १६	लोकमातर: १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टि: १५	मातर: ११	जया ७	शची ३
पुष्टि: १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति: १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

आ० कु० देवता

16 (लाल)

लोकमाता

12 (पीला)

देवसेना

8 (लाल)

मेंधा

4 (पीला)

तृष्टि

15 (पीला)

माता

11 (लाल)

जया

7 (पीला)

शची

3 (लाल)

पुष्टि

14 (लाल)

स्वाहा

10 (पीला)

विजया

6 (लाल)

पद्मा

2 (पीला)

धृति

13 (पीला)

स्वधा

9 (लाल)

सावित्री

5 (पीला)   1 गौरी लाल

गणेश

(धूम्र)

अथ षोडशमातृकाणामावाहनं पूजनंच

(मातृका वेदी के सामने पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठकर अक्षत छोड़कर क्रमशः आवाहन करें।)

गणेश आवाहनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं ꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवा महे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।

त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

1. गौरी-आवाहनम्

ॐ गौर्याद्या पृश्निरक्रमीदन्न्मातरं पुरः। पितरं च प्प्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

एकतन्त्रेण मातृकाणामावाहनम् -

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि: आत्मनः कुलदेवताः।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्याः कुलदेवता:मातरो गणपतिसहिताः सुप्रष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

2. पद्मा-आवाहनम्

ॐ हिरण्यरूपा उषसो व्विरोक उभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरुण मित्त्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदिर्तिं दितिं च मित्त्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरु-संस्थिताम्।

जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

3.शची-आवाहनम्

ॐ निवेशनः संगमनो वसूनां व्विश्चा रूपाभिचष्ट्टे शचीभिः।

देव इव सविता सत्य-धर्मा इन्द्रो न न तस्त्थौ समरे धनानाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम्।

रक्तमुक्ताद्यलंकारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

4. मेंधा-आवाहनम्

ॐ मेंधां में वरुणो ददातु मेंधामग्निः प्रजापतिः।

मेंधामिन्द्द्रश्च वायुश्च मेंधां धाता ददातु में स्वाहा।

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।

बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेंधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेंधायै नमः, मेंधामावहयामि स्थापयामि।

5. सावित्री-आवाहनम्

ॐ सविता त्वा सवानां ꣳ सुवतामग्निर्ग्गृहपतीना ꣳ सोमो वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पति र्वाचऽइन्दद्द्रो ज्ज्यैष्ठ्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्त्रः सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव-मातृकाम्।

वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

6. विजया-आवाहनम्

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ23उत।

अनेशन्नस्य इषव आभुरस्य निषंगगधिः।।

सर्वास्त्र-धारिणीं देवीं सर्वाभरण-भूषिताम्।

सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयावाहयामि स्थापयामि।

7. जया-आवाहनम्

ॐ गहनीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।

इषुधिः संगकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठ्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः।।

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभय-प्रदाम्।

त्रैलोक्य-वन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

8. देवसेना-आवाहनम्

ॐ इन्दद्र आसात्रेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरएतु सोमः।

देवसेनानामभि-भंजतीनांजयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

मयूर-वाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम्।

आवाहयेद् देवसेनां तारकासुर-मर्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

9. स्वधा-आवाहनम्

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धदद्ध्वम्।।

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।

पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

10. स्वाहा-आवाहनम्

ॐ स्वाहा प्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः। पृथिव्व्यै स्वाहाग्नये स्वाहात्न्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।

तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहायाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

11. मातृ-आवाहनम्

ॐ आपो अस्म्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु। विश्वं ꣳ हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीक्षा-तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा ꣳ शग्ग्मां परिदधे भद्द्रं व्वर्णं पुष्ष्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।

सर्वकल्याण-रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृ आवाहयामि स्थापयामि।

12. लोकमातृ-आवाहनम्

ॐ रयिश्च में रायश्च में पुष्ट्टिश्च में व्विभु च में प्प्रभु च में पूर्ण्णंच में पूर्ण्णतरंच में कुयवंच मेंऽक्षितंच मेंऽन्नंच मेंऽक्षुच्च में यज्ञेन कल्प्पन्त्ताम्।

आवाहयेल्लोक-मातृर्जयन्ती-प्रमुखाः शुभाः।

नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोक-हितावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ आवाहयामि स्थापयामि।

13. धृति-आवाहनम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म्म क्क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प्पमस्तु।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।

हर्षोत्फुल्लास्य-कमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

14. पुष्टि-आवाहनम्

ॐ अंगात्र्यात्क्म्भिषजा तदश्विनात्क्मानमंगैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप ७ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेह-प्रभवैर्नवैः।

शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

15. तुष्टि-आवाहनम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम-सोममरातीयतो निदहाति-वेदः।

सनःपर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव-सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोष-कारिणीम्।

प्रसाद-सुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

16. आत्मकुलदेवता-आवाहनम्

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्व्यानाय स्वाहा।

चक्षुषे स्वाहा श्रोत्त्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

पत्तने नगरे ग्रामें विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

17. मातृणां प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज गुं समिमन्दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों प्रतिष्ठ्ठ।।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा

कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हूए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूपं ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्त रासत्।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामित्रद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाडकुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिमभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ७ सं परिपातु व्विश्श्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं

धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतमं ꣳ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ७ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अं ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः। सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः:-

ऐसा कहते हुए वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

आवाहन के उपरान्त पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्शो प्रचार पूजन करना चाहिए ध्यान रहे मातृका यज्ञोपवीत न चढ़ाया जाए तथा विशेष अर्ध का भी विधान माहका के लिए नहीं है बाकि सभी देवताओं के पूजा की अनुरूप इनकी भी पूजा करें तथा निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें-

प्रार्थना

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।1।।

वर्द्धन्तां कुलमातरो हि सततं धान्यं वाहनम्।

दीर्घायुंच यशश्च श्रीः समतां ज्ञानं महद् गौरवम्।।

पुत्रं पौत्रमथास्तु मंगलसदा सर्वत्र निर्विघ्नता।

पीडां पापरतिं हरन्तु जाड्यं तन्वन्तु छत्रं सुखम्।।2।।

हाथ में जल लेकर "अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।" कहकर सामने जल गिराकर पूजन समर्पित करें।

सनातन धर्म में व्यक्ति के जीवन में सुख समृद्धि एवं शान्ति प्राप्ति के लिए ग्रहोकी अनुकूलता बहुत आवश्यक है। यदि ग्रह अनुकूल न हो तो मनीषियों द्वाराबताई गई वैदिक विद्या से ग्रहों को अनुकूल एवं फलदायी बनाया जा सकता है।नवग्रह शान्ति में विशेष जाप एवं हवन का विधान है। यदि साधक सावधानीपूर्वक इस वैदिक विद्या द्वारा सुचारू रूप से मंत्र का जप एवं हवन इत्यादिकरवाये या करं तो उसका कल्याण निश्चित होता है।

सूर्य ग्रह शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल स्श्रोत का पाठकरके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करनाचाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करे।

प्रणाम के बादअवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तव गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम्- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या काम सम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम्अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:- नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए

तथावैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जय की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- मणिक्य गेहूँ धेनु कमल गुड़ लाल कपडा लाल पुष्प सुवर्ण सूर्य कीअनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तवगृहाणपरमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्रः-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्रः-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र श्वेत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प चीनी वृषभ घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्।

अपा रेता ॐ सिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम पृथ्वी मसूर गोधूम रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कसतूरी

सूर्य ग्रह होमः- ग्रहो की शान्ति के निमित्त ग्रहो के पूजन के उपरान्त

जप संख्याके साथ दशांश हवन का विधान है। तथा हवन विधान के उपरान्त पूर्व लिखितदान को भी करने से ग्रह शन्ति हो जाती है।

सूर्य

वैदिक मंत्रः- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथैना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

दशांश आहुतिः- सूर्य -700

चन्द्रम् - ॐ इमं देवा असपत्न सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियय्। इमममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा।

दशांश आहुतिः- चन्द्रमा-1900

बोध प्रश्न

1. सूर्य ग्रह शांति हवन में सूर्य के लिए किस समिधा का प्रयोग होता है।

    1. मंदार 2. दूर्वा

    3. खैर 4. चिचडी

2. सूर्य ग्रह शांति हवन में हवन आहूति की संख्या होगी।

    1. 1000 2. 500

    3. 108 4. इनमें से कोई नहीं

3. नवग्रह शांति में चंद्र ग्रह शांति के लिए हवन में कौन सी समिधा प्रयोग की जायेगी।

    1. मंदार 2. दूर्वा

3. खैर	4. चिचडी

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 सूर्य ग्रह शांति हवन विस्तार से प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 सूर्य का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 3 चंद्रमा ग्रह की प्रतिष्ठा पर प्रकाश डालें।

इकाई-12
ग्रहहोमदान

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से सूर्य ग्रह होम में भौम ग्रहों पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य-

इस इकाई के अध्ययन से सूर्य एवं भौम ग्रहों के होम का ज्ञान प्राप्त होगा।

सूर्यग्रह होम

नवग्रह शांति विधा में किसी भी ग्रह के पूजन तथा शांति के पूर्व पूजन प्रक्रिया में गौरी गणेश का पूजन कलश का पूजन षोडशमात्रिका तथा तत्पश्चात् सम्बन्धित ग्रह के पूजन का विधान है। पूजन के प्रश्चात ग्रहों के हवन को विधान बताया गया है।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौर-गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानारन्तवा गणपति गुं हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति गुं निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकांकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ ꣳ समिमं दधातु।

विश्ववेदेवा स इहमादयन्ताम् ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा

कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्शिवनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्द न्नूरि म्मभिःपिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृहयताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्स्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्व

यं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि ह्निनतमं ꣵ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्यॉतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣳ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन छिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अं ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्र:-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषां ७ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र

बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसंगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीप पूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत्।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा निसार यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडश मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

प्राप्ति के लिए ग्रहो की अनुकूलता बहुत आवश्यक है। यदि ग्रह अनुकूल न हो तो मनीषियों द्वारा बताई गई वैदिक विद्या से ग्रहों को अनुकूल एवं फलदायी बनाया जा सकता है।नवग्रह शान्ति में विशेष जाप एवं हवन का विधान है। यदि साधक सावधानीपूर्वक इस वैदिक विद्या द्वारा सुचारू रूप से मंत्र का जप एवं हवन इत्यादि करवाये या करं तो उसका कल्याण निश्चित होता है।

सूर्यग्रह-शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल श्लोक का पाठकरके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करनाचाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करे। प्रणाम के बाद अवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्- ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा

मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफलः-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्रः-

ऋतुफलम् ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूलः- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ मेें।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथा वैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जय की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- मणिक्य, गेहूँ, धेनु, कमल, गुड़, लाल, कपडा, लाल, पुष्प, सुवर्ण, सूर्य की अनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्र्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा

नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा

गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोली चढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्या गृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृहयताम्।।

धूप:- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीप:- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र श्वेत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प चीनी वृषभ घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्।

अपा रेता ॐसिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम, पृथ्वी, मसूर, गोधूम, रक्त, वृषभ, गुड, रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कसतूरी

सूर्य ग्रह होमः- ग्रहो की शान्ति के निमित्त ग्रहो के पूजन के उपरान्त जप संख्याके साथ दशांश हवन का विधान है। तथा हवन विधान के उपरान्त पूर्व लिखित दान को भी करने से ग्रह शन्ति हो जाती है।

भौमम्-- दक्षिण में ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सि जिन्वति।

दशांश आहुति:- भौम-1000

बुधम्- ईशान कोण में ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् 'विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

दशांश आहुति:- बुध-900

बोध प्रश्न

1. भौम ग्रह शांति हवन में आहुति डाली जायेगी।

   1. 5000 2. 900

   3. 1000 4. 1100

2. बुद्‌ध ग्रह शांति हवन में आहुति डाली जायेगी।

   1. 5000 2. 900

   3. 1000 4. 1100

3. भौम ग्रह के निमित्त दान दिया जाता है।

   1. सफेद वस्तु का 2. लाल वस्तु का

   3. काले वस्तु का 4. पीले वस्तु का

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 भौम ग्रह शांति हवन में भौम के निमित्त कौन सी समिधा प्रयुक्त की जायेगी।

प्रश्न - 2 भौम का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 3 बुद्‌ध का वैदिक मंत्र लिखें।

इकाई-13
गुरू ग्रह होम एवं शुक्र ग्रह होम

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में गुरु एवं शुक्र ग्रह के हवन की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से गुरु एवं शुक्र के हवन का ज्ञान प्राप्त होगा।

सूर्यग्रह होम

नवग्रह शांति विधा में किसी भी ग्रह के पूजन तथा शांति के पूर्व पूजन प्रक्रिया में गौरी गणेश का पूजन कलश का पूजन षोडशमात्रिका तथा तत्पश्चात् सम्बन्धित ग्रह के पूजन का विधान है। पूजन के प्रश्चात ग्रहों के हवन को विधान बताया गया है।

भद्र सुक्त वाचनः-

नवग्रह शांति पूजन के प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन करना चाहिए, यजमान के हाथ में पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिॠजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तन्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना

सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्ववसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुद्याम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरगड.स्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु० य० 25। 14-23) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु० य० 26। 17) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। (शु० य० 36। 22)

सूक्त के पाठ के उपरान्त हाथ में लिए हूए पुष्प इत्यादि को पूरी श्रद्धा के साथ जमीन पर छोड़ते हूए प्रणाम करना चाहिए और फिर पुनः बायें हाथ में चावल लेकर दो-दो दाना जमीन पर डालते हुए गणेश ग्राम प्रथा कुल देवता को प्रणाम करना चाहिए।

श्री गणेश आदि कुल-देवता-स्मरण

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणांधिपतये नमः।

तत् पश्चात पुनः पूरी श्रद्धाभाव से गणेश कुलाधि देवताओं का स्मरण करना चाहिए।

द्वादश गणपति पूजन

नवग्रह शांति में भद्र सूक्त तथा कुलाधिदेवता स्मरण के पश्चात पुनः हाथ में पुष्प लेकर के द्वादश गणपति तथा मंगल श्लोकों के द्वारा गणेश तथा अन्य देवताओं का ध्यान रखना चाहिए।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।

सङ्ग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्व मंगल मांगल्ये! शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्रयम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

मंगल श्लोक

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।

येषां हदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽड.घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवां नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नितयाभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।

पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

गणपति के ध्यानोपरान्त हाथ में लिया हुआ पुष्प गणेश जी के सम्मुख छोड़ देना चाहिए।

पृथ्वी पूजनः-

पुनः हाथ में पुष्प लेकर पृथ्वी का ध्यान करें निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का ध्यान करें-

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशिनी।

यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

स्नान चार बार पृथ्वी पर जल डालें फिर जल के उपरान्त हल्दी रोली सिन्दूर तथा चावल चढ़ाए और दूध द्वीप नैवेद्य से पूजन करें तथा पूजन का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दक्षिणा चढ़ाए तथा पुनः पृथ्वी को प्रणाम करें और हाथों द्वारा हाथ को पृथ्वी की तरफ सीधा करके हाथों से परिक्रमा करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य

भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हि सीः।।

संकल्पः-

अब पूजा कर्म में आगे बढ़ने के पूर्व जिस कार्य की सिद्ध के लिए पूजा करने चल रहे हैं। उस कार्य के निमित्त संकल्प लेना चाहिए।

संकल्प दो प्रकार के होते हैं सकाम एवं निष्काम।

दाहिने हाथ में पुष्प, फल, चावल, सुपारी और कुस रखकर संकल्प किया जाये कुशा की जड बीचो बीच हथेली या गदोरी में रखनी चाहिए वाकदत्तम्, मनोदत्तम् दत्तम पाणि कुशोदकम् कुशा की जड़ जल में डूबी रहनी चाहिए कुशा का अग्रभाग देव तीर्थ से सामने की ओर रखना चाहिए सब पदार्थों के उपरान्त दक्षिणा लेकर संकल्प वाचन निम्न विधा द्वारा करना चाहिए-

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमें युगे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामांगल्यप्रद-मासोत्तमें अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्तर्थ दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रय विनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादि दशा मध्ये च ये केचन् सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्ट वारणपूर्वकं शुभता-संसिद्ध्यर्थ, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वेविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धन्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छित्र सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहूकीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्धयर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्धयर्थंच सपररिवारस्य सर्वविध-

कल्याणार्थं सूर्य देवता कृपा प्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसनार्थंच ब्राह्मण द्वारा सूर्य ग्रह शांति कर्मो परांत सूर्य ग्रह प्रसन्नता हेतुवे अग्नौ हवतम् अहम करिष्ये।

(संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

पृथ्वी स्पर्शः-

सबसे पहले दोनों हाथों से प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी का स्पर्श निम्न मंत्रों से करना चाहिए-

ॐ मही द्योः पृथिवी च न इमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्।

पितृतान्नो भरीमभिः।।

इस मन्त्रों को पढ़ता हूआ पृथ्वी का स्पर्श करें, पृथ्वी के स्पर्श के उपरान्त कलश स्थापन की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।

कलश-स्थापन

कलश में रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गले में तीन धागों वाला मौली लपेट लें, तथा जिस जगह कलश स्थापित करना हो उस भूमि अथवा पाँटे पर कुमकुम या रोली से स्पष्ट जल कमल बनाएं, तथा उसके ऊपर कलश स्थापित करके निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी स्पर्श

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृह पृथिवीं मा हिंसीः।।

भूमि स्पर्श के पश्चात् उसी अष्टदल या कलश के नीचे भूमि पर सप्त

धान्य डालें।

सप्त धान्यः-

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा यह सप्त धान्य कहलाता है। इसके अभाव में गेहूं तथा चावल और जौ डालने का भी विधान है, निम्न मन्त्र द्वारा सप्त धान्य कलश के नीचे डालें।

ॐ आ जिघ्र कलशं महया त्वा विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश रखने के पश्चात् कलश में निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीर्थ अथवा कूप जल निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ डालें।

ॐ वरुणास्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थ।

वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

जल डालते समय ध्यान दें आवश्यकता से अधिक जल कलश में न रहे तथा जल के उपरान्त कलश में चन्दन निम्न मन्त्र पढ़ते हुए चन्दन डालें।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत

फिर चन्दन के बाद कलश के अन्दर सर्वोषधि निम्न मंत्र के द्वारा डाली जानी चाहिए-

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

सर्वोषधिः-

मुरा जटा माषी वच कुष्ट शिला जीत हल्दी दारु हल्दी सठी चम्पक मुस्ता यह सर्वोषधि कहलाती है, इनके अभाव में सतावर डालने से सर्वोषधि मानी जाती है, सर्वोषधि के उपरान्त कलश में दुर्बा डाली जाए।

ॐ काण्डात्काणत्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

इस मन्त्र द्वारा कलश के अन्दर दूर्वा डालें दूर्वा का ऊपर का भाग कोमल का भाग डालना चाहिए तथा इसके उपरान्त कलश में पंच पल्लव डालना चाहिए।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ यह पंच पल्लव कहलाते हैं, इसके उपरान्त कलश में निम्न मन्त्र द्वारा कुशा स्थापित करें, कुशा उत्तर की दिशा की तरफ लगाए।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः वृणे तच्छकेयम्।।

कुशा डालने के पश्चात् कलश में सप्तमृत्तिका डालने का विधान है, निम्न मन्त्रों द्वारा कलश में डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़ें।)

सप्तमृत्तिका साथ स्थानों की मिट्टी को कहते हैं, घोड़साल, हाथीसाल, बॉबी नदियों की मिट्टी, तालाब तथा राजदरबार और गोसाला इन स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका की संज्ञा की गयी है, अगर इनका अभाव हो तो संगम की मिट्टी डालें। मिट्टी डालने के उपरान्त कलश में सुपारी निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।। (सुपारी छोड़ें।)

सुपारी डालने के पश्चात् कलश में पंचरत्न निम्नलिखित मन्त्रांे को पढ़कर डालना चाहिए-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दधद्रत्नानि दाशुषे। (पंचरत्न छोड़ें।)

पंचरत्न सोना, हीरा, मोती, पदमराग, नीलम यह पंचरत्न माने जाते हैं इनके अभाव में सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, मोती भी पंचरत्न माना जाता है।

पंचरत्न डालने के पश्चात् कलश में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए द्रव्य डालना चाहिए-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (द्रव्य छोड़े।)

द्रव्य डालने के उपरान्त कलश का वस्त्र से अलंकृत करना चाहिए वस्त्र लपेटने का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो।

वस्त्र के उपरान्त कलश के ऊपर पूर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो।।

पूर्ण पात्र के बाद कलश के ऊपर नारियल या फल निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ स्थापित करना चाहिए-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः

अब कलश में देवी देवताओं आवादन करने के लिए हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा वरुण का आवाहन करना चाहिए-

कलशमें वरुणा ध्यान और आवहन-

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश स मा न आयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

मन्त्र बोलने के पश्चात अक्षत पुष्प कलश में छोड़ दें, तथा पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी देवताओं का आवाहन करना चाहिए।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।

इस तरह जलाधिपति वरुण देव तथा वेदों तीर्थों, नदियों, सागरों तथा देवताओं के आवाहन के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं

यज्ञं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठा।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः

यह कर अक्षत पुष्प कलश के पास छोड़ दें।

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौर-गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानारन्तवा गणपतिं ꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा

प्प्रियपतिं ꣳ निधीनान्त्वा निधिपतिं ꣳ हवामहे वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स इहमादयन्ताम् ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्वं शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्यायस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्यस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान्

समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिमभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतमं ऌ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣳ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अं ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा ँ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेतत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देवि विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौर संगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीप पूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो! दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत्।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा विशाल यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए। सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडश मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

सनातन धर्म में व्यक्ति के जीवन में सुख समृद्धि एवं शान्ति प्राप्ति के लिए ग्रहो की अनुकूलता बहुत आवश्यक है। यदि ग्रह अनुकूल न हो तो मनीषियों द्वारा बताई गई वैदिक विद्या से ग्रहों को अनुकूल एवं फलदायी बनाया जा सकता है।नवग्रह शान्ति में विशेष जाप एवं हवन का विधान है। यदि साधक सावधानीपूर्वक इस वैदिक विद्या द्वारा सुचारु रूप से मंत्र का जप एवं हवन इत्यादि करवाये या करं तो उसका कल्याण निश्चित होता है।

सूर्य ग्रह शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल स्श्रोत का पाठ करके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करना चाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करे। प्रणाम के बाद अवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली

से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मयाभक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को

निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्रः-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो अजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्र्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्रः-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्रः-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ मे।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्रः- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथा वैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जप की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- मणिक्य, गेहूँ, धेनु, कमल, गुड़, लाल, कपडा, लाल, पुष्प, सुवर्ण सूर्य की अनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मयाभक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणि ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य:- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा

मेंवा इत्यादिसे भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्- ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र श्वेत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प चीनी वृषभ घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याअयम्।

अपा रेता ॅंसिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम पृथ्वी मसूर गोधूम रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कस्तूरी

सूर्य ग्रह होमः- ग्रहो की शान्ति के निमित्त ग्रहो के पूजन के उपरान्त जप संख्याके साथ दशांश हवन का विधान है। तथा हवन विधान के उपरान्त पूर्व लिखितदान को भी करने से ग्रह शन्ति हो जाती है।

बृहस्पतिम् - उत्तर में ॐ बृहस्पते अति यदर्योअर्हाद्युमद्विभाति कक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्।

दशांश आहुतिः- 1900

शुक्रम्- पूर्व में- ॐ अन्नात्परिसुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्क्रमन्धरा ऽइन्द्रस्येद्रिन्यमिदं पर्याऽमृतं मधु।।

दशांश आहुतिः- 1600

बोध प्रश्न

1. गुरु यह होम में गुरु आहुति संख्या होती है।

    1. 2100　　2. 1600

    3. 1900　　4. 1100

2. शुक्र ग्रह होम में शुक्र की आहुति संख्या होती है।

    1. 2100　　2. 1100 1600

    3. 1900　　4. 1600

3. गुरु के लिए किस रंग की वस्तु का दान होगा।

    1. पीला　　2. सफेद

    3. लाल　　4. इनमें से कोई नहीं

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 गुरु ग्रह शांति होम पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 गुरु ग्रह एवं शुक्र का वैदिक मंत्र लिखे।

प्रश्न - 3 गुरु ग्रह शांति हेतु दिये जाने वाले दान वस्तु पर प्रकाश डालें।

इकाई-14
शनि, राहु एवं केतु ग्रह होम

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में शनि, राहु एवं केतु ग्रह विषयक होम पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से शनि, राहु एवं केतु ग्रह होम का ज्ञान प्राप्त होगा।

सूर्यग्रह होम

नवग्रह शांति विधा में किसी भी ग्रह के पूजन तथा शांति के पूर्व पूजन प्रक्रिया में गौरी गणेश का पूजन कलश का पूजन षोडशमात्रिका तथा तत्पश्चात् सम्बन्धित ग्रह के पूजन का विधान है पूजन के प्रश्चात ग्रहों के हवन को विधान बताया गया है।

भद्र सुक्त वाचनः-

नवग्रह शांति पूजन के प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन करना चाहिए, यजमान के हाथ में पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

सर्वप्रथम गौर-गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानारन्तवा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति ꣳ निधीनान्त्वा निधिपतिं ꣳ हवामहे वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेंह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष में।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकाम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स इहमादयन्ताम् ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्श्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धोदक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो अग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिमभिः

पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ৩ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि

समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं-

धूपम् मंत्र - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति पसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ७ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन छिड़के

तथा अगुलियों के माध्यम से करोद्वर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ꣳ शुना ते अं ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेंश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - (‘‘एकाचण्डयाः, रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके‘‘ - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा ꣳ सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेंधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्य समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नैमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेंव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेंधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसंगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेंव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान् प्रणाम करें।

दीप पूजन

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

भो दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविघ्नकृत्।

यावत कर्म समाप्तिःस्यात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

देव पूजन-

गौरी, गणेश, कलश, नवग्रह और मात्रिका, ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा विस्तृत यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का

विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ षोडश मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

सूर्य ग्रह शान्ति

पवित्र आचमन आसन शुद्धि के उपरान्त स्वति वाचन तथा मंगल स्तोत्र का पाठकरके पृथ्वी पूजनोपरान्त हाथ में जल ले करके कुशा द्रव्य लेकर संकल्प करनाचाहिए।

संकल्पः-

सर्वप्रथम वेदी के मध्य विराजमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करे। प्रणाम के बादअवाहन मंत्र के बाद स्नान निम्न मंत्रो द्वारा करना चाहिए।

मंत्रः-

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान-दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत से भगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध

स्नान करवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ में।

सिन्दूर:- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताःॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्रः-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखानाचाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मैंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्रः-

नैवेद्यम्- ॐ नाभ्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ऋतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

साधक को सूर्य वैदिक मंत्र का 7000 (सात हजार) जप करना चाहिए तथावैदिक मंत्र यदि सम्भ्व न हो तो सूर्य तांत्रिक मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्यायनमः एकाक्षरी बीज मंत्र ॐ घृणिः सूर्याय नमः जय की संख्या (सात हजार) 7000 होनी चाहिए।

वैदिक मंत्र:-

सूर्यमन्त्र:-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

दानः- मणिक्य गेहूँ धेनु कमल गुड़ लाल कपडा लाल पुष्प सुवर्ण सूर्य कीअनुकूलता के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

बताई गई विधा द्वारा चन्द्रमा तथा भौम का भी पूजन ऐसे ही करे। तथा मंत्रजप एवं दान की विधा इस प्रकार है।

चन्द्रमा:- वैदिक मंत्रः-

चन्द्रमन्त्र:-

ॐ इमन्देवा असपत्न : सुबद्धवम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठयाय महते पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश एष वोऽमी राजाजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्यसोमो ऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना राजा।।

जप संख्या:- 11000

पाद्यो पाद्यं हस्तर्यो अर्घ्यम मुखे आचमनीयम् जलम् समर्पयामि

पंचामृत स्नान- दूध दही मधु घी शक्कर पंचद्रव्य को एकीकृत कर पंचामृत सेभगवान् सूर्य को स्नान करवायें।

मंत्र:-

पञ्चामृतस्नानम् -ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धस्नान:- पंचामृत के स्नान के उपरान्त तीर्थ जल से सर्वांग शुद्ध स्नानकरवाना चाहिए स्नान करवाते समय निम्न मंत्र का पाठ करवाना चाहिए-

मंत्र-

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ||

स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं तवगृहाणपरमेंश्वर।।

वस्त्र-उपवस्त्रः- स्नान के उपरान्त भगवान् सूर्य की प्रसन्नता के लिए लाल व सूती वस्त्र चढ़ाना चाहिए। यदि वस्त्र का अभाव हो तो रोली से रंगकर रूई अथवा रक्षा सूत्र को भी चढाने का विधान है।

मंत्र:-

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्ग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत:- वस्त्र के उपरान्त भगवान् सूर्य को यज्ञोपवीत अर्पणकरनाचाहिए।

मंत्र:-

यज्ञोपवीतम् -यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्ग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर।।

आचमन:- यज्ञोपवीत के बाद आचमन के निमित्त दो बार जल छोड़ना चाहिए।

चन्दन:- पूजा प्रकरण में ग्रह की प्रसन्नता के लिए मलयागिरि अथवा गोपी यदि दोनो न मिले तो हल्दी से चन्दन लगाना चाहिए।

मंत्र:-

गन्धम् (चन्दनम्).

ॐ त्वागन्धर्व्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

रोली:- चन्दन के उपरान्त भगवान् सूर्य तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिए रोलीचढ़ाना चाहिए।

मंत्र:-

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामिन्या कामसम्भवम्।

कुङ्कुमेनार्चितो देवअतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

सिन्दूरः- रोली के उपरान्त सिन्दूर से भगवान् सूर्य की पूजा करनी चाहिए

मंत्रः-

सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत:- सिन्दूर के उपरान्त भगवान् सूर्य (ग्रह) के निमित्त अखण्ड चावल को अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

अक्षताः ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्य्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा: नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

निवेदिता मया भक्त्यागृहाण परमेंश्वर।।

फूलः- अक्षत के उपरान्त रक्त पुष्प के द्वारा भगवान् सूर्य को निवेदित करना चहिए।

मंत्रः-

पुष्पाणिॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धव्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्त्वरी वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

अबीरः- भगवान् सूर्य को सुगन्धित अबीर एवं गुलाल निवेदित करना चाहिए

मंत्रः-

अबीर गुलालम् अबीरं च गुलालं च चारू चन्दनमेंव च।

अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेंश्वर।।

इत्र:- अबीर के उपरान्त भगवान् सूर्य को इत्र चढाना चाहिए।

मंत्र:-

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चम्पकाशोकबकुलमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्द्धहेतुश्चतैलं चारुप्रगृह्यताम्।।

धूपः- इत्र के उपरान्त भगवान् को धूप दिखाना चाहिए।

मंत्र:-

धूपम्-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याशूद्रो ऽअजायत।।

दीपः- धूप के उपरान्त कपूर अथवा घी का दीपक भगवान् सूर्य को दिखाना चाहिए।

मंत्रः-

दीपम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।

श्रोत्त्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।

दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यः- भगवान् की प्रसन्नता के लिए नाना प्रकार के मिष्ठान तथा मेंवा इत्यादि से भगवान् को निवेदित करना चाहिए।

मंत्र:-

नैवेद्यम्-ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णों द्यौ: समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

ऋतुफल:-नैवेद्य के उपरान्त देवताओं के निमित्त ऋतुफल अर्पण करना चाहिए।

मंत्र:-

ऋतुफलम्ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेंश्वर।।

सफल ताम्बूल:- ॠतुफल के उपरान्त देवताओं के निमित्त पान सुपाड़ी लौंग इलायची आदि अर्पित करना चाहिए।

मंत्र:-

ताम्बूलम् (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।

ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेंश्वर।।

दक्षिणाः- सफल ताम्बूल के उपरान्त देवताओं को दक्षिणा प्रदान करना चाहिए।

मंत्र:-

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिं प्रयच्छ में।।

प्रदक्षिणाः- दक्षिणा उपरान्त भगवान् सूर्य को निमित्त प्रदक्षिणा कराना चाहिए।

मंत्र:- यानि कानि च पानि, जन्मांतर कतानि च।

तानि सर्वार्णि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे।।

दान सामाग्री:- वंश पात्र श्वेत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प चीनी वृषभ

घृत शंखदधि मोती कपूर

भौम का वैदिक मंत्र:-

भौममन्त्र:-

अग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्या अयम्।

अपा रेता ॐसिजिन्वति।।

जप संख्या:-10000

दान सामाग्री:- विद्धम पृथ्वी मसूर गोधूम रक्त वृषभ गुड रक्त चन्दन रक्त वस्त्रसुवर्ण ताम्र केसर कसतूरी

सूर्य ग्रह होमः- ग्रहो की शान्ति के निमित्त ग्रहो के पूजन के उपरान्त जप संख्याके साथ दशांश हवन का विधान है। तथा हवन विधान के उपरान्त पूर्व लिखितदान को भी करने से ग्रह शन्ति हो जाती है।

शनिम्-- पश्चिम में - ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शय्योरभिस्रवन्तु नः।।

दशांश आहुति:- 2300

राहूम्-- नैर्ऋत्य कोण में ॐ कया नश्चित्र ऽआभुधदूतीसदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।।

दशांश आहुति:- 1800

केतुम्- वायव्य कोण में - ॐ केतुं कृण्ण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

दशांश आहुति:- 1700

बोध प्रश्न

1. शनि ग्रह होम में शनि की आहुति संख्या होगी।

   1. 2300 2. 2100

   3. 2500 4. 2800

2. राहु ग्रह होम में राहु की आहुति संख्या होगी।

   1. 1500 2. 2100

   3. 1700 4. 1800

3. केतु ग्रह होम में केतु की आहुति संख्या होगी।

   1. 1500 2. 2100

   3. 1800 4. 1700

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 शनि का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 2 राहु का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 3 केतु का वैदिक मंत्र लिखें।

इकाई 15
नवग्रह दान

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में नवग्रह शांति पर्व के नवग्रह हवन के पश्चात दान के विषय में प्रकाश डाला गया है।

उद्‌देश्य

इस इकाई के अध्ययन से नवग्रह शांति पर्व के नवग्रह दान का ज्ञान प्राप्त होगा।

9 ग्रहों की दान सामग्री, दान का समय एवं पूर्णाहुति हवन

अरिष्ट ग्रहों के दुष्प्रभावों को कम करने हेतु ग्रह शांति की शास्त्रोक्त प्रक्रियाओं के प्रथम चरण के बारे में पाठकगण हमारे पूर्ववर्ती आलेख में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं जिसमें सभी 9 ग्रहों के मंत्रों एवं उनकी उचित जाप संख्या के बारे में बताया गया था। अरिष्ट ग्रहों की शांति के अगले चरण आज हम 'वेबदुनिया' के पाठकों को समस्त 9 ग्रहों की दान सामग्री, दान का समय एवं पूर्णाहुति हवन हेतु उचित समिधा की जानकारी देंगे।

आइए, जानते हैं कि नवग्रहों की दान सामग्री, दान का समय एवं हवन समिधा कौन सी है?

1. सूर्य : दान सामग्री-लाल वस्त्र, गुड़, माणिक्य, गेहूं, मसूर की दाल, लाल पुष्प, केसर, तांबा, स्वर्ण, लाल गाय आदि।

दान का समय- सूर्योदय

हवन समिधा- आक (अकाव)

2. चंद्र : दान सामग्री- श्वेत वस्त्र, चावल, शकर, सफेद पुष्प, कर्पूर, दूध, दही, चांदी, मोती, शंख, घी, स्फटिक आदि।

दान का समय-संध्या

हवन समिधा-पलाश

3. मंगल : दान सामग्री- लाल वस्त्र, गुड़, मूंगा, लाल पुष्प, केसर, तांबा, रक्त चंदन, मसूर की दाल आदि।

दान का समय- सूर्योदय से 5 घड़ी के बाद पूरा दिन
हवन समिधा- खैर

4. बुध : दान सामग्री- हरा वस्त्र, साबूत मूंग, हरे फल, पन्ना, कांस्य, किताबें।

दान का समय- सूर्योदय से 5 घड़ी के बाद पूरा दिन
हवन समिधा- अपामार्ग

5. गुरु : दान सामग्री- पीला वस्त्र, स्वर्ण, पुखराज, साबूत हल्दी, गाय का घी, चने की दाल, पीले पुष्प, पीले फल आदि।

दान का समय- संध्या
हवन समिधा- पीपल

6. शुक्र : दान सामग्री- श्वेत वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएं, हीरा, स्फटिक, चांदी, चावल, शकर, इत्र, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दूध, दही आदि।

दान का समय- सूर्योदय

हवन समिधा- गूलर

7. शनि : दान सामग्री- काला वस्त्र, उड़द दाल, काले तिल, तिल का

तेल, चमेंली का तेल, सरसों का तेल, लोहा, छाता, चमड़े, नीलम, कंबल आदि।

दान का समय- मध्यान्ह काल

हवन समिधा- शमी

8. राहू : दान सामग्री- काला या नीला वस्त्र, उड़द दाल, तेल से भरा ताम्रपात्र, सूपड़ा, कंबल, सप्तधान्य, गोमेंद, खड्ग आदि।

दान का समय- रात्रि

हवन समिधा- दूर्वा

9. केतु : दान सामग्री- काला वस्त्र, काले तिल, चमेंली का तेल, लहसुनिया, चितकबरा कंबल, साबुत उड़द, काली मिर्च आदि।

दान का समय- रात्रि

हवन की समिधा- कुशा

बोध प्रश्न

1. गेहू, धेनू, कमल, गुड़ का दान होता है।

   1. सूर्य के लिए 2. चंद्रमा के लिए

   3. राहु के लिए 4. केतु के लिए

2. कास्य पात्र हरित वस्त्र गजदंत का दान होता है।

   1. बुद्ध के लिए 2. शुक्र के लिए

   3. गुरू के लिए 4. शनि के लिए

3. नीलम कृष्ण वस्त्र लोहा का दान होता है।

   1. बुद्ध के लिए 2. शनि के लिए

   3. गुरु के लिए 4. शुक्र के लिए

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 सूर्य ग्रह शांति दान हेतु वस्तु पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 चंद्रमा ग्रह शांति दान हेतु वस्तु पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 3 राहु ग्रह शांति दान हेतु वस्तु पर प्रकाश डालें।

खण्ड-4

इकाई-16 पंचोपूजनपचार -

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजा के उपचार विधि पर प्रकाश डाला गया है।

उद्‌देश्य

इस इकाई के अध्ययन से पंचोपचार पूजन का ज्ञान प्राप्त होगा।

प्राचीन धर्म होने के नाते हमारे यहां हर धार्मिक कृत्य की एक विशिष्ट विधि होती है। समय और परिस्थितियों के अनुरूप हमें छोटी और बड़ी दोनों तरह की पूजा की सुविधा है। यदि हम छोटी पूजा करना चाहते हैं तो पंचोपचार पूजन विधि का पालन कर सकते हैं, यदि विस्तृत पूजा की इच्छा है तो उसके लिए षोडशोपचार पूजन विधि का पालन करें। इसमें चरण-दर-चरण पूजन के नियमों का समावेश किया गया है।

1. देवता को गंध (चंदन) लगाना तथा हलदी-कुमकुम चढ़ाना

सबसे पहले अपने आराध्य को अनामिका से (कनिष्ठिका के समीप की उंगली से) चंदन लगाएं। फिर दाएं हाथ के अंगूठे और अनामिका के बीच चुटकीभर कर पहले हलदी, फिर कुमकुम देवता के चरणों में अर्पित करें ।

नीचे दिए गये निम्न मंत्र का जाप करके गन्ध (चन्दन) समर्पित करें ।

“ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दन प्रतिगृह्मयताम्।

चन्दन समर्पयामि॥”

2. देवता को पत्र-पुष्प (पल्लव) चढ़ाना

देवता को कागज, प्लास्टिक आदि के कृत्रिम और सजावटी फूल न चढ़ाएं। ताजे और सात्विक पुष्प चढ़ाएं । देवता को चढ़ाए जानेवाले पत्र-पुष्प न सूंघें । देवता को पुष्प चढ़ाने से पूर्व पत्र चढ़ाएं । विशिष्ट देवता को उनका तत्त्व अधिक मात्रा में आकर्षित करनेवाले विशिष्ट पत्र-पुष्प चढ़ाएं, उदाहरण के लिए शिवजी को बिल्वपत्र तथा श्री गणेशजी को दूर्वा और लाल पुष्प । पुष्प देवता के सिर पर न चढ़ाकर उनके चरणों में अर्पित करें । डंठल देवता की ओर एवं पंखुड़ियां (पुष्पदल) अपनी ओर कर पुष्प अर्पित करें ।

नीचे दिए गये निम्न मंत्र का जाप करके पुष्प समर्पित करें |

“ॐ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।

पुष्पाणि समर्पयामि॥”

पुष्प समर्पित करें।

3. देवता को धूप दिखाना (अथवा अगरबत्ती दिखाना)

देवता को धूप दिखाते समय उसे हाथ से न फैलाएं। धूप दिखाने के बाद विशिष्ट देवता का तत्त्व अधिक मात्रा में आकर्षित करने हेतु विशिष्ट सुगंध की अगरबत्तियों से उनकी आरती उतारें, उदाहरण के लिए शिवजी को हीना से तथा श्री लक्ष्मीदेवी की गुलाब से। धूप

दिखाते समय तथा अगरबत्ती घुमाते समय बाएं हाथ से घंटी बजाएं। नीचे दिए गये निम्न मंत्र का जाप करके धूपबत्ती जलाकर समर्पित करें ।

"ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।

धूपमाघ्रापयामि ॥"

धूप जलाकर समर्पित करें।

4. देवता की दीप-आरती करना

दीप-आरती तीन बार धीमी गति से उतारें। दीप-आरती उतारते समय बाएं हाथ से घंटी बजाएं। दीप जलाने के संदर्भ में ध्यान में रखने योग्य सूत्र

1. दीप प्रज्वलित करने हेतु एक दीप से दूसरा दीप न जलाएं ।

2. तेल के दीप से घी का दीप न जलाएं ।

3. पूजाघर में प्रतिदिन तेल के दीप की नई बाती जलाएं ।

5. देवता को नैवेद्य निवेदित करना

नैवेद्य के पदार्थ बनाते समय मिर्च, नमक और तेल का प्रयोग अल्प मात्रा में करें और घी जैसे सात्विक पदार्थों का प्रयोग अधिक करें। नैवेद्य के लिए सिद्ध (तैयार) की गई थाली में नमक न परोसें। देवता को नैवेद्य निवेदित करने से पहले अन्ना ढंककर रखें । नैवेद्य समर्पण में सर्वप्रथम इष्टदेवता से प्रार्थना कर देवता के समक्ष भूमि पर जल से चौकोर मंडल बनाएं तथा उस पर नैवेद्य की थाली रखें । नैवेद्य समर्पण में थाली के चारों ओर घड़ी के कांटे की दिशा में एक

ही बार जल का मंडल बनाएं। फिर विपरीत दिशा में जल का मंडल न बनाएं। नैवेद्य निवेदित करते समय ऐसा भाव रखें कि 'हमारे द्वारा अर्पित नैवेद्य देवता तक पहुंच रहा है तथा देवता उसे ग्रहण कर रहे हैं।"

नीचे दिए गये निम्न मंत्र का जाप करके दीपक जलाकर समर्पित करें |

"ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत ।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥"

दीपक जलाकर समर्पित करें।

देवतापूजन के उपरांत किए जाने वाले कृत्य

यद्यपि पंचोपचार पूजन में 'कर्पूरदीप जलाना" यह उपचार नहीं है, तथापि कर्पूर की सात्विकता के कारण उस का दीप जलाने से सात्विकता प्राप्त होने में सहायता मिलती है। अतएव नैवेद्य दिखाने के उपरांत कर्पूरदीप जलाएं। शंखनाद कर देवता की भावपूर्वक आरती उतारें। आरती ग्रहण करने के उपरांत नाक के मूल पर (आज्ञाचक्र पर) विभूति लगाएं और तीन बार तीर्थ प्राशन करें। अंत में प्रसाद ग्रहण करें तथा उसके उपरांत हाथ धोएं।

"ॐ शर्कराखण्डखाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः।

आहारै र्भक्ष्यभोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

नैवेद्यं निवेदयामि ॥"

नैवेद्यं समर्पित करें।

"ॐ प्राणाय स्वाहा ।

ॐ आपानाय स्वाहा ।

ॐ व्यानाय स्वाहा ।

ॐ उदानाय स्वाहा ।

ॐ समानाय स्वाहा ।

प्रत्येक स्वाहा बोलने के बाद आचमनी जल समर्पित करें।

इसके बाद इष्ट देवी या देवता का ध्यान मन्त्र करने के उपरांत उनका पंचोपचार पूजन आरम्भ करे इसके उपरान्त जिस भी देवी या देवता की पूजा कर रहे हो उसकी चालीसा, स्तोत्र, अष्टोत्तर शतनाम, कवच एवं आरती आदि का पाठ करें। और अंत में पुष्पांजलि समर्पित और प्रदक्षिणा करे।

बोध प्रश्न

1. पंचोपचार पूजन में सबसे पूर्व प्रयोग किया जाता है।

    1. नवैद्य का   2. गंध का

    3. दीप का   4. धूप का

2. पंचोपचार पूजन में सबसे अंत में प्रयोग किया जाता है।

    1. नवैद्य का   2. गंध का

    3. दीप का   4. धूप का

3. पंचोपचार पूजा में वस्तु का प्रयोग होता है।

    1. गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नवैद्य

    2. जल एवं दीप

    3. फल एवं दूर्वा

4. दक्षिणा

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पंचोपचार पूजा पर प्रकाश डालियें।

प्रश्न - 2 पंचोपचार पूजन में प्रयुक्त सामग्रियों के नाम लिखें ।

प्रश्न - 3 पंचोपचार पूजन में प्रयुक्त सामग्रियों का क्रम लिखें।

इकाई- 17
दशोपचार:-

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में दशोपचार पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से दशोपचार पूजन का ज्ञान प्राप्त होगा।

दशोपचार

"ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।"

अमुक के स्थान पर ध्यान मंत्र द्वारा पूजे जाने वाले देवी-देवता के नाम का उच्चारण करें।

इसके उपरान्त षोडशोपचार मंत्रों के उच्चारण से देवी-देवता का पूजन करें, षोडशोपचार के अलावा दशोपचार और पंचोपचार से भी देवपूजन किया जा सकता है।

पाद्य-

"ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्। पाद्यं समर्पयामि।"

इसके उपरांत आचमनी से चरणों को धोने के लिए जलं समर्पित करें।

अर्घ्यम्

"ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।

करुणां कुरु में देव गृहाणार्यं नमोऽस्तुते।"

गन्ध पुष्प अक्षत युतं जलं तीन बार समर्पित करें।

आसनम्

"ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।

आसनञ्च मया दत्त गृहाण परमेश्वर। आसनं समर्पयामि।"

पुष्पं समर्पित करें।

स्नानम्

"ॐ गंगा सरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव ह्यतः शान्तिं प्रयच्छ में।"

आचमनी से स्नान के लिये जल समर्पित करें।

वस्त्रम्

"ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।"

आचमन करें।

6. गंध

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलंपनं समर्पयामि।

पुष्पाणि

"ॐ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्। पुष्पाणि समर्पयामि।"

पुष्प समर्पित करें

धूपम्

"ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। धूपमाघ्रापयामि।"

धूप जलाकर समर्पित करें।

दीपम्

"ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।"

दीपक जलाकर समर्पित करें।

नैवेध्यम्

"ॐ शर्कराखण्डखाद्यादिदधिक्षीरघृतादिभिः। आहारैर्भक्ष्यभोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। नैवेद्यं निवेदयामि।"

नैवेद्यं समर्पित करें।

बोध प्रश्न

1. दशोपचार पूजन में सबसे पहले प्रयोग किया जाता है।

   1. अर्ध्य का 2. पाद्य का

   3. आचमन का 4. धूप का

2. दशोपचार पूजन में वस्त्र के बाद चढाने का विधान है।

   1. पाद्य का 2. गंध का

   3. अर्ध्य का 4. आचमन का

3. दशोपचार पूजन में दीप के बाद प्रयोग की जाने वाली वस्तु है।

   1. पुष्प 2. गंध

   3. वस्तु 4. नवैद्य

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 दशोपचार पूजन क्रम लिखें।

प्रश्न - 2 दशोपचार पूजन में गंध के बाद किस वस्तु को चढाया जाता है।

प्रश्न - 3 दशोपचार पूजन में धूप दीप के पश्चात् किस वस्तु को चढाया जाता।

इकाई- 18

षोडशोपचार:-

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में षेडशोपचार पूजन विधि पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से षोडशोपचार पूजन का ज्ञान प्राप्त होगा।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्घ आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्:- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्र्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

अवलिप्प्ता रौद्र्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हूए चढ़ाएं तथा भगवान् को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान् को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

वासो अग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान् को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमनी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान् को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा अखनँस्त्वामित्र्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्राः नविष्ठया मती योजन्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान् को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्चा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्वा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्वा - (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाङ.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्वा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्वा न चढ़ाएं दूर्वा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वानप्प्रमियः पतयंति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्मिमभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान् पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान् को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि वह्निनतमं ꣳ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान् को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वच्चो ज्ज्योतिर्व्वच्चर्ः स्वाह सूर्य्यो व्वच्चो ज्ज्योतिर्व्वच्चर्ः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

(हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान् को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान् को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं ꣳ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान् पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अं ७ शुना ते अं ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान् को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

वसन्तोऽ यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् भगवान् को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

बोध प्रश्न

1. षोडशोपचार पूजन में वस्त्र के उपरांत चढाया जाता है।

   1. उपवस्त्र 2. गंध

   3. हल्दी 4. चंदन

2. षोडशोपचार पूजन में पाद्य के उपंरात दिया जाता है।

   1. अर्ध्य 2. स्नान

   3. पुष्प 4. दक्षिणा

3. षोडशोपचार पूजन में ताम्बूल के उपरांत भगवान् को-

   1. नवैद्य दिया जाता है

   2. दक्षिणा दिया जाता है

   3. पुष्प चढाया जाता है

   4. गंध चढाया जाता है

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 षोडशोपचार पूजन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 षोडशोपचार पूजन की सामग्री लिखें।

प्रश्न - 3 षोडशोपचार पूजन में दक्षिणा का मंत्र लिखें।

इकाई- 19 राजोपचार

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में राजोपचार पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से राजोपचार पूजन का ज्ञान प्राप्त होगा।

॥ श्री ललिता राजोपचार पूजन॥

सौंदर्य लहरी के प्रणेता आद्य श्री शंकराचार्य द्वारा निर्दिष्ट

केवल दीक्षित साधकों के लिए
आचमनीयम्-
आचमनीय जल प्रदान करें-
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गांगेन मत्कल्पितं।
साष्टागं प्रणतिं त्वमम्ब, कमले दृष्टया कृतार्थी कुरु॥

पयस्नानम्-
निम्न मंत्र से गौदुग्ध से स्नान कराएँ-
स्व धेंनुजातं बलवीर्य वर्धनं, दिव्यामृतात्यन्तर सप्रदं सितम्।
श्री चंडिके दुग्ध समुद्र संभवे, गृहाण दुग्धं। मनसा मयाऽर्पितम्॥
(दुग्ध स्नानं समर्पयामि)

दधिस्नानं-
निम्न मंत्र से दही से स्नान कराएँ -
क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च, श्री चन्द्रकांतिसदृशं सुशोभनम्।

श्री चण्डिके शुंभनिशुंभनाशिनि, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं दधि।
(दधि स्नानं समर्पयामि।)

घृतस्नानं-

निम्न मंत्र बोलकर घृत से स्नान कराएँ-
श्री क्षीरजोद् भूतमिदं मनोज्ञं प्रदीप्तवह्नि द्युतिपावितं च।
श्री चण्डिके दैत्यविनाश दक्षे, हैयंगवीनं परिगृह्यतां च॥

मधुस्नानं-

निम्न मंत्र से शहद से स्नान कराएँ -
माधुर्यमिश्रं मधुमक्षिकागणै, वृक्षालिरम्ये मधुकानने चित्तम्।
श्री चंडिके शंकर प्राणवल्लभे, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं मधु॥
(मधु स्नानं समर्पयामि)

शर्करा स्नानं-

निम्न मंत्र से शकर से स्नान कराएँ-
पूर्णेक्षुकांभोधि समुद्भवामिमां माणिक्य मुक्ता फलदाममंजुलाम्।
श्री चण्डिके चंड विनाशकारिणि स्नानार्थ मंगीकुरु शर्करां शुभाम्॥
(शर्करा स्नानं समर्पयामि)

सुगंधितद्रव्य स्नानं-

निम्न मंत्र से सुगंधि इत्र-सुगंधित तेल अर्पित करें-
एतच्चम्पक तैलमम्ब विविधैः पुष्पैर्मुहूर्वासितम्।
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृंगैर्भ्रमद्भिर्वृतम्।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरमितो हस्तैर्धृतं ते मया
केशेषु भ्रमर-प्रभेषु-सकलेष्वंगेषु चालिप्यते॥

(सुगंधि द्रव्यं समर्पणयामि)

उद्वर्तनं-

गंध कुंकुमादि से उद्वर्तन -

मातः ! कुंकुमपंकनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनम्।
भक्त्याऽहं कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केसरैः।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकोदञ्चितैः,
स्नानं ते नव रत्न कुम्भ-सहितैः संवासितोष्णोदकै॥

(उद्वर्तनं समर्पयामि)

पञ्चामृत स्नानं-

पञ्चामृत से स्नान कराएँ-

दधि दुग्ध घृतै स माक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः।
स्नपयामि तवाहमादरात् जननि ! त्वां पुनरुष्ण वारिभिः॥

(पंचामृत स्नानं समर्पयामि)

तीर्थजल-

तीर्थजल अथवा शुद्ध जल (को ही तीर्थ जल सदृश मानकर उस) से स्नान कराएँ-

एलोशीर-सु-वासितैः सकुसुमैर्गंगादि तीर्थोदकैः,
माणिक्यामल मौक्तिकामृत युतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः।
मंत्रान् वैदिक तांत्रिकान् परिपठन् सानंदमत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि! स्नेहात् त्वमंगी कुरु॥

(स्नानं समर्पयामि)

श्री महालक्ष्माद्यावाहित देवताभ्यो नमः।

मूलमंत्र द्वारा पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन करें। पश्चात् यथा शक्ति, श्री सूक्त, देवी सूक्ति आदि से अभिषेक करें।

शुद्धोदक स्नानं-

शुद्ध जल से स्नान कराएँ-
उद्गंधैरगरुद्भवैः सुरभिणा कस्तूरिका वारिणा,
स्फूर्जत्सौरभ यक्ष कर्दम जलैः काश्मीर नीलैरपि
पुष्पांभोभिरशेष तीर्थ सलिलैः कर्पूरवासोभरैः।
स्नानं ते परिकल्पयामि कमले भक्तया तदंगीकुरु॥
(शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि)

वस्त्र -

वस्त्र-उपवस्त्र समर्पित करें -
बालार्क-द्युति दाडिमीय-कुसुमप्रस्पर्धि सर्वोत्तमम्,
मातस्तवं परिधेहि दिव्य-वसनं भक्तया मया कल्पितम्।
मुक्ताभिर्ग्रथितं सुकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम्
तप्तस्वर्णसमान वर्णमतुलं प्रावर्णगी कुरु॥
(वस्त्रं उपवस्त्रं समर्पयामि)

आचमनीयं-

आचमन हेतु जल दें -
भूपाल दिक्पाल किरीट रत्नमरीचिनी राजित पाद पीठे।
देवैः समाराधित पादपद्मे श्री चंडिके स्वाचमनं गृहाण॥
(वस्त्र उपवस्त्राते आचमनीयं जलं समर्पणयामि)

पादुका समर्पण-

पादुका अथवा पादुका के रूप में अक्षत समर्पित करें-

नवरत्नमये मयाऽर्पिते, कमनीये तपनीय पादुके।

सविलासमिदं पद द्वयम्, कृपया देवि ! तयोर्निधीयताम्॥

(पादुका समर्पयामि)

केश प्रसाधनं-

विभिन्न केश प्रसाधन-

बहृभिरगुरुधूपैः सादरं धूपयित्वा,

भगवति! तवकेशान्ककंतैर्मार्जयित्वा।

सुरभिभिरविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा,

झटिति कनक सूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि॥

(केश प्रसाधन समर्पयामि)

कज्जलं समर्पण -

निम्न मंत्र से श्री देवी को काजल आंजे-

चाम्पेय कर्पूरक चंदनादिकै, र्नानाविधै गंध चयैः सुवासितम्।

चैत्रांजनार्थाय हरिन्मणिप्रभं

श्री चंडिके स्वीकुरु कज्जलं शुभम्॥

(कज्जलं समर्पयामि)

गंध समर्पण -

सुगंधित चन्दन अर्पित करें -

प्रत्यंगं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्छम्

कुर्वे केशकलाप मायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम्।

काश्मीरेरैर द्रवैर्मलयजैः संघर्ष्य संपादितं,
भक्त त्राणपरे श्रीकृष्ण गृहिणि श्री चंदनं गृह्यताम्।
(चंदनं विलेपयामि)

तिलक समर्पण-

निम्न मंत्र से तिलक अर्पित करें -
मातः भालतले तवातिविमले काश्मीर कस्तूरिका,
कर्पूरागरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गागं ततः।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दम रसं सिक्ता च पुष्प द्रवम्,
पादौ चंदन लेपनादिविधिभिः सम्पूजयामि क्रमात्॥
(तिलकं समर्पयामि)

अक्षतम् -

कुंकुमयुक्त अक्षत अर्पित करें -
विभिन्न आभूषण अर्पित करें :-
रत्नाक्षतैस्त्वांपरि पूजायामि, मुक्ता फलैर्वा रुचिरार विन्दैः ।
अखण्डितैर्देवि यवादिभिर्वा काश्मीर पंकांकित तण्डुलैर्वा॥
(कुंकुमाक्त अक्षतान् समर्पयामि)

आभूषणं समर्पण -

विभिन्न आभूषण अर्पित करें -
मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरां विन्यस्यकाञ्ची कटौ,
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्र मालां गले।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीं करेषु क्रमात्,
ताटंके तव कर्णयो हि विदघे शीर्षे च चूडामणिम्॥
धम्मिले तवदेवि हेमकु सुमान्याधाय भाल स्थले,

मुक्ता राजि विराजमान तिलकं नासापुटे मौक्तिकम्॥
मातः मौक्तिकजालिकां च कुचयोः सर्वांगुलीषूर्मिकाः,
कट्यां काञ्चनकिंकिंणीर्विनिदघे रत्नावतंसं श्रुतौ॥
(आभूषणं समर्पयामि)

नानापरिमल द्रव्यम् -

अबीर, गुलाल, हल्दी, मेंहँदी आदि अर्पित करें -
जननि चम्पक तैलमिदं पुरो मृगमदोप युतं पटवासकम्।
सुरभि गंधमिदं च चतुः समम्, सपदि सर्वमिद प्रतिगृह्यताम्।
(नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि)

सिंदूरं -

निम्न मंत्र से ही मिश्रित सिंदूर विलेपित करें -
सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेंतत्,
सिन्दूरं में हृदय कमले हर्षं वर्ष तनोतु।
बालादित्य द्युतिरिव सदालोहिता यस्य कान्तिः,
अन्तर्ध्वान्तं हरति सकलं चेतसा चिन्तयैव॥
(सिंदूर समर्पयामि)

पुष्पं समर्पण-

नानासुगंधि पुष्प समर्पित करें -
मंदारकुन्द करवीर लवंगपुष्पैः, त्वांदेवि सन्ततमहं परिपूजयामि जाती
जपा वकुल चम्पक केतकादि, नाना विधानि कुसुमानि चतेऽर्पयामि।
मालती वकुलहेम पुष्पिका, कोविदार करवीरकैतकैः। कर्णिकार गिरि
कर्णिकादिभिः पूजयामि जगदंब ते वपुः॥
पारिजात-शतपत्र पाटलै, मल्लिका वकुल चम्पकादिभिः।

अम्ब्रुजैः सु कमलैश्च सादरम्, पूजयामि जगदंब ते वपुः॥
(नाना सुगंधि पुष्पं समर्पयामि)

पुष्प माला-

पुष्पमाला अर्पित करें -

पुष्पौद्यैर्द्योतयन्तैः सततपरिचलत्कान्ति कल्लोल जालैः।
कुर्वाणा मज्जदन्तःकरण विमलतां शोभितेव त्रिवेणी॥
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिर्निर्मिता दीप्यमानै
र्नित्यं हारत्रयीत्वं भगवति कमले गृह्यतां कंठमध्ये॥
(पुष्प मालां समर्पयामि)

अंग पूजा

गंध, अक्षत व पुष्प लेकर अंग पूजन करें ।

ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं मंगलायै नमः गुल्फौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः जंघै पूजयामि।
ॐ ह्रीं कौमायै नमः जातुनी पूजयामि।
ॐ ह्रीं वागीश्वयै नमः उरौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं वरदायै नमः कटीम् पूजयामि।
ॐ ह्रीं पद्माकरवासिन्यै नमः स्तनौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं महिषाद्दिन्यै नमः कंठं पूजयामि।
ॐ ह्रीं उमासुतायै नमः स्कंधौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं इण्द्रायै नमः भुजौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं गौर्ये नमः हस्तौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं मौहवत्यै नमः मुखं पूजयामि।

ॐ ह्रीं शिवायै नमः कर्णौ पूजयामि।
ॐ ह्रीं अन्नपूर्णायै नमः नेत्रे पूजयामि।
ॐ ह्रीं कमलायै नमः ललाटं पूजयामि।
ॐ ह्रीं महालक्ष्मै नमः सर्वांगं पूजयामि।

अथ आवरण पूजा

वांछित जानकारी :-
(अपनी कुल परंपरा अनुसार सात्विक, तामसिक, राजसिक नव आवरण पूजन करें)।
नव आवरण पूजा में पाँच क्रम एक साथ होते हैं। वे निम्न हैं -:

आवाहन व ध्यान
पूजन
नमस्कार
तर्पण
स्वाहाकार

अतः प्रत्येक आवरण में ध्यान बोलने के पश्चात् आम वरण पूजन क्रम में प्रत्येक देवता के नाम के पश्चात् "ध्यायामि, पूजयामि, नमः, तर्पयामि स्वाहा"।

जैसे कि प्रथम आवरण में उर्ध्वाम्नाय परंपरा में निम्न प्रकार से उच्चारित करेंगे :- "ॐ महादेव्यम्बामयी श्री पादुकाम पूजयामि तर्पयामि नमः स्वाहा।"

इसी प्रकार प्रत्येक आवरण की पूजन समाप्ति पर उस आवरण का

नाम बोलकर निम्न प्रकार से बोलेंगेः-

" एताः प्रथमावरण देवताः साङ्यै सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।"

तामसी पूजा में तर्पण- सुरा से किया जाता है।

विशेष पूजा में- योगिनी पात्र, वीरपात्र, शक्तिपात्र, गुरुपात्र, भोगपात्र, बलिपात्र की अलग-अलग स्थापना की जाती है।

श्रीयंत्र नवारण पूजन क्रम में बिंदु, त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल, चतुस्त्र, भूपूर इत्यादि के क्रम में भी आम्नायों के अंतर्गत पूजन भेद हैं।

अतः साधक अपनी कुल परंपरा व गुरु निर्देशों का पालन करें।

नव आवरण पूजन यदि समयाभाव अथवा अन्य कारण से न कर पाएँ तो सामान्य अभिषेक किया जा सकता है। यदि अभिषेक भी न कर पाएँ तो प्रणाम कर राजोपचार पूजन क्रम में आगे का पूजन शुरू करें।

हरिद्रा समर्पण :- हरिद्रा अर्पित करें :- हरिद्रुमोत्थामति पीतवर्णां
सुवासितां चंदन पातरजातैः ।
अनन्यभावेन समर्पितांते मार्तहरिद्रामुररी कुरुष्व ॥
हरिद्राचूर्णम् समर्पयामि

धूपम् :- दशांगधूप जलाकर धुआँ आघ्रणित** करें:- लाक्षा सम्मिलितैः सिताभ्रसहितैः, श्रीवास सम्मिश्रितै कर्पूरा कलितैः सितामधु, युतैर्गो सर्पिषाऽऽ लोडितैः॥ श्री खण्डागरु गुग्गुल प्रभृतिमिर्नाना विधैवस्तुभिः। धूपं ते परिकल्पयामि, जननि स्नेहात् त्वमंगी कुरु॥

(धूपम् आध्रापयामि)

नीराजनं दर्शनम् :-
रत्नालंकृत हेम पात्र निहितैर्गो सर्पिषा लोडितैः
दीपै र्दीर्घ तरान्धकार भिरुरैर्बालार्क कोटिप्रभैः ॥
आताम्र ज्वलदुज्जवल प्रविलसद् रत्नप्रदीपैस्तथा ।
मातः त्वामहमादरादनु-दिनं नीरांजयाम्युच्चकैः ॥
(नीराजनं समर्पयामि)

नैवेद्य निवेदन :
चतुरस्र बनाएँ। उस पर नैवेद्य पात्र रखें। 'ह्रीं नमः' से प्रोक्षण करें। मूल मंत्र से (दाहिने हाथ के पृष्ठ पर बायाँ हाथ रखकर) नैवेद्य को आच्छादित करें, वायु बीज 'यं' सोलह बार कर अग्नि बीज 'रं' सोलह बार जपें, अमृतीकरण हेतु पश्चात् बाएँ हाथ को अधोमुख करें। उसके पृष्ठ पर दक्षिण हाथ रख नैवेद्य की ओर हाथ रखकर अमृत बीज 'वं' का सोलह बार जाप कर नैवेद्य के अमृतमय होने की भावना करें। धेनुमुद्रा दिखावें, आठ बार मूल मंत्र बोलकर गंध पुष्प चढ़ावें, बाएँ हाथ के अंगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करें। दाहिने हाथ में जल पात्र लेवें। निम्न मंत्र बोलें-

चतुर्विधानं सघृतं सुवर्णपात्रे मया देविसमर्पितं तत्।

संवीज्यमाना मरवृन्दकैस्तवं जुषस्व मातर्दय या ऽवलोकम ॥
श्री मन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः नैवेद्यं सर्मपयामि
(यह मंत्र बोलकर देवी के दक्षिण भाग में जल डालें।)
पश्चात बाएँ हाथ की अनामिका मूल और अंगुष्ठ से नैवेद्य मुद्रा दिखाकर, पात्र में पुष्प तुलसी मंजरी छोड़ें।

॥ भगवति ! निवेदितानि हवींषिं जुषाण ॥

ग्रासमुद्रा दिखावें । बाएँ हाथ को पद्माकार करें। साथ ही दाहिने हाथ से निम्न मुदा में दिखाएँ :-
ह्रीं प्राणाय स्वाहाः कनिष्ठिका
(अनामिका व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं अपानाय स्वाहाः तर्जनी
(मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं व्यानाय स्वाहाः तर्जनी
(अनामिका, मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं उदानाय स्वाहाः अनामिका
(मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं समानाय स्वाहाः सर्वांगुलिभिः
इसके पश्चात् आचमनी से जल लेवें।

प्रार्थनाः- निम्न प्रार्थना बोलें :-
नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरंपरम् ।
अखंडानंदसम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ॥
श्री मन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः
जलं समर्पयामि अन्तःपट करें।

(पुनः आचमन हेतु जल छोड़ें।)
ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्ठैः समन्तात्, सिंजद्वाल,
व्यंजनपिकरैर्वीज्यमाना सखीभिः
नर्मक्रीड़ा प्रहसन परान पंक्ति भोक्तृन् हसन्ती,
भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान देव देवी॥1॥

शाली भक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं,
सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्याम्॥
आज्यं प्राज्यं सुभोज्यं नयन रुचिकरं राजिकैलामरीचैः स्वादीयं
शाकराजी परिकर ममृताहारजोषं जुषस्व ।।
सात बार मूल मंत्र जपें, पुनः जल छोड़ें
नीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो मध्ये पानीयं समर्पयामि।

प्रार्थना : अब प्रार्थना करें :-
सापूपसूपदघिदुग्धसिता-घृतानि, सुस्वादु भक्ष्य परमान्न पुरः सराणि
शाकोल्लसन्मरिच जीरक वाल्लिकानि, भक्ष्याणि भक्ष्य जगदम्ब
मयाऽर्पितानि

दुग्धं निवेदनं- (केशर, सूखे मेंवे व इलायचीयुक्त दुग्ध अर्पित करें।)
क्षीर मेंतदिदमुत्तमो, त्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुत्तमम मधु ।
मातरेतदमृतोपमं पयः, सम्भ्रमेंण परिपीतयां मुहुः ॥
(अमृतपमं पयः समर्पयामि)
निम्न मंत्र बोलकर आचमन दें :
गंगोत्तरी वेग समुद्भवेन सुशीतलेनातिमनोहरेण ।
त्वं पद्म पत्राक्षि मयाऽर्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व ॥
(आचमनीय समर्पयामि)

मुख प्रक्षालनम् -
उष्णोदकैः पाणि युगं मुखं च, प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रै।
कर्पूर मिश्रेण स कुंकुमेंन, हस्तौ समुर्द्तय चन्दनेन ॥
मुख प्रक्षालनार्थं, करोद्वर्तनार्थे जलं चंदनं समर्पयामि-

फलानिः ऋतु फल समर्पण :-
जम्वाम्ररम्भाफल संयुतानि, द्राक्षा फल क्षोद्रसमन्वितानि।
सनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि ॥
कूष्माण्डकोशातिकसंयुतानि, जम्बीर नारिंग समन्वितानि।
स बीजापुराणि स बादराणि, फलानि ते देवि समर्पयामि॥
(ऋतुफलानि समर्पयामि)

तांबूलम् समर्पण :(एला, लवंगयुक्त पान का बीड़ा)
कर्पूरेण युतैर्लवंग- सहितै स्तक्कोल चूर्णान्वितैः,

सुस्वादु क्रमुकैः सगौर खदिरैः सुस्निग्ध जाती फलैः।

मातः कैत कपत्र पाण्डुरुचिभि स्तांबूल वल्ली दलैः, सानंदं मुख मण्डनार्थमतुलं तांम्बूलमंगीकुरु॥

अग्रिमयंक्ति एलालवंगादि समन्वितानि तक्कोल कर्पूर विमिश्रितानि।

ताम्बूलं वल्लीदल संयुतानि पूगानि ते देवि समर्पयामि ॥
मुख वासार्थे तांबूल समर्पयामि ।

दक्षिणा समर्पण :
अथबहुमणिमिश्रैमौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,

त्रिभुवन कमनीयैः पूजायित्वा च वस्त्रैः।

मिलित विविध मुक्तै दिव्य लावण्य युक्तताम् ।
जननि कनक वृष्ठिं दक्षिणां ते समर्पयामि॥
(दक्षिणां समर्पयामि)

आरार्तिकं:
महतिकनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान् डमरू सदृशय रूपान् पक्व गोधूम दीपान् ।
बहृघृतमय तेषुन्यस्त दीपान् प्रकृष्ठान्, भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्तिकं ते ॥
सविनयमथ दत्वा जानुयुग्मं धरण्याम्, सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारार्तिकस्य ।
मुख कमलसमीपे तेऽम्ब सार्थ त्रिवारम् भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कठाक्षः ॥

प्रदक्षिणा :
पदे पदे या परिपूजेकभ्यः, सद्योऽश्व मेंधादिफलं ददाति ।
तां सर्व पाप क्षय हेतु भूतां, प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥
(प्रदक्षिणा समर्पयामि)
विशेषार्घ्य : विशेष अर्घ्य प्रदान करें :
कलिंगकोशातक संयुतानि जंबीर नारिंग समन्वितानि ।
सुनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि॥
(विशेष अर्घ्यम् समर्पयामि)

छत्रं समर्पण :

मातः कांचनदण्डमण्डितमिदं पूर्णोन्दुबिम्बप्रभम्,
नानारत्नविशोभि हेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम्।
भास्वन मोक्तिक जालिका परिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतम्,
छत्रं ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम्॥
(छत्रं समर्पयामि।)

चामरं समर्पण :
शरदिन्दु मरीचि गौरवर्णैः, मणिमुक्ता विलसत् सुवर्ण दण्डैः।
जगदंब विचित्र चामरैरत्वाम् अहमानन्द भरेण वीजयामि॥
(चामरं समर्पयामि)

दर्पणं समर्पयामि :
मार्तण्डमण्डलनिभो जगदंब योऽयम्,
भक्त्या मयामणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते।
पूर्णेन्दु बिम्ब रुचिरं वदनं स्वकीयम्
अस्मिन् विलोकय विलोल विलोचने त्वम्॥
(दर्पण समर्पयामि)

अश्व समर्पण :
प्रियगतिरतितुंगो रत्न कल्याण युक्तः,
कनकमय विभूषः स्निग्ध गंभीर घोषः।
भगवति कलितोय वाहनार्थं मयाते,
तुरंग शतसमेतो वायु-वेगस्तुरंगः॥

गज समर्पण :
मधुकरवृत्तकुंभन्यस्त सिन्दुररेणुः,
कनक कलितघण्टा किंकिणी शोमि कण्ठः।
श्रवण युगल चञ्चच्चामरो मेंघतुल्यो,
जननि तव मुदे स्यान्मत मातंग एषः॥

रथ समर्पण :
द्रुतमतुरगैर्विराजमानम्, मणिमयचक्र चतुष्टयेन युक्तम्।
कनकमयममुं वितानवन्तम्, भगवति तेहि रथं समर्पयामि॥

सैन्य समर्पण :
हयगजरथपति शोभमानम्,
दिशिदिशि दुन्दुभि मेंघनाद युक्तम्।
अभिनव चतुरंग सैन्यमेंतत्,
भगवति भक्ति भरेण तेऽर्पयामि॥

दुर्ग समर्पण :
परिखीकृतसप्त सागरम् बहुसम्पत सहितं मयाम्ब ते विपुलम्।
प्रबलं धरणी तलाभिधम्, दृढ़ दुर्गमिदं निखिलं समर्पयामि॥

व्यंजन समर्पण
शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरति सौरम्य युतैः परागपीतैः।
भ्रमरी मुखरी कृतैरनन्तैः, व्यंजनैत्वां जगदंब वीजयामि॥

नृत्यं समर्पण : नृत्ममय वंदना :-
भ्रमरविलुलित लोलकुन्तलाली, विगलतिमाल्य विकीर्ण रंगभूमि।

इयमति रुचिरा नटीनटन्ती,
तव हृदये मुदमातनोतु मातः॥
रुचिर कुच तटीनां नाद्यकाले नयीनां,

प्रतिगृहमथ ते च प्रत्यहं प्रादुरासीत्।
धिमिकि धिमिकि धिद्धि धिद्धि धिद्धीति
धिद्धि, थिमिकि थिमिकि तत्तत् थैपी थैपीति शब्दः
डमरू डिण्डिम जर्झर झल्लरी, मृदुरवार्द्र घटाद्र घटादय।
झटिति झांकृत झांकृत झांकृतैः, मह्दयं हृदयं सुख यन्तु ते
तत्पश्चात ताम्रपात्र में दधि, लवण, सर्षण दूर्वा, अक्षत रखकर देवी पर दृष्टिदोष का उत्तारन करें :
दृष्टया प्रदृष्टया खलुदृष्टदोषान्, संहर्तुमारात्मप्रथित प्रकाशः।
जनो भवेदिन्द्रपदाय, यौग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षिदोषम्॥
पात्र एक पृथक जगह रखकर निम्न स्तुति करें :-

स्तुति-
तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादयः।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्तुमीश्वरः॥
प्रदक्षिणा- अपनी जगह ही खड़े होकर प्रदक्षिणा करें :
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्व मेंधादिफलं ददाति।
तां सर्व पापं क्षय हेतु-भृताम्, प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥
(प्रदक्षिणा समर्पयामि)
प्रणाम समर्पण :
रक्तोत्पला रक्ततल प्रभाभ्याम्, ध्वजोर्ध्व रेखा कुलिशांकिताभ्याम् ।

अशेष वृन्दारक वन्दिताभ्याम्, नमोभवानी पदपंकजाभ्याम्॥

पुष्पांजलि समर्पण :
हाथ में सुगंधित पुष्प लें :
चरण नलिन युग्मं पंकजैपूजयित्वा, कनककमल मालां
कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ।

शिरसि विनिहितोऽयं रत्न- पुष्पांजलिस्ते, हृदयकमले मध्ये देवि हर्ष
तनोतु॥
(पुष्पांजलिं समर्पयामि)

भवन समर्पण :
अथ मणिमयमंचकाभिरामें, कनकमय वितान राजमाने।
प्रसरदगरु धूप धूपितेऽस्मिन् भगवति भवनेअस्तु ते निवासः॥

पर्यंक समर्पण :
तवदेविसरोजचिह्नयोः पदयोर्निर्जित पद्मरागयोः।
अति रक्त तरैरलक्तकैः कुनरुक्तां रचयामि रक्ताम्॥

गण्डूष समर्पण :
अथमातरुशीरवासितं निजताम्बूल रसेन रंजितम्।
तपनीय मये हि पद्टके, मुख गण्डूष जलं विधीयताम
(मुख गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि)

क्षमा प्रार्थना :-
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा

स्वीकृत्यैना सपदि सकलान् मेंऽपराधन क्षमस्व।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेंतु सद्यः
सानन्दं में हृदय पटले तेऽस्तु नित्यं निवासः॥

ओम सुशांतिर्भवतु
सायंकालीन ॥ शयन प्रार्थना ॥

क्षणमथ जगदम्ब जगदम्ब मंचकेऽस्मिन्, मृंदुत्तर तूलिकया विराजमाने।
अति रहसि मुदा शिवेन सार्द्धम, सुख शयनं कुरु मां हृदिस्मरन्ती॥

ध्यानं-
मुक्ताकुन्देन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटंक युक्ताम्।
अक्षस्रक्पुष्पहस्तामभयवरकरां चन्द्र चूड़ां त्रिनेत्राम।
नानालंकारयुक्तां सुरमुकुटमणि द्योतित स्वर्ण पीठाम्।
सानन्दांसुप्रसन्नां त्रिभुवन जननीं चेतसा चिन्तयामि॥
(प्रणाम करें- पट्ट वस्त्र से आच्छादित करें)

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

बोध प्रश्न

1. राजोपचार पूजन में आसन के उपरांत करवाया जाता है।

    1. तर्पण   2. स्नान

    3. पुष्पांजलि   4. आरती

2. राजोपचार पूजन में स्नान के उपरांत होता है।

    1. पयस्नान   2. वस्त्र

    3. चंदन   4. दीपक

3. राजोपचार पूजन में सबसे अंत में करवाया जाता है।

    1. करोवर्तन   2. दीपक

    3. प्रदक्षिणा   4. ताम्बूल

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1   राजोपचार पूजन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2   राजोपचार पूजन का क्रम लिखें।

प्रश्न - 3   राजोपचार पूजन में करोतवर्तन का वैदिक् मंत्र लिखें।

इकाई- 20
षोडशोपचार, राजोपचार, संकल्प, विनियोग, अंगपूजन, आवरणपूजन एवं अर्चन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में षोडशोपचार, राजोपचार, संकल्प, विनियोग, अंगपूजन, आवरणपूजन एवं अर्चन पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से षोडशोपचार, राजोपचार, संकल्प, विनियोग, अंगपूजन, आवरणपूजन एवं अर्चन का ज्ञान प्राप्त होगा।

षोडशोपचार

षोडशोपचार जन्माष्टमी पूजा और मंत्र

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन षोडशोपचार के 16 चरणों के मंत्र इस प्रकार हैं।

ध्यान

सबसे पहले भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति का ध्यान करते हुए इस मंत्र का जाप करें...

ॐ तमद्भुतं बालकम् म्बुजेक्षणम्, चतुर्भुज शंख गदाद्युधायुदम्। श्री वत्स लक्ष्मम् गल शोभि कौस्तुभं, पीताम्बरम् सान्द्र पयोद सौभंग। महार्हवैढूर्य किरीटकुंडल त्विषा परिष्वक्त सहस्रकुंडलम्। उद्धमकांचनगदा कङ्गणादिभिर् विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत। ध्यायेत्

चतुर्भुजं कृष्णं,शंखचक्रगदाधरम्। पीताम्बरधरं देवं माला कौस्तुभभूषितम्। ॐ श्री कृष्णाय नम:। ध्यानात् ध्यानम् समर्पयामि।

आह्वान

इसके बाद हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण का इस मंत्र से आह्वान करें...

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स-भूमिं विश्वतो वृत्वा अत्यतिष्ठद्यशाङ्गुलम्। आगच्छ श्री कृष्ण देवः स्थाने-चात्र सिथरो भव। ॐ श्री क्लीं कृष्णाय नम:। बंधु-बांधव सहित श्री बालकृष्णम् आवाहयामि।

आसन

अब श्रीकृष्ण को आसन देते समय इस मंत्र का जाप करें...

ॐ विचित्र रत्न-खचितं दिव्या-स्तरण-सन्युक्तम्। स्वर्ण-सिन्हासन चारू गृहिश्व भगवन् कृष्ण पूजितः। ॐ श्री कृष्णाय नम:। आसनम् समर्पयामि।

पद्य

आसन देने के बाद भगवान् कृष्ण के चरण धोने के लिए, उन्हें पंचपात्र से जल अर्पित करते हुए, इस मंत्र का पाठ करें...

एतावानस्य महिमा अतो ज्यायागंश्र्च पुरुष:।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

अच्युतानन्द गोविंद प्रणतार्ति विनाशन।

पाहि मां पुण्डरीकाक्ष प्रसीद पुरुषोत्तम्।

ॐ श्री कृष्णाय नम:। पादोयो पाद्यम् समर्पयामि।

अर्घ्य

इस मंत्र का जाप करते हुए श्रीकृष्ण को अर्घ्य दें...

ॐ पालनकर्ता नमस्ते-स्तु गृहाण करुणाकरः।

अर्घ्य च फ़लं संयुक्तं गन्धमाल्या-क्षतैयुतम्।

ॐ श्री कृष्णाय नम:। अर्घ्यम् समर्पयामि।

आचमन

इसके बाद आचमन के लिए श्रीकृष्ण को जल अर्पित करते हुए इस मंत्र का जाप करें...

तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पुरुष:। स जातो अत्यरिच्यत पश्र्चाद्भूमिनथो पुर:। नम: सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञान रूपिणे। गृहाणाचमनं कृष्ण सर्व लोकैक नायक। ॐ श्री कृष्णाय नम:। आचमनीयं समर्पयामि।

स्नान

भगवान् कृष्ण की मूर्ति को किसी कटोरी या किसी अन्य पात्र में रखकर स्नान करें। सबसे पहले पानी से स्नान करें, उसके बाद दूध, दही, मक्खन, घी और शहद से स्नान करें और अंत में एक बार फिर साफ पानी से स्नान करें। एक साथ मंत्र का जाप करें...

गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा। सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्रताम्। ॐ श्री कृष्णाय नम:। स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र समर्पण

भगवान् की मूर्ति को एक साफ और सूखे कपड़े से पोंछकर नए कपड़े पहनाएं, फिर उन्हें पालने में रख दें और इस मंत्र का जाप करें...

शीत-वातोष्ण-सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहा-लंकरणं वस्त्रमतः

शान्ति प्रयच्छ मे।

ॐ श्री कृष्णाय नम:। वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत

इस मंत्र का जप करते हुए भगवान् कृष्ण को यज्ञोपवीत अर्पित करें...

नव-भिस्तन्तु-भिर्यक्तं त्रिगुणं देवता मयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेंश्वरः।

ॐ श्री कृष्णाय नम:। यज्ञोपवीतम् समर्पयामि।

चंदन

श्रीकृष्ण को चंदन चढ़ाते समय इस मंत्र का जाप करें...

ॐ श्रीखण्ड-चन्दनं दिव्यं गंधाढ़्यं सुमनोहरम्।

विलेपन श्री कृष्ण चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्। ॐ श्री कृष्णाय नम:।

चंदनम् समर्पयामि।

गंध

इस मंत्र का जाप करते समय श्रीकृष्ण, वनस्पति रसोदभुतो गंधह्यो गन्ध उत्तमः को धूप, अगरबत्ती दिखाएं। वनस्पतिरसोदभूतो गन्धाढ़्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोदयं प्रतिगृहयन्ताम्। ॐ श्री कृष्णाय नम:। गंधम् समर्पयामि।

दीपक

फिर श्रीकृष्ण की मूर्ति की समझ से घी का दीपक जलाएं और इस मंत्र का जाप करें...

साज्यं त्रिवर्ति सम्युक्तं वह्निना योजितुम् मया। गृहाण मंगल

दीपं,त्रैलोक्य तिमिरापहम्। भक्तया दीपं प्रयश्चामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां नरकात् घोरात् दीपं ज्योतिर्नमोस्तुते। ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहू राजन्य: कृत:। उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत। ॐ श्री कृष्णाय नम:। दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य

श्रीकृष्ण को भोग लगाएं और इस मंत्र का जाप करें...

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च, आहारो भक्ष्य- भोज्यं च नैवैद्यं प्रति- गृह्रताम। ॐ श्री कृष्णाय नम:। नैवद्यं समर्पयामि।

तांबूल

अब पान पर लौंग-इलायची, सुपारी और कुछ मिठाई डालकर एक तांबूल बनाकर श्रीकृष्ण को अर्पित करें, साथ ही इस मंत्र का जाप करें...

ॐ पूंगीफ़लं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्। एला-चूर्णादि संयुक्तं ताम्बुलं प्रतिगृह्रताम। ॐ श्री कृष्णाय नम:। ताम्बुलं समर्पयामि।

दक्षिणा

अब अपनी क्षमता के अनुसार दक्षिणा या प्रसाद चढ़ाते समय इस मंत्र का जाप करें...

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजविभावसो:।

अनन्त पुण्य फलदम् अथः शान्तिं प्रयच्छ मे।

ॐ श्री कृष्णाय नम:। दक्षिणां समर्पयामि।

आरती

षोडशोपचार का अंतिम चरण आरती है। इसके लिए घी के दीपक से

बाल कृष्ण की आरती उतारें। साथ ही अपनी पसंदीदा कृष्ण आरती भी गाएं

राजोपचार

सौंदर्यलहरी के प्रणेता आद्य श्री शंकराचार्य द्वारा निर्दिष्ट

केवल दीक्षित साधकों के लिए
आचमनीयम्-
आचमनीय जल प्रदान करें-
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गांगेन मत्कल्पितं।
साष्टागं प्रणिपातमंब, कमले दृष्टया कृतार्थी कुरु॥

पयस्नानम्-
निम्न मंत्र से गौदुग्ध से स्नान कराएँ-
स्व धेनुजातं बलवीर्य वर्धनं, दिव्यामृतात्यन्तर सप्रदं सितम्।
श्री चंडिके दुग्ध समुद्र संभवे, गृहाण दुग्धं। मनसा मयाऽर्पितम्॥
(दुग्ध स्नानं समर्पयामि)

दधिस्नानं-
निम्न मंत्र से दही से स्नान कराएँ -
क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च, श्री चन्द्रकांतिसदृशं सुशोभनम्।
श्री चण्डिके शुंभनिशुंभनाशिनि, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं दधि।
(दधि स्नानं समर्पयामि।)

घृतस्नानं-
निम्न मंत्र बोलकर घृत से स्नान कराएँ-
श्री क्षीरजोद् भूतमिदं मनोज्ञं प्रदीप्तवह्नि द्युति पावितं च।

श्री चण्डिके दैत्यविनाश दक्षे, हैयंगवीनं परिगृह्यतां च॥

मधुस्नानं-
निम्न मंत्र से शहद से स्नान कराएँ -
माधुर्यमिश्रं मधुमक्षिकागणै, वृंक्षालिरम्ये मधुकानने चित्तम्।
श्री चंडिके शंकर प्राणवल्लभे, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं मधु॥
(मधु स्नानं समर्पयामि)

शर्करा स्नानं-
निम्न मंत्र से शक्कर से स्नान कराएँ-
पूर्णेक्षुकांभोधि समुद्भवामिमां माणिक्य मुक्ता फलदाममंजुलाम्।
श्री चण्डिके चंड विनाशकारिणि स्नानार्थ मंगीकुरु शर्करां शुभाम्॥
(शर्करा स्नानं समर्पयामि)

सुगंधितद्रव्य स्नानम्-
निम्न मंत्र से सुगंधि इत्र-सुगंधित तेल अर्पित करें-
एतच्चम्पक तैलमम्ब विविधैः पुष्पैर्मुहुर्वासितम्।
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृंगैर्भ्रमद्भिर्वृतम्।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरमितो हस्तैर्धृतं ते मया
केशेषु भ्रमर-प्रभेषु-सकलेष्वंगेषु चालिप्यते॥
(सुगंधि द्रव्यं समर्पणयामि)

उद्वर्तनम्-
गंध कुंकुमादि से उद्वर्तन -
मातः ! कुंकुम पंक निर्मित मिदं देहे तवोद्वर्तनम्।

भक्त्याऽहं कलयामि हेम रजसा सम्मिश्रितं केसरैः।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकोदञ्चितैः,
स्नानं ते नव रत्न कुम्भ-सहितैः संवासितोष्णोदकै॥
(उद्वर्तनं समर्पयामि)

पञ्चामृत स्नानं-
पञ्चामृत से स्नान कराएँ-
दधि दुग्ध घृतै स माक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः।
स्नपयामि तवाहमादरात् जननि ! त्वां पुनरुष्ण वारिभिः॥
(पंचामृत स्नानं समर्पयामि)

तीर्थजल-
तीर्थजल अथवा शुद्ध जल (को ही तीर्थ जल सद्दश्य मानकर उस) से स्नान कराएँ-
एलोशीर-सु-वासितैः सकुसुमैर्गंगादि तीर्थोदकैः,
माणिक्यामल मौक्तिकामृत युतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः।
मंत्रान् वैदिक तांत्रिकान् परिपठन् सानंदमत्यादरात्
परिकल्पयामि जननि! स्नेहात् त्वमंडी कुरु॥
(स्नानं समर्पयामि)
श्री महालक्ष्माद्यावाहित देवताभ्यो नमः।
मूलमंत्र द्वारा पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन करें। पश्चात् यथा शक्ति, श्री सूक्त, देवी सूक्ति आदि से अभिषेक करें।

शुद्धोदक स्नानम्-
शुद्ध जल से स्नान कराएँ-
उद्गंधैरगरुद्भवैः सुरभिणा कस्तूरिका वारिणा,

स्फूर्जत्सौरभ यक्ष कर्दम जलैः काश्मीर नीलैरपि
पुष्पांभोभिरशेष तीर्थ सलिलैः कर्पूरवासोभरैः।
परिकल्पयामि कमले भक्तया तदंगीकुरु॥
(शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि)

वस्त्र -
वस्त्र-उपवस्त्र समर्पित करें -
बालार्क-द्युति दाडिमीय-कुसुम प्रस्पर्धि सर्वोत्तमम्,
मातस्तवं परिधेहि दिव्य-वसनं भक्त्या मया कल्पितम्।
मुक्ताभिर्ग्रथितं सुकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम्
तप्तस्वर्ण समान वर्णमतुलं प्रावर्णमंगी कुरु॥
(वस्त्रं उपवस्त्रं समर्पयामि)

आचमनीयं-
आचमन हेतु जल दें -
भूपाल दिक्पाल किरीट रत्नमरीचिनी राजित पाद पीठे।
देवैः समाराधितपादपद्मे श्रीचंडिके स्वाचमनं गृहाण॥
(वस्त्र उपवस्त्राते आचमनीयं जलं समर्पणयामि)

पादुका समर्पण-
पादुका अथवा पादुका के रूप में अक्षत समर्पित करें-
नवरत्नमये मयाऽर्पिते, कमनीये तपनीयपादुके।
सविलासमिदं पद द्वयम्, कृपया देवि ! तयोर्निधीयताम्॥
(पादुका समर्पयामि)

केश प्रसाधनम्-
विभिन्न केश प्रसाधन-
बहूभिरगुरु धूपैः सादरं धूपयित्वा,
भगवति! तवकेशान्ककंतैर्मार्जयित्वा।
सुरभिभिर विन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा,
झटिति कनक सूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि॥
(केश प्रसाधन समर्पयामि)

कज्जलं समर्पणम् -
निम्न मंत्र से श्री देवी को काजल आंजे-चाम्पेय
कर्पूरक चंदनादिकै, र्नानाविधै गंध चयैः सुवासितम्।
चैत्रांजनार्थाय हरिन्मणिप्रभं
श्री चंडिके स्वीकुरु कज्जलं शुभम्॥
(कज्जलं समर्पयामि)

गंध समर्पण -
सुगंधित चन्दन अर्पित करें -
प्रत्यंगं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्छनं कुर्वे
केशकलाप मायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम्।
काश्मीरैरगरु द्रवैर्मलयजैः संघर्ष्य संपादितं,
भक्त त्राणपरे प्रभोश्च गृहिणि श्री चंदनं गृह्याताम्।
(चंदनं विलेपयामि)

तिलक समर्पण-
निम्न मंत्र से तिलक अर्पित करें -

मातः भालतले तवाति विमले काश्मीर कस्तूरिका,
कर्पूरागरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ् रागं ततः।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दम रसं सिक्ता च पुष्प द्रवम्,
पादौ चंदन लेपनादिभिरहं सम्पूजयामि क्रमात्॥
(तिलकं समर्पयामि)

अक्षतम् -
कुंकुमयुक्त अक्षत अर्पित करें -
विभिन्न आभूषण अर्पित करें :-
रत्नाक्षतैस्त्वांपरि पूजायामि, मुक्ता फलैर्वा रुचिरार विन्दैः ।
अखण्डितैर्देवि यवादिभिर्वा काश्मीर पंकांकित तण्डुलैर्वा॥
(कुंकुमाक्त अक्षतान् समर्पयामि)

आभूषणं समर्पण -
विभिन्न आभूषण अर्पित करें -
मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरां विन्यस्यकाञ्ची कटौ,
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्र मालां गले।
केयूराणि भुजेषु रत्न वलय श्रेणीं करेषु क्रमात्,
ताटंके तव कर्णयो र्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम्॥
धम्मिले तव देवि हेमकु सुमान्याधाय भाल स्थले,
मुक्ता राजि विराजमान तिलकं नासापुटे मौक्तिकम्॥
मातः मौक्तिक जालिकां च कुचयोः सर्वांगुलीषूर्मिकाः,
कट्यां काञ्चन किंकिंणी र्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ॥
(आभूषणं समर्पयामि)

नानापरिमल द्रव्यम्-

अबीर, गुलाल, हल्दी, मेंहँदी आदि अर्पित करें -

जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोप युतं पटवासकम्।
सुरभि गंधमिदं च चतुः समम्, सपदि सर्वमिद प्रतिगृह्यताम्।
(नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि)

सिंदूरं -

निम्न मंत्र से ही मिश्रित सिंदूर विलेपित करें -

सीमन्ते ते भगवति मया सादरं यस्तमेंतत्,

सिन्दूरं में हृदय कमले हर्ष वर्ष तनोतु।
बालादित्य द्युतिरिव सदालोहिता यस्य कान्तिः,
अन्तर्ध्वान्तं हरति सकलं चेतसा चिन्तयैव॥
(सिंदूर समर्पयामि)

पुष्पं समर्पण-

नाना सुगंधि पुष्प समर्पित करें -

मंदारकुन्द करवीर लवंगपुष्पैः, त्वांदेवि सन्ततमहं परिपूजयामि

जाती जपा वकुल चम्पक केतकादि, नाना विधानि कुसुमानि चतेऽर्पयामि।

मालती वकुलहेम पुष्पिका, कोविदार करवीरकैतकैः।

कर्णिकार गिरि कर्णिकादिभिः पूजयामि जगदंब ते वपुः॥
परिजात-शतपत्र पाटलै, मल्लिका वकुल चम्पकादिभिः।
अम्बुजैः सु कमलैश्च सादरम्, पूजयामि जगदम्ब ते वपुः॥
(नाना सुगंधि पुष्पं समर्पयामि)

पुष्प माला-
पुष्पमाला अर्पित करें -
पुष्पौ द्यैर्द्योतयन्तैः सततपरिचलत्कान्ति कल्लोलजालैः।
कुर्वाणा मज्जदन्तःकरण विमलतां शोभितेव त्रिवेणी॥
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणि र्निर्मिता दीप्यमानै र्नित्यं।
हारत्रयीत्वं भगवति कमले गृह्यतां कंठमध्ये॥
(पुष्प मालां समर्पयामि)

अंग पूजा
गंध, अक्षत व पुष्प लेकर अंग पूजन करें ।
() ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि।
() ह्रीं मंगलायै नमः गुल्फौ पूजयामि।
() ह्रीं भगवत्यै नमः जंघै पूजयामि।
() ह्रीं कौमायै नमः जानुनी पूजयामि।
() ह्रीं वागीश्वर्यै नमः उरौ पूजयामि।
() ह्रीं वरदायै नमः कटीम् पूजयामि।
() ह्रीं पद्माकरवासिन्यै नमः स्तनौ पूजयामि।
() ह्रीं महिषाद्दिन्यै नमः कंठं पूजयामि।
() ह्रीं उमासुतायै नमः स्कंधौ पूजयामि।
() ह्रीं इण्द्रायै नमः भुजौ पूजयामि।
() ह्रीं गौर्ये नमः हस्तौ पूजयामि।
() ह्रीं मौहवत्यै नमः मुखं पूजयामि।
() ह्रीं शिवायै नमः कर्णो पूजयामि।
() ह्रीं अन्नपूर्णायै नमः नेत्रे पूजयामि।
() ह्रीं कमलायै नमः ललाटं पूजयामि।
() ह्रीं महालक्ष्मै नमः सर्वांगं पूजयामि।

अथ आवरण पूजा

वांछित जानकारी :-

(अपनी कुल परंपरा अनुसार सात्विक, तामसिक, राजसिक नव आवरण पूजन करें)।

नव आवरण पूजा में पाँच क्रम एक साथ होते हैं। वे निम्न हैं -:

() आवाहन व ध्यान

() पूजन

() नमस्कार

() तर्पण

() स्वाहाकार

अतः प्रत्येक आवरण में ध्यान बोलने के पश्चात् नावावरण पूजन क्रम में प्रत्येक देवता के नाम के पश्चात् "ध्यायामि, पूजयामि, नमः, तर्पयामि स्वाहा"।

जैसे कि प्रथम आवरण में उर्ध्वाम्नाय परंपरा में निम्न प्रकार से उच्चारित करेंगे :- "ॐ महादेव्यम्बा: श्रीमयीं पादुकाम पूजयामि तर्पयामि नमः स्वाहा।"

इसी प्रकार प्रत्येक आवरण की पूजन समाप्ति पर उस आवरण का नाम बोलकर निम्न प्रकार से बोलेंगेः-

" एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गायै सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।"

तामसी पूजा में तर्पण- सुरा से किया जाता है।

विशेष पूजा में- योगिनी पात्र, वीरपात्र, शक्तिपात्र, गुरुपात्र, भोगपात्र, बलिपात्र की अलग-अलग स्थापना की जाती है।

श्रीयंत्र नवारण पूजन क्रम में बिंदु, त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल, चतुस्त्र, भूपूर इत्यादि के क्रम में भी आम्नायों के अंतर्गत पूजन भेद हैं।

अतः साधक अपनी कुल परंपरा व गुरु निर्देशों का पालन करें।

नव आवरण पूजन यदि समयाभाव अथवा अन्य कारण से न कर पाएँ तो सामान्य अभिषेक किया जा सकता है। यदि अभिषेक भी न कर पाएँ तो प्रणाम कर राजोपचार पूजन क्रम में आगे का पूजन शुरू करें।

हरिद्रा समर्पण :- हरिद्रा अर्पित करें :- हरिद्रुमोत्थामति पीतवर्णां
सुवासितां चंदन पातरजातैः ।
अनन्यभावेन समर्पितांते मार्तहरिद्रामुररी कुरुष्व ॥
हरिद्राचूर्णम् समर्पयामि

धूपम् :- दशांगधूप जलाकर धुआँ आघ्रणित** करें:-

लाक्षा सम्मिलितैः सिताभ्रसहितैः, श्रीवास सम्मिश्रितै, कर्पूरा कलितैः सितामधु, युतैर्गो सर्पिषाऽऽ लोडितैः॥ श्रीखण्डागरुगुग्गुल प्रभृतिर्नाना विधैवेस्तुभिः।

धूपं ते परिकल्पयामि, जननि स्नेहात् त्वमंगी कुरु॥

(धूपमं आध्रापयामि)

नीराजनं दर्शनम् :-
रत्नालंकृतहेमपात्र निहितैर्गोसर्पिषाऽऽ लोडितैः
दीपै र्दीर्धतरान्धकार हतिभिःर्बालार्क कोटिप्रभैः ॥
आताम्र ज्वलदुज्जवल प्रविलसद् रत्नप्रदीपैस्तथा ।
मातः त्वामहमादरादनु-दिनं नीरांजयाम्युच्चकैः ॥
(नीराजनं समर्पयामि)

नैवेद्य निवेदन :
चतुरस्र बनाएँ। उस पर नैवेद्य पात्र रखें। 'ह्रीं नमः' से प्रोक्षण करें। मूल मंत्र से (दाहिने हाथ के पृष्ठ पर बायाँ हाथ रखकर) नैवेद्य को आच्छादित करें, वायु बीज 'यं' सोलह बार कर अग्नि बीज 'रं' सोलह बार जपें, अमृतीकरण हेतु पश्चात् बाएँ हाथ को अधोमुख करें। उसके पृष्ठ पर दक्षिण हाथ रख नैवेद्य की ओर हाथ रखकर अमृत बीज 'वं' का सोलह बार जाप कर नैवेद्य के अमृतमय होने की भावना करें। धेनुमुद्रा दिखावें, आठ बार मूल मंत्र बोलकर गंध पुष्प चढ़ावें, बाएँ हाथ के अंगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करें। दाहिने हाथ में जल पात्र लेवें। निम्न मंत्र बोलें-

चतुर्विधानं सघृत सुवर्णपात्रे मया देविसमर्पितं तत्।
संवीज्यमाना मरवृन्दकैस्तवं जुषस्व मातर्दय या ऽवलोकम ॥
श्री मन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः नैवेद्यं सर्मपयामि
(यह मंत्र बोलकर देवी के दक्षिण भाग में जल डालें।)

पश्चात बाएँ हाथ की अनामिका मूल और अंगुष्ठ से नैवेद्य मुद्रा दिखाकर, पात्र में पुष्प तुलसी मंजरी छोड़ें।

॥ भगवति ! निवेदितानी हवींषिं जुषाण ॥

ग्रासमुद्रा दिखावें । बाएँ हाथ को पद्माकार करें। साथ ही दाहिने हाथ से निम्न मुदा में दिखाएँ :-
ह्रीं प्राणाय स्वाहाः कनिष्ठिका
(अनामिका व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं अपानाय स्वाहाः तर्जनी
(मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं व्यानाय स्वाहाः तर्जनी
(अनामिका, मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं उदानाय स्वाहाः अनामिका
(मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से)
ह्रीं समानाय स्वाहाः सर्वांगुलिभिः
इसके पश्चात् आचमनी से जल लेवें।

प्रार्थनाः- निम्न प्रार्थना बोलें :-
नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्ति करं परम् ।
अखंडानंद सम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ॥
श्री मन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः
जलं समर्पयामि अन्तःपट करें।
(पुनः आचमन हेतु जल छोड़ें।)
ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्ठैः समन्तात् सिंजद्वाल, व्यंजन पिकरैर्वीज्यमाना सखीभिः

नर्मक्रीड़ा प्रहसन परान् पंक्ति भोक्तृन् हसन्ती,
भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान देव देवी॥1॥ शाली भक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं, पेयं चोष्यं, सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्याम्॥
आज्यं प्राज्यं सुभोज्यं नयन रुचिकरं राजिकैलामरिचैः, स्वादीयं शाकराजी परिकर ममृताहारजोषं जुषस्व ।
सात बार मूल मंत्र जपें, पुनः जल छोड़ें
नीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो मध्ये पानीयं समर्पयामि।

प्रार्थना : अब प्रार्थना करें :-
सापूप सूप दधिदुग्धसिता-घृतानि, सुस्वादु भक्ष्य परमान्न पुरः सराणि ।
शाकोल्लसन्मरिच जीरक वाल्लिकानि भक्ष्याणि भक्ष्य जगदम्ब मयाऽर्पितानि

दुग्धं निवेदनं- (केशर, सूखे मेंवे व इलायचीयुक्त दुग्ध अर्पित करें।)
क्षीर मेंतदिदमुत्तमो, त्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुत्तमम् मधु ।
मातरेतदमृतोपमं पयः, सम्भ्रमेंण परिपीतयां मुहुः ॥
(अमृतपमं पयः समर्पयामि)
निम्न मंत्र बोलकर आचमन दें :
गंगोत्तरीवेग समुद्भवेन सुशीतलेनाति मनोहरेण ।
त्वं पद्मपत्राक्षि मयाऽर्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व ॥
(आचमनीय समर्पयामि)

मुख प्रक्षालनं-
उष्णोदकैः पाणि युगं मुखं च, प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रै।

कर्पूर मिश्रेण स कुंकुमेंन, हस्तौ समुर्द्तय चन्दनेन ॥
मुख प्रक्षालनार्थ, करोद्वर्तनार्थे जलं चंदनं समर्पयामि-
फलानिः ऋतु फल समर्पण :-
जम्वाम्ररम्भाफलसंयुतानि, द्राक्षाफलक्षोद्रसमन्वितानि।
सनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि ॥
कूष्माण्ड कोशातिक संयुतानि, जम्बीर नारिंग समन्वितानि।
स बीजापुराणि स बादराणि, फलानि ते देवि समर्पयामि॥
(ऋतुफलानि समर्पयामि)

तांबूलम् समर्पण :(एला, लवंगयुक्त पान का बीड़ा)
कर्पूरेण युतैर्लवंग- सहिस्तैस्तक्कोल चूर्णान्वितैः,
सुस्वादु क्रमुकैः सगौर खदिरैः सुस्निग्ध जाती फलैः।
मातः कैत कपत्र पाण्डुरुचिभि स्तांबूल वल्ली दलैः,
सानंदं मुख मण्डनार्थमतुलं तांम्बूलमंगीकुरु॥
एलालवंगादि समन्वितानि तक्कोल कर्पूर विमिश्रितानि ।
ताम्बूलं वल्लीदल संयुतानि पूगानि ते देवि समर्पयामि ॥
मुखवासार्थे ताम्बूलम् समर्पयामि ।

दक्षिणा समर्पण :
अथबहुमणिमिश्रैमौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवन कमनीयैः पूजायित्वा च वस्त्रैः।
मिलित विविध मुक्तैर्दिव्य लावण्य युक्तताम् ।
जननि कनकवृष्ठिं दक्षिणां ते समर्पयामि॥
(दक्षिणां समर्पयामि)

आरार्तिकं:
महतिकनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान् डमरू सद्दशय रूपान्
पक्वगोधूमदीपान् ।
बहुघृतमयतेषुन्यस्तदीपान् प्रकृष्ठान्, भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्तिकं ते
॥
सविनयमथ दत्वा जानुयुग्मं धरण्याम्, सपदि शिरसि धृत्वा
पात्रमारार्तिकस्य ।
मुख कमलसमीपे तेऽम्ब सार्थ त्रिवारम् भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः
कठाक्षः॥

प्रदक्षिणा :
पदे पदे या परिपूजेकभ्यः, सद्योऽश्व मेंधादिफलं ददाति ।
तां सर्व पाप क्षय हेतु भूतां, प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥
(प्रदक्षिणा समर्पयामि)
विशेषार्घ्य : विशेष अर्घ्य प्रदान करें :
कलिंगकोशातक संयुतानि जंबीर नारिंग समन्वितानि ।
सुनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि॥
(विशेष अर्घ्यम् समर्पयामि)

छत्रं समर्पण :
मातः कांचनदण्डमण्डितमिदं पूर्णोन्दु बिम्ब प्रभम्,
नानारत्न विशोभि हेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम्।
भास्वन मोक्तिक जालिका परिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतम्,

छत्रं ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम्॥
(छत्रं समर्पयामि।)

चामरं समर्पण :
शरदिन्दु मरीचि गौरवर्णैः, मणिमुक्ता विलसत् सुवर्ण दण्डैः।
जगदंब विचित्र चामरैरत्वाम् अहमानन्द भरेण वीजयामि॥
(चामरं समर्पयामि)

दर्पणं समर्पयामि :
मार्तण्डमण्डल निभो जगदंब योऽयम्,
भक्त्या मयामणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते।
पूर्णेन्दु बिम्ब रुचिरं वदनं स्वकीयम्
अस्मिन् विलोकय विलोल विलोचने त्वम्॥
(दर्पण समर्पयामि)

अश्व समर्पण :
प्रियगतिरति तुंगो रत्न कल्याण युक्तः,
कनकमय विभूषः स्निग्ध गंभीर घोषः।
भगवति कलितोय वाहनार्थं मयाते,
तुरंग शतसमेंतो वायु-वेगस्तुरंगः॥

गज समर्पण :
मधुकर वृत्तकुंभ न्यस्त सिन्दुर रेणुः,
कनक कलित घण्टा किंकिणी शोमि कण्ठः।

श्रवण युगल चञ्चच्चामरो मेंघतुल्यो,

जननि तव मुदे स्यान्मत मातंग एषः॥

रथ समर्पण :

द्रुतम तुरगैर्विराजमानम्, मणिमयचक्र चतुष्टयेन युक्तम्।
कनकमयममुं वितानवन्तम्, भगवति तेहि रथं समर्पयामि॥

सैन्य समर्पण :

हयगज रथपति शोभमानम्,
दिशिदिशि दुन्दुभि मेंघनाद युक्तम्।

अभिनव चतुरंग सैन्यमेंतत्,
भगवति भक्ति भरेण तेऽर्पयामि॥

दुर्ग समर्पण :

परिखीकृतसप्तसागरम् बहुसम्पत सहितं मयाम्ब ते विपुलम्।

प्रबलं धरणी तलाभिधम्, दृढ़ दुर्गमिदं निखिलं समर्पयामि॥

व्यंजन समर्पण

शतपत्र युतैः स्वभावशीतैः, अति सौरम्य युतैः परागपीतैः।
भ्रमरी मुखरी कृतैरनन्तैः, व्यंजनैस्वां जगदंब वीजयामि॥

नृत्यं समर्पण : नृत्यमय वंदना :-

भ्रमरविलुलितलोलकुन्तलाली,

विगलतिमाल्य विकीर्ण रंगभूमि।

इयमति रुचिरा नटीनटन्ती,
तव हृदये मुदमातनोतु मातः
रुचिर कुच तटीनां नाद्यकाले नयीनां,
प्रतिगृहमथ ते च प्रत्यहं प्रादुरासीत्।
धिमिकि धिमिकि धिद्धि धिद्धि धिद्धीति धिद्धि,
थिमिकि थिमिकि तत्तत् थैपी थैपीति शब्दः
डमरू डिण्डिम जर्झर झल्लरी, मृदुरवार्द्र घटाद्र घटादय।
झटिति झांकृत झांकृत झांकृतैः, महृदयं हृदयं सुख यन्तु ते
तत्पश्चात ताम्रपात्र में दधि, लवण, सर्षण दूर्वा, अक्षत रखकर देवी पर दृष्टिदोष का उत्तारन करें :
दृष्टया प्रदृष्टया खलुदृष्ट दोषान्, संहर्तुमारात्मप्रथित प्रकाशा॥
जनो भवेदिन्द्रपदाय, यौग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षिदोषम्॥
पात्र एक पृथक जगह रखकर निम्न स्तुति करें :-

स्तुति-
तव देवि गुणानुवर्णने चतुरानो चतुराननादयः।
तदि हैक मुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्तुमीश्वरः॥
प्रदक्षिणा- अपनी जगह ही खड़े होकर प्रदक्षिणा करें :
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्व मेंधादिफलं ददाति।
तां सर्व पापं क्षय हेतु-भृताम्, प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥
(प्रदक्षिणा समर्पयामि)
प्रणाम समर्पण :
रक्तोत्पला रक्ततल प्रभाभ्याम्, ध्वजोर्ध्व रेखा कुलिशांकिताभ्याम्।
अशेष वृन्दारक वन्दिताभ्याम्, नमोभवानी पदपंकजाभ्याम्॥

पुष्पांजलि समर्पण :
हाथ में सुगंधित पुष्प लें :
चरण नलिन युग्मं पंकजैपूजयित्वा,

कनक कमल मालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ।

शिरसि विनिहितोऽयं रत्न-

पुष्पांजलिस्ते, हृदयकमले मध्ये देवि हर्ष तनोतु॥
(पुष्पांजलिं समर्पयामि)

भवन समर्पण :
अथ मणिमय मंचकाभिरामें, कनकमय वितान राजमाने।
प्रसरदगरु धूप धूपितेऽस्मिन् भगवति भवनेसस्तु ते निवासः॥

पर्यंक समर्पण :
तवदेवि सरोज चिह्नयोः पदयोर्निर्जित पद्मरागयोः।
अति रक्त तरैरलक्तकैः कुनरुक्तां रचयामि रक्ताम्॥

गण्डूष समर्पण :
अथमातरुशीरवासितं निजताम्बूल रसेन रंजितम्।
तपनीय मये हि पद्टके, मुख गण्डूष जलं विधीयताम
(मुख गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि)

क्षमा प्रार्थना :-
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा
स्वीकृत्यैना सपदि सकलान् मेंऽपराधन क्षमस्व।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेंतु सद्यः

सानन्दं मे हृदयपटले तेऽस्तु नित्यं निवासः॥

ओम सुशांतिर्भवतु
सायंकालीन ॥ शयन प्रार्थना ॥

क्षणमथ जगदम्ब जगदम्ब मंचकेऽस्मिन्, मृंदुत्तर तूलिकया विराजमाने।
अति रहसि मुदा शिवेन सार्द्धम, सुखशयनं कुरु मां हृदिस्मरन्ती॥

ध्यानं-
मुक्ताकुन्देन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटंक युक्ताम्।
अक्षस्रक् पुष्प हस्तामभय वर करां चन्द्र चूड़ां त्रिनेत्राम।
नानालंकार युक्तां सुर मुकुटमणि द्योतितां स्वर्णपीठाम्।
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन जननीं चेतसा चिन्तयामि॥
(प्रणाम करें- पट्ट वस्त्र से आच्छादित करें)

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

संकल्प

यजमान अक्षत, जल लेकर मंत्र से पूजन का संकल्प ले- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वंतरे अष्टाविंशतितमें कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे .... नगरे / ग्रामें मासे... शुक्ल / कृष्णपक्षे... तिथौ .... वासरे प्रातः / सायंकाले ... गोत्र..... नाम अहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेंश्वरप्रीत्यर्थं ममसम्पूर्ण मनोकामनासिध्यर्थम् आदित्यादि नवग्रह

देवता प्रसाद सिद्ध्यर्तं आदित्यादि नवग्रह पूजनं/ नवग्रह शांति पूजनं करिष्ये ।

विनियोगः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नंदाशक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्र जपे विनियोगः।

भगवान् श्री गणेश अंग पूजा मंत्र

❀ॐ गणेश्वराय नमः - पादौ पूजयामि ।
❀ॐ विघ्नराजाय नमः - जानुनी पूजयामि ।
❀ॐ आखुवाहनाय नमः - ऊरूः पूजयामि ।
❀ॐ हेरम्बाय नमः - कटिं पूजयामि ।
❀ॐ कामरी सूनवे नमः - नाभिं पूजयामि ।
❀ॐ लम्बोदराय नमः - उदरं पूजयामि ।
❀ॐ गौरीसुताय नमः - स्तनौ पूजयामि ।
❀ॐ गणनाथाय नमः - हृदयं पूजयामि ।
❀ॐ स्थूल कण्ठाय नमः - कण्ठं पूजयामि ।
❀ॐ पाश हस्ताय नमः - स्कन्धौ पूजयामि ।
❀ॐ गजवक्त्राय नमः - हस्तान् पूजयामि ।
❀ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः - वक्त्रं पूजयामि ।
❀ॐ विघ्नराजाय नमः - ललाटं पूजयामि ।
❀ॐ सर्वेश्वराय नमः - शिरः पूजयामि ।
❀ॐ गणाधिपतये नमः - सर्वाङ्गाणि पूजयामि ।

<u>महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् - अयि गिरिनन्दिनि</u>

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेंदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते, गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।

<u>संकट मोचन हनुमानाष्टक</u>

बाल समय रवि भक्ष लियो तब।.. लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।.

<u>श्री विन्ध्येश्वरी स्तोत्रम्</u>

निशुम्भ शुम्भ गर्जनी, प्रचण्ड मुण्ड खण्डिनी ।

बनेरणे प्रकाशिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी ॥ त्रिशूल मुण्ड धारिणी..

<u>सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्रम्</u>

क्षृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।

<u>माँ दुर्गा देव्यापराध क्षमा प्रार्थना स्तोत्रं</u>

माँ दुर्गा की पूजा समाप्ति पर करें ये स्तुति, तथा पूजा में हुई त्रुटि के अपराध से मुक्ति पाएँ। आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयम्..

<u>नवग्रहस्तोत्र</u>

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्युतिं । तमोरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ॥

<u>श्री दुर्गा के 108 नाम</u>

सती, साध्वी, भवप्रीता, भवानी, भवमोचनी, आर्या, दुर्गा, जया, आद्य, त्रिनेत्र, शूलधारिणी...

आवरणपूजा

आवरणपूजा की विस्तृत विधि तथा उक्त विधि से पूजन की महिमा

का वर्णन

उपमन्यु कहते हैं-यदुनन्दन! पहले शिवा और शिव के दायें और बायें भागमें क्रमश: गणेश और कार्तिकेय का गन्ध आदि पाँच उपचारोंद्वारा पूजन करे। फिर इन सबके चारों ओर ईशानसे लेकर सद्योजातपर्यन्त पाँच ब्रम्हविभूतियों शक्तिसहित क्रमशः पूजन करे। यह प्रथम आवरणमें किया जानेवाला पूजन है। उसी आवरणमें हृदय आदि छः अंगों तथा शिव और शिवा का अग्निकोणसे लेकर पूर्वदिशापर्यन्त आठ दिशाओंमें क्रमशः पूजन करे। वहीं वामा आदि शक्तियोंके साथ वाम आदि आठ रुद्रोंकी पूर्वादि दिशाओंमें क्रमश: पूजा करे। यह पूजन वैकल्पिक है। यदुनन्दन! यह मैंने तुमसे प्रथम आवरणका वर्णन किया है।

अब प्रेमपूर्वक दूसरे आवरणका वर्णन किया जाता है, श्रद्धापूर्वक सुनो। पूर्व- दिशावाले दलमें अनन्तका और उनके वाम भाग में उनकी शक्तिका पूजन करे। दक्षिणदिशावाले दलमें शक्तिसहित सूक्ष्म- देवकी पूजा करे, पश्चिमदिशा के दल में शक्तिसहित शिवोत्तमका, उत्तरदिशावाले दलमें शक्तियुक्त एकनेत्रका, ईशानकोण वाले दलमें एकरुद्र और उनकी शक्तिका, अग्नि- कोणवाले दलमें त्रिमूर्ति और उनकी शक्तिका, नैऋत्यकोण के दलमें श्रीकण्ठ और उनकी शक्तिका तथा वायव्यकोणवाले दलमें शक्तिसहित शिखण्डीशका पूजन करे। समस्त चक्रवर्तियोंकी भी द्वितीय आवरणमें ही पूजा करनी चाहिये। तृतीय आवरणमें शक्तियोंसहित अष्टमूर्तियोंका पूर्वादि आठों दिशाओंमें

क्रमश: पूजन करे। भव, शर्व, ईशान, रुद्र, पशुपति, उग्र, भीम और महादेव-ये क्रमशः आठ मूर्तियाँ हैं। इसके बाद उसी आवरणमें शक्तियोंसहित महादेव आदि ग्यारह मूर्तियोंकी पूजा करनी चाहिये। महादेव, शिव, रुद्र, शंकर, नीललोहित, ईशान, विजय, भीम, देवदेव, भवोद्धव तथा कपर्दीश (या कपालीश)-ये ग्यारह मूर्तियाँ हैं। इनमेंसे जो प्रथम आठ मूर्तियाँ हैं, उनका अग्निकोणवाले दलसे लेकर पूर्वदिशापर्यन्त आठ दिशाओं में पूजन करना चाहिये। देवदेवको पूर्वदिशाके दलमें स्थापित एवं पूजित करे और ईशानका पुन: अग्निकोणमें स्थापन-पूजन करे।

फिर इन दोनोंके बीचमें भवोद्धभवकी पूजा करे और उन्हींके बाद कपालीश या कपर्दीशका स्थापन-पूजन करना चाहिये। उस तृतीय आवरणमें फिर वृषभराजका पूर्वमें, नन्दीका दक्षिणमें, महाकालका उत्तरमें, शास्ताका अग्निकोणके दलमें, मातृकाओंका दक्षिणदिशाके दलमें, गणेशजीका नैरऋत्यकोणके दल में, कार्तिकेयका पश्चिमदलमें, ज्येष्ठाका वायव्यकोणके दलमें, गौरीका उत्तरदलमें, चण्डका ईशानकोणमें तथा शास्ता एवं नन्दीश्वरके बीचमें मुनीन्द्र वृषभका यजन करे। महाकालके उत्तरभागमें पिंगलका, और मातृकाओंके बीचमें भृंगीश्वरका, मातृकाओं तथा गणेशजीके बीचमें वीरभद्रका, स्कन्द और गणेशजीके बीचमें सरस्वतीदेवीका, ज्येष्ठा और कार्ति- केयके बीचमें शिवचरणोंकी अर्चना -करनेवाली श्रीदेवीका, ज्येष्ठा और गणाम्बा (गौरी)-के बीचमें महामोटीकी पूजा करे। गणाम्बा और चण्डके बीचमें दुर्गादेवीकी पूजा करे। इसी आवरणमें पुनः शिवके अनुचरवर्गकी पूजा

करे। इस अनुचरवर्गमें रुद्रगण, प्रमथगण और भूतगण आते हैं। इन सबके विविध रूप हैं और ये सब- के-सब अपनी शक्तियोंके साथ हैं। इनके बाद एकाग्रचित्त हो शिवाके सखीवर्गका भी ध्यान एवं पूजन करना चाहिये।

इस प्रकार तृतीय आवरणके देवताओंका विस्तारपूर्वक पूजन हो जानेपर उसके बाह्यभागमें चतुर्थ आवरणका चिन्तन एवं पूजन करे। पूर्वदलमें सूर्यका, दक्षिणदलमें चतुर्मुख ब्रह्माका, पश्चिमदलमें रुद्रका और उत्तरदिशाके दलमें भगवान् विष्णुका पूजन करे। इन चारों देवताओंके भी पृथक्- पृथक् आवरण हैं। इनके प्रथम आवरणमें छहों अंगों तथा दीप्ता आदि शक्तियोंकी पूजा करनी चाहिये। दीप्ता, सूक्ष्मा, जया, भद्रा, विभूति, विमला, अमोघा और विद्युता-इनकी क्रमशः पूर्व आदि आठ दिशाओंमें स्थिति है। द्वितीय आवरणमें पूर्वसे लेकर उत्तरतक क्रमश: चार मूर्तियोंकी और उनके बाद उनकी शक्तियोंकी पूजा करे। आदित्य, भास्कर, भानु और रवि-ये चार मूर्तियाँ क्रमशः पूर्वादि चारों दिशाओंमें पूजनीय हैं। तत्पश्चात् अर्क, ब्रह्मा, रुद्र तथा विष्णु- ये चार मूर्तियाँ भी पूर्वादि दिशाओं में पूजनीय हैं। पूर्वदिशामें विस्तरा, दक्षिणदिशामें सुतरा, पश्चिमदिशामें बोधिनी और उत्तरदिशामें आप्यायिनीकी पूजा करे। ईशानकोणमें उषाकी, अग्निकोणमें प्रभाकी, नैर्ऋत्यकोणमें प्राज्ञाकी और वायव्यकोणमें संध्याकी पूजा करे। इस तरह द्वितीय आवरणमें इन सबकी स्थापना करके विधिवत् पूजा करनी चाहिये। तृतीय आवरणमें सोम, मंगल, बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ, विशालबुद्धि बृहस्पति, तेजोनिधि शुक्र, शनैश्चर तथा धूम्रवर्णवाले

भयंकर राहु-केतुका पूर्वादि दिशाओंमें पूजन करे अथवा द्वितीय आवरणमें द्वादश आदित्योंकी पूजा करनी चाहिये और तृतीय आवरणमें द्वादश राशियोंकी। उसके बाहृय भागमें सात-सात गणोंकी सब ओर पूजा करनी चाहिये। ऋषियों, देवताओं, गन्धर्वों, नागों, अप्सराओं, ग्रामणियों, यक्षों, यातुधानों, सात छन्दोमय अश्वों तथा वालखिल्योंका पूजन करे। इस तरह तृतीय आवरणमें सूर्यदेवका पूजन करनेके पश्चात् तीन आवरणोंसहित ब्रहमाजीका पूजन करे। पूर्वदिशामें हिरण्यगर्भका, दक्षिणमें विराट्का, पश्चिमदिशामें कालका और उत्तरदिशामें पुरुषका पूजन करे। हिरण्यगर्भ नामक जो पहले ब्रहमा हैं, उनकी अंगाकृति कमलके समान है। काल जन्मसे ही अंजनके समान काले हैं और पुरुष स्फटिकमणिके समान निर्मल हैं। त्रिगुण, राजस, तामस तथा सात्त्विक-ये चारों भी पूर्वादि दिशाके क्रमसे प्रथम आवरणमें ही स्थित हैं। द्वितीय आवरणमें पूर्वादि दिशाओंके दलॉमें क्रमश: सनत्कुमार, सनक, सनन्दन और सनातनका पूजन करना चाहिये। तत्पश्चात् तीसरे आवरणमें ग्यारह प्रजापतियोंकी पूजा करे। उनमेंसे प्रथम आठका तो पूर्व आदि आठ दिशाओंमें पूजन करे, फिर शेष तीनका पूर्व आदिके क्रमसे अर्थात् पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिममें स्थापन-पूजन करे। दक्ष, रुचि, भृगु, मरीचि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, कश्यप और वसिष्ठ-ये ग्यारह विख्यात प्रजापति हैं। इनके साथ इनकी पत्नियोंका भी क्रमश: पूजन करना चाहिये। प्रसूति, आकृति, ख्याति, सम्भूति, धृति, स्मृति, क्षमा, संनति, अनसूया, देवमाता अदिति तथा अरुन्धती-ये सभी

ऋषिपत्नियाँ पतिव्रता, सदा शिव- पूजनपरायणा, कान्तिमती और प्रिय-दर्शना (परम सुन्दरी) हैं। अथवा प्रथम आवरणमें चारों वेदोंका पूजन करे, फिर द्वितीय आवरणमें इतिहास-पुराणोंकी अर्चना करे तथा तृतीय आवरणमें धर्मशास्त्र- सहित सम्पूर्ण वैदिक विद्याओं का सब ओर पूजन करना चाहिये। चार वेदोंको पूर्वादि चार दिशाओं में पूजन चाहिये, अन्य ग्रन्थोंको अपनी रुचिके अनुसार आठ या चार भागोंमें बाँटकर सब ओर उनकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार दक्षिणमें तीन आवरणोंसे युक्त ब्रह्माजीकी पूजा करके पश्चिममें आवरणसहित रुद्रका पूजन करे।

ईशान आदि पाँच ब्रह्म और हृदय आदि छः अंगों को रुद्रदेव का प्रथम आवरण कहा गया है। द्वितीय आवरण विद्येश्वरमय है। तृतीय आवरणमें भेद है। अत: उसका वर्णन किया जाता है। उस आवरणमें पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे त्रिगुणादि चार मूर्तियोंकी पूजा करनी चाहिये। पूर्वदिशामें पूर्णरूप शिव नामक महादेव पूजित होते हैं, इनकी 'त्रिगुण' संज्ञा है (क्योंकि ये त्रिगुणात्मक जगत् केआश्रय हैं) । दक्षिणदिशामें 'राजस' पुरुषके नामसे प्रसिद्ध सृष्टिकर्ता ब्रह्माका पूजन किया जाता है, ये 'भव' कहलाते हैं। पश्चिम - दिशामें तामस' पुरुष अग्निकी पूजा की जाती है, इन्हींको संहारकारी हर कहा गया है। उत्तरदिशामें सात्त्विक' पुरुष सुख- दायक विष्णुका पूजन किया जाता है। ये ही विश्वपालक 'मृड' हैं। इस प्रकार पश्चिमभागमें शम्भुके शिवरूपका, जो पचीस तत्त्वोंका साक्षी छब्बीसवाँ तत्व रूप है, पूजन करके उत्तरदिशामें भगवान् विष्णुका पूजन करना चाहिये। इनके प्रथम आवरणमें

वासुदेवको पूर्वमें, अनिरुद्धको दक्षिणमें, प्रद्युम्नको पश्चिममें और संकर्षणको उत्तरमें स्थापित करके इनकी पूजा करनी चाहिये। यह प्रथम आवरण बताया गया। अब द्वितीय शुभ आवरण बताया जाता है। मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, तीनोंमेंसे एक राम, आप श्रीकृष्ण और हयग्रीव-ये द्वितीय आवरणमें पूजित होते हैं। तृतीय आवरणमें पूर्वभागमें चक्रकी पूजा करे, दक्षिणभागमें कहीं भी प्रतिहत न होनेवाले नारायणास्त्रका यजन करे, पश्चिममें पांचजन्यका और उत्तरमें शाङ्क्धनुषकी पूजा करे। इस प्रकार तीन आवरणोंसि युक्त साक्षात् विश्व नामक परम हरि महाविष्णुकी, जो सदा सर्वत्र व्यापक हैं, मूर्तिमें भावना करके पूजा करे। इस तरह विष्णुके चतुर्व्यूहक्रमसे चार मूर्तियों का पूजन करके क्रमशः उनकी चार शक्तियोंका पूजन करे।

प्रभा का अग्निकोणमें, सरस्वती का नैर्ऋत्यकोणमें, गणाम्बिकाका वायव्यकोणमें तथा लक्ष्मीका ईशानकोणमें पूजन करे। इसी प्रकार भानु आदि मूर्तियों और उनकी शक्तियोंका पूजन करके उसी आवरणमें लोकेश्वरोंकी पूजा करे। उनके नाम इस प्रकार हैं-इन्द्र, अग्नि, यम, नित्ऋति, वरुण, वायु, सोम, कुबेर तथा ईशान। इस प्रकार चौथे आवरणकी विधिपूर्वक पूजा सम्पन्न करके बाह्यभागमें महेश्वरके आयुधंकी अर्चना करे। ईशानकोणमें तेजस्वी त्रिशूलकी, पूर्वदिशामें वज्रकी, अग्निकोणमें परशुकी, दक्षिणमें बाणकी, नैऋत्यकोणमें खड्गकी, पश्चिममें पाशकी, वायव्यकोणमें अंकुशकी और उत्तरदिशामें पिनाककी पूजा करे। तत्पश्चात् पश्चिमाभिमुख रौद्ररूपधारी क्षेत्रपालका अर्चन करे। इस तरह पंचम आवरणकी पूजाका सम्पादन करके समस्त

आवरण देवताओंके बाह्यभागमें अथवा पाँचवें आवरणमें ही मातृकाओंसहित महावृषभ नन्दिकेश्वर का पूर्वदिशामें पूजन करे। तदनन्तर समस्त देवयोनियोंकी चारों ओर अर्चना करे। इसके सिवा जो आकाशमें विचरनेवाले ऋषि, सिद्ध, दैत्य, यक्ष, राक्षस, अनन्त आदि नागराज, उन-उन नागेश्वरोंके कुलमें उत्पन्न हुए अन्य नाग, डाकिनी, भूत, वेताल, प्रेत और भैरवोंके नायक, नाना योनियोमें उत्पन्न हुए अन्य पातालवासी जीव, नदी, समुद्र, पर्वत, वन, सरोवर, पशु, पक्षी, वृक्ष, कीट आदि क्षुद्र योनिके जीव, मनुष्य, नाना प्रकारके आकारवाले मृग, क्षुद्र जन्तु, ब्रह्माण्डके भीतरके लोक, कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्डके बाहरके असंख्य भुवन और उनके अधीश्वर तथा दसों दिशाओंमें स्थित ब्रह्माण्डके आधारभूत रुद्र हैं और गुणजनित, मायाजनित, शक्तिजनित तथा उससे भी परे जो कुछ भी शब्दवाच्य जड- चेतनात्मक प्रपंच है, उन सबको शिवा और शिवके पाश्श्वभागमें स्थित जानकर उनका सामान्यरूपसे यजन करे। वे सब लोग हाथ जोड़कर मन्द मुस्कानयुक्त मुखसे सुशोभित होते हुए प्रेमपूर्वक महादेव और महादेवीका दर्शन कर रहे हैं, ऐसा चिन्तन करना चाहिये। इस तरह आवरण-पूजा सम्पन्न करके विक्षेपकी शान्तिके लिये पुनः देवेश्वर शिवकी अर्चना करनेके पश्चात् पंचाक्षर-मन्त्रका जप करे। तदनन्तर शिव और पार्वतीके सम्मुख उत्तम व्यंजनोंसे युक्त तथा अमृतके समान मधुर, शुद्ध एवं मनोहर महाचरुका नैवेद्य निवेदन करे। यह महाचरु बत्तीस आढक (लगभग तीन मन आठ सेर)-का हो तो उत्तम है और कम- से-कम एक आढक (चार सेर)-का हो तो निम्न श्रेणीका माना

गया है।

अपने वैभवके अनुसार जितना हो सके, महाचरु तैयार करके उसे श्रद्धापूर्वक निवेदित करे। तदनन्तर जल और ताम्बूल-इलायची आदि निवेदन करके आरती उतारकर शेष पूजा समाप्त करे। यागके उपयोगमें आनेवाले द्रव्य, भोजन, वस्त्र आदिको उत्तम श्रेणीका ही तैयार कराकर दे। भक्तिमान् पुरुष वैभव होते हुए धनव्यय करनेमें कंजूसी न करे। जो शठ या कंजूस है और पूजाके प्रति उपेक्षाकी भावना रखता है, वह यदि कृपणतावश कर्मको किसी अंगसे हीन कर दे तो उसके वे काम्य कर्म सफल नहीं होते, ऐसा सत्पुरुषोंका कथन है। इसलिये मनुष्य यदि फलसिद्धिका इच्छुक हो तो उपेक्षाभावको त्यागकर सम्पूर्ण अंगोंके योगसे काम्य कर्मोका सम्पादन करे। इस तरह पूजा समाप्त करके महादेव और महादेवीको प्रणाम करे। फिर भक्तिभावसे मनको एकाग्र करके स्तुतिपाठ करे। स्तुतिके पश्चात् साधक उत्सुकतांपूर्वक कम-से-कम एक सौ आठ बार और सम्भव हो तो एक हजारसे अधिक बार पंचाक्षरी विद्याका जप करे। तत्पश्चात् क्रमशः विद्या और गुरुकी पूजा करके अपने अभ्युदय और श्रद्धाके अनुसार यज्ञमण्डपके सदस्योंका भी पूजन करे। फिर आवरणोंसहित देवेश्वर शिवका विसर्जन करके यज्ञके उपकरणोंसहित वह सारा मण्डल गुरुको अथवा शिवचरणाश्रित भक्तोंको दे दे। अथवा उसे शिवके ही उद्देश्यसे शिवके क्षेत्रमें समर्पित कर दे ।

अथवा देवताका यजन करे। समस्त आवरण-देवताओंका यथोचित रीतिसे पूजन करके सात प्रकारके होमद्रव्योंद्वारा शिवाग्निमें इष्ट- यह तीनों लोकोंमें विख्यात योगेश्वर नामक योग है। इससे बढ़कर कोई योग त्रिभुवनमें कहीं नहीं है। संसारमें कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो इससे साध्य न हो। इस लोकमें मिलनेवाला कोई फल हो या परलोकमें, इसके द्वारा सब सुलभ हैं। यह इसका फल नहीं है, ऐसा कोई नियन्त्रण नहीं किया जा सकता; क्योंकि सम्पूर्ण श्रेयोरूप साध्यका यह श्रेष्ठ साधन है। यह निश्चितरूपसे कहा जा सकता है कि पुरुष जो कुछ फल चाहता है, वह सब चिन्तामणिके समान इससे प्राप्त हो सकता है। तथापि किसी क्षुद्र फलके उद्देश्यसे इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये; क्योंकि किसी महान्से लघु फलकी इच्छा रखनेवाला पुरुष स्वयं लघुतर हो जाता है। महादेवजीके उद्देश्यसे महान् या अल्प जो भी कर्म किया जाय, वह सब सिद्ध होता है। अत: उन्हींके उद्देश्यसे कर्मका प्रयोग करना चाहिये। शत्रु तथा मृत्युपर विजय पाना आदि जो फल दूसरोंसे सिद्ध होनेवाले नहीं हैं, उन्हीं लौकिक या पारलौकिक फलोंके लिये विद्वान् पुरुष इसका प्रयोग करे। महापातकोंमें, महान् रोगसे भय आदिमें तथा दुर्भिक्ष आदिमें यदि शान्ति करनेकी आवश्यकता हो तो इसीसे शान्ति करे। अधिक बढ़-बढ़कर बातें बनानेसे क्या लाभ? इस योगको महेश्वर शिवने शैवोंके लिये बड़ी भारी आपत्तिका निवारण करनेवाला अपना निजी अस्त्र बताया है। अत: इससे बढ़कर यहाँ अपना कोई रक्षक नहीं है, ऐसा समझकर इस कर्मका प्रयोग करनेवाला पुरुष शुभ फलका भागी होता

है। जो प्रतिदिन पवित्र एवं एकाग्रचित्त होकर स्तोत्रमात्रका पाठ करता है, वह भी अभीष्ट प्रयोजनका अष्टमांश फल पा लेता है। जो अर्थका अनुसंधान करते हुए पूर्णिमा, अष्टमी अथवा चतुर्दशीको उपवासपूर्वक स्तोत्रका पाठ करता है, उसे आधा अभीष्ट फल प्राप्त हो जाता है। जो अर्थका अनुसंधान करते हुए लगातार एक मासतक स्तोत्रका पाठ करता है और पूर्णिमा, अष्टमी एवं चतुर्दशीको व्रत रखता है, वह सम्पूर्ण अभीष्ट फलका भागी होता है।

बोध प्रश्न

1. षोडशोपचार पूजन में गंध के पश्चात चढाया जाता है।

    1. पुष्प 2. चंदन

    3. जल 4. वस्त्र

2. राजोपचार पूजन में यज्ञोपवीत के उपरांत चढाया जाता है।

    1. सुगन्धित तेल 2. वस्त्र

    3. पयस्नान 4. दधिस्नान

3. अंग पूजन में पूजा होती है।

    1. सम्पूर्ण अंगों की 2. आसन की

    3. वस्त्र की 4. सामग्रियों की

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 राजोपचार पूजन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 षोडशोपचार पूजन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 3 संकल्प लिखें।